गुरु जी के
दृष्टांत

कृतिकार
आचार्य वसुनंदी मुनि

प्रकाशक
नाथं पब्लिकेशन्स
2643 रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली-6

© प्रकाशकाधीन

पुस्तक : गुरु जी के दृष्टांत

आशीर्वाद : आचार्य श्री विद्यानंद जी मुनिराज

कृतिकार : आचार्य वसुनंदी मुनि

प्रकाशक : नाथं पब्लिकेशन्स
2643 रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली-6

मुद्रक : पावन प्रिंटर्स, मेरठ।

लेजर टाइप सैटिंग : दुर्गा कम्प्यूटर्स, मेरठ।

प्राप्ति स्थान : नाथं पब्लिकेशन
2643 रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली-6

• दिल्ली के सभी मुख्य रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध

...सम्पादकीय...

सुभाषित शब्दोच्चारक प.पू. आचार्य भगवन् श्री वसुनन्दी जी गुरुदेव के कहे शब्दों में अपनी बात को प्रारम्भ करता हूं–

"जम्म जम्म विसयं फुढि करणेदुं।
तं तं संबंधिणों दिट्ठतो भणिज्ज॥"

अर्थात् जिस-जिस विषय का स्पष्टीकरण करना हो तब उस उस विषय संबंधि दृष्टांत को अवश्य कहना चाहिए।

अज्ञात वस्तुओं या व्यापारों आदि का धर्म आदि बतलाते हुए समझाने के लिए समान धर्मवाली किसी ऐसी वस्तु या व्यापार का कथन जो सबको विदित हो दृष्टांत कहलाता है। दृष्टांत को परिभाषित करते हुए लिखा है कि एक अर्थालंकार जिसमें एक ओर तो उपमेय और उसके साधारण धर्म का वर्णन और दूसरी ओर बिंब प्रतिबिंब भाव से उपमान और उसके साधारण धर्म का वर्णन होता है। किसी चीज़ या बात का अंतिम, निश्चित और प्रामाणिक रूप देखना, कोई नई बात कहने अथवा मत प्रकट करने के समय उसकी प्रमाणिकता या सत्यता के पोषण या समर्थन के लिए उसी से मिलती-जुलती कही जाने वाली कोई ऐसी पुरानी और प्रामाणिक घटना या बात जिसे प्रायः लोग जानते हों।

न्याय के 16 पदार्थों में से दृष्टांत भी एक है। न्यायानुसार जिस पदार्थ के संबंध में लौकिक जनों और परीक्षकों का एक मत हो उसे दृष्टांत कहते हैं। ऐसी प्रत्यक्ष बात जिसे सब स्वीकार करें वह दृष्टांत है। न्याय के अवयवों में उदाहरण के लिए इसकी कल्पना होती है अर्थात् जिस दृष्टांत का व्यवहार तर्क में होता है उसे उदाहरण कहते हैं।

"दिंदुतो अंतस्स दस्सायगो।"

अर्थात् दृष्टांत धर्म का दर्शायक होता है। 'दृष्टांत' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है। 'दृष्ट' अर्थात् देखना और 'अंत' अर्थात् धर्म। जो धर्म की राह दिखाने में समर्थ हो, जो धर्म की गहराई दिखाने में समर्थ हो, जो 'अंत' अर्थात् आत्मा को प्राप्त करने की विधि दर्शाने में समर्थ हो, उसे दृष्टांत कहते हैं। धार्मिक शिक्षाएं मिलना अति दुर्लभ हैं और उन्हें सुनने व पढ़ने वाले भी अति दुर्लभता से प्राप्त होते हैं। दृष्टांत अपने वक्तव्यों को बल तो देते ही हैं अपितु श्रवण करने वाले प्राणी को भी समझने में सरल व सुगम प्रतीत होता है। दृष्टांत स्मरण करना भी सहज हो जाता है। बड़े-बड़े प्रवचनों में भी दृष्टांत छोटों से लेकर बड़ों तक, अबाल-वृद्ध सभी वर्ग के लिए उपयोगी होते हुए सहगामी बन जाते हैं।

चारों अनुयोगों में दृष्टांत की उपयोगिता–

आगम के प्रथमानुयोग, करणानुयोग, चरणानुयोग व द्रव्यानुयोग ये चार भाग हैं। **प्रथमानुयोग** तो दृष्टांतों व उदाहरणों का पिटारा है जिसके आधार से श्रमण व श्रावक धार्मिक चर्चाओं व कथाओं को विस्तार देते हैं, अपनी बात की पुष्टि व सिद्धांत की पुष्टि करते हैं।

करणानुयोग में भी दृष्टांतों व उदाहरणों का भरपूर प्रयोग मिलता है। जैसे–अष्ट कर्मों का स्पष्टीकरण करने हेतु–1. परदा–ज्ञानावरण कर्म, 2. दरवाजा का बंद–दर्शनावरण कर्म, 3. शराब–मोहनीय कर्म, 4. भण्डारी–अंतराय कर्म, 5. खूटे/खोड़ा से बंधा मानव–आयु कर्म, 6. चित्रकार के समान–नाम कर्म, 7. कुम्भकार के समान–गोत्र कर्म, 8. शहद लिपटी तलवार के समान–वेदनीय कर्म जानना चाहिए।

चरणानुयोग में सम्यग्दर्शन के अंगों को समझाने के लिए गो-बछड़ावत्-वात्सल्य अंग, तलवार पर चढ़े पानी की तरह से निशंकित अंग, मधुबिन्दु के समान संसार सुख आदि उदाहरणों से विषयों को स्पष्ट किया है।

द्रव्यानुयोग जैसे आध्यात्मिक उदाहरणों से संदर्भ को भी आचार्य भगवन् कुन्दकुन्द स्वामी जी ने समयसार ग्रंथ में लिखा है—

पक्के फलम्मि पडिदे, जह ण फलं बज्झदे पुणो विंटे।
जीवस्स कम्मभावे, पडिदे ण पुणोदयमुवेदि ॥ 5/9/168।

जैसे पके हुए फल के वृक्ष से गिरने पर वह फल पुनः डंठल में नहीं जुड़ता, उसी प्रकार जीव के पुद्गल कर्मों की निर्जरा होने पर पुनः वे उदय को प्राप्त नहीं होते/पुनः जीव के साथ नहीं बंधते। ऐसे ही खड़िया, स्वर्णकार, राजा, धोबी आदि के अनेक दृष्टांतों का आश्रय ले अपनी बात को श्रोता तक पहुंचाया।

"दृष्टांतेन स्फुरायते मतिः"

दृष्टांत के द्वारा बुद्धि प्रकट होती है। पू. गुरुदेव के मीठे प्रवचनों से उद्धृत शिक्षाप्रद दृष्टांतों को दुर्लभ मानवशृंखला के लिए इस महत्त्वपूर्ण कृति में समाविष्ट किया गया है जिससे वे इसे पढ़कर और अपने जैसी दुर्लभ मानवशृंखला की वृद्धि कर सकें, चरित्र निर्माण कर सकें व युवा बाल पीढ़ी को संस्करित कर सकें।

प.पू. अभीक्षण ज्ञानोपयोगी, अध्यात्मक सरोवर के राजहंस, कुशल वक्ता आचार्य भगवन् श्री वसुनन्दी जी मुनिराज द्वारा प्रदत्त अनेकानेक रोचक ज्ञानमयी शिक्षाप्रद दृष्टांत अल्पज्ञ व विद्वान जनों के लिए स्व पर उपकार की भावना से संग्रहीत कर **'गुरु जी के दृष्टांत'** नाम से अलंकृत किया है। यह कृति सर्वजन हिताय की भावना को संजोते हुए सर्वोपयोगी सर्वहितैषी व ज्ञान आराधना में

सहयोगी बनें ऐसी मंगल भावना है।

प्रस्तुत कृति **'गुरु जी के दृष्टांत'** की पाण्डुलिपि तैयार करने में मुनि श्री प्रशमानंद जी मुनिराज का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। प्रकाशन व मुद्रण करने वाले श्रावकों एवं अपनी चंचला लक्ष्मी का सदुपयोग कर ज्ञानाराधना के इस यज्ञ में आहूति देकर ज्ञानदान किया ऐसे श्रावक श्रेष्ठी श्री मनोज जैन 'नाथं पब्लिकेशन' के लिए प. पू. गुरुदेव आचार्य श्री वसुनंदी जी मुनिराज का महा मंगलकारी शुभाशीर्वाद आपके जीवन में सदैव अंधकार को प्रकाश बनाकर आलोकित करता रहे और प. पू. गुरुदेव की ज्ञानधारा इसी प्रकार निरंतर ज्ञानपिपासुओं को दीर्घकाल तक तृप्त करती रहे यही प्रभु परमात्मा से प्रार्थना है। कृति के संपादन करने में प्रूफरीडिंग में यदि मुझसे कोई त्रुटि रह गई हो तो विज्ञजन सुधारकर पढ़ें एवं अवगत अवश्य करायें जिससे अगले संस्करण में संशोधन किया जा सके।

पू. गुरुदेव के श्रीचरणों में त्रय भक्तिपूर्वक नमोऽस्तू!!!

सर्वेषा मंगलं भवतु
आश्विन कृ. १२
वि.सं. 2076, वी.नि. 2545

गुरु चरणरज, लघुशिष्य
बालमुनि शिवानंद
कुन्दकुन्द भारती, दिल्ली
गुरुवार, 26 सितम्बर, 2019
(ऐलक दीक्षा दिवस)

अनुक्रमणिका

क्र०सं०	विवरण	पृ० सं०
1.	भाग्य-पुरुषार्थ	11
2.	सपने का सच	14
3.	भेद विज्ञान	15
4.	तुषमाष भिन्नं	16
5.	नाम का डर	17
6.	सच्ची भक्ति	18
7.	सुरक्षा	21
8.	समर्पण	22
9.	नमकीन शक्कर	23
10.	इंजीनियर का हिसाब	24
11.	धर्म की परिभाषा	25
12.	पुरुषार्थी	26
13.	कर्त्तव्य निष्ठा	27
14.	वर्तमान का पुरुषार्थ	29
15.	चेहरे पर शांति-कांति	31
16.	किसान का दान	32
17.	गृहस्थ या महात्मा?	34
18.	उपकार एक भाई का	37
19.	भावना का प्रभाव	38
20.	चिड़िया उड़ी	39
21.	बच्चे के लिए दूध	40
22.	बचाने वाला भगवान	41
23.	मकान बिक गया	43
24.	सराय में आराम	44
25.	नमक का स्वाद	46
26.	कुल्हाड़ी की धार	47

27.	प्रभु की शिकायत	48
28.	पहाड़ को धक्का	49
29.	सौ का सौ ही रहा	50
30.	समाधिमरण	51
31.	ग्वाला भी तर गया	52
32.	माँ की सेवा	53
33.	डूबते को डुबाया	54
34.	ज्ञान का अजीर्ण	55
35.	माहौल	56
36.	भारतीय सैनिक	57
37.	नोट के बदले पैसे	59
38.	वरदान नहीं अभिशाप	60
39.	बईमानी की कमाई	61
40.	टाईम पास	62
41.	दौड़	63
42.	संकल्प शक्ति	64
43.	व्यक्तित्व की पहचान	65
44.	खोज पूरी हुई	66
45.	टूटी घड़ी	67
46.	चातक पक्षी	68
47.	साधु की मर्यादा	69
48.	संतोष का धन	71
49.	काबिलियत की कसौटी	72
50.	मैले कपड़े	73
51.	सफलता का रहस्य	74
52.	बाज और मैना	75
53.	संघर्ष	76
54.	सबसे कीमती चीज	77
55.	एक रुपया	78

56.	बुद्धिमानों से भी बुद्धिमान	79
57.	सोच बदल देगी जिंदगी	80
58.	बदलाव	81
59.	तीन साधु	82
60.	आम का पेड़ हमारे माता-पिता हैं	83
61.	अपना अपना नजरिया	85
62.	समय पर मिलेगा	86
63.	हाथी क्यों हारा	88
64.	दर्जी की सीख	89
65.	राजा की तीन सीखें	90
66.	तीन मूर्तियाँ	91
67.	चिड़िया की परेशानी	92
68.	गुब्बारे वाला	93
69.	बिना दान दिये तुम भिखारी	94
70.	जैसे चाहो वैसा करो	95
71.	सोच अपनी-अपनी	96
72.	नीयत अगर साफ है तेरी	97
73.	अनोखा खेल	98
74.	हंस और कौआ	99
75.	पुलिस चौकी	100
76.	गधा और बाघ	101
77.	राजा और मूर्ख बंदर	102
78.	शेर और ऊंट	103
79.	बातूनी कछुआ	104
80.	पैसे का ज्ञान	105
81.	साधना	106
82.	गुरु की शरण	107
83.	संत की दृष्टि	108
84.	मानवता है मनुष्य का आभूषण	109

पं. पू. अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी आचार्य श्री वसुनन्दीजी मुनिराज का
अन्य कहानियों का साहित्य पठनीय

1. सद्गुरु की सीख
2. **Inspirational Tales-1**
3. **Inspirational Tales-2**

बहुचर्चित प्रवचन शृंखला

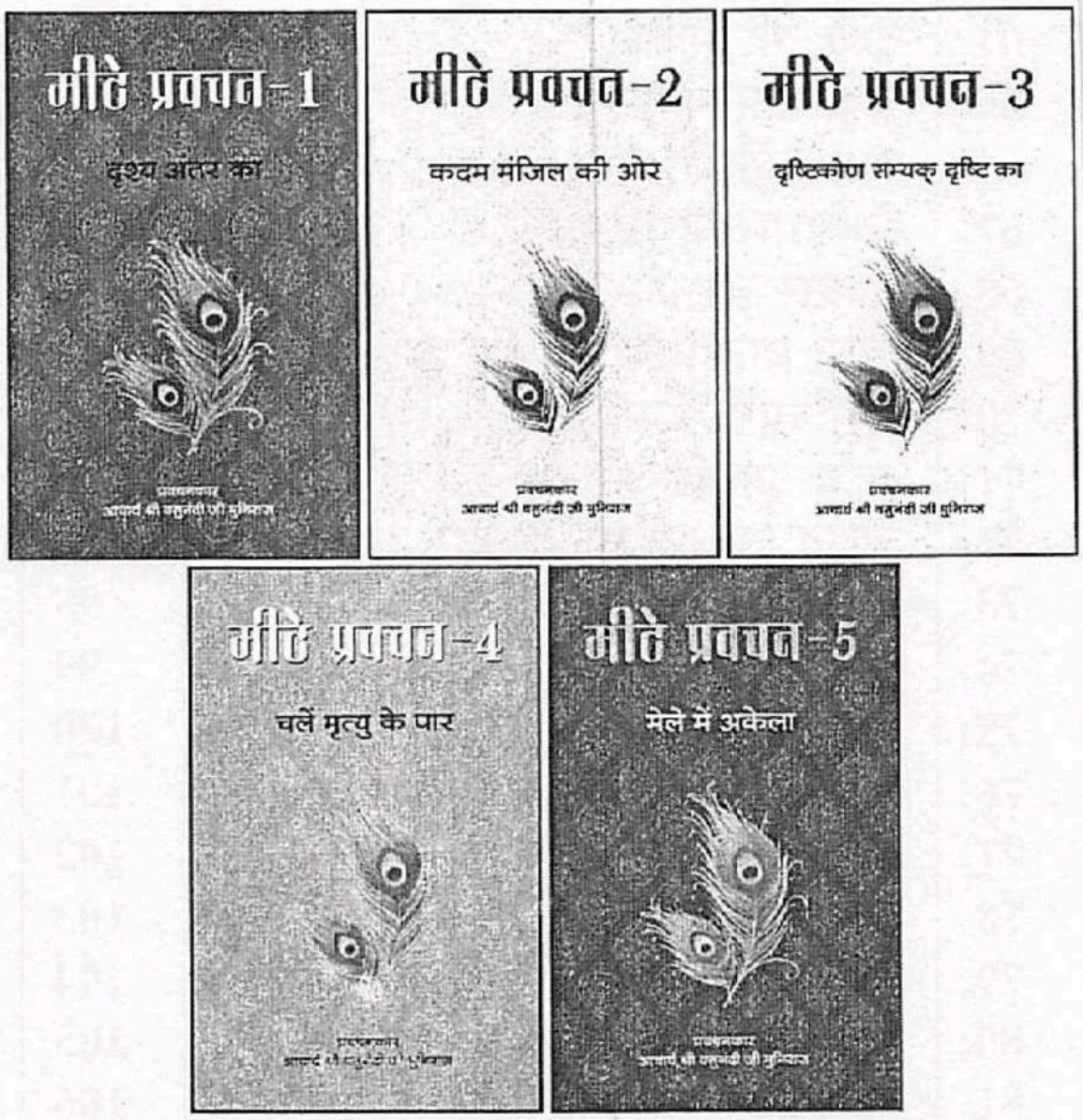

मीठे प्रवचन 1 से 5 भी मुख्य रेलवे स्टेशनों पर उपलब्ध

1. भाग्य-पुरुषार्थ

किसी नगर में एक भद्र परिणामी, सरलस्वभावी दम्पत्ति रहते थे। उनके छह बेटे व दो बेटियां थीं; सभी की शादी हो गयी। घर का पूरा खर्च चल रहा था, किन्तु अब पिताजी वृद्ध हो गए, उनसे पुरुषार्थ नहीं होता। घर में दो भाई ऐसे थे जो बहुत मेहनत करते थे और सब भाई अपने-अपने काम में लगे रहते। सबसे बड़ा भाई पंच बन गया। दूसरा बेटा जुआरी था, तीसरे नंबर का बेटा व्यापारी था, चौथा बेटा किसान था, पांचवे नंबर का बेटा अंधा था। छटवां पुजारी था।

एक बार जो बेटा खेती करता था उसकी पत्नी ने उससे कहा—तुम सुबह से शाम तक काम करते हो, तुम्हारे और भाई तो कोई काम नहीं करते, पिताजी से कह दो हम तो न्यारे होंगे। ऐसा ही व्यापारी की पत्नी ने भी कहा, उन दोनों ने कहा—भाग्यवान मैं किससे न्यारा होऊं? उनसे जिस पिता ने बचपन से पाला पोसा बड़ा किया। किन्तु पत्नी तो पत्नी, रात भर मंत्र फूंकती रही।

प्रातःकाल दोनों पहुंच गए माँ-बाप के पास। पिताजी से कहने का साहस किया पर, पत्नियों ने बीच में ही रोकते हुए कहा—घर में इन दोनों के अलावा कोई काम ही नहीं करता इसलिए हम तो न्यारे होंगे, ये सुनकर मां-बाप की आंखों से आंसू आ गए।

पिताजी बोले ठीक है तुम चाहते हो तो न्यारा कर देंगे किन्तु उससे पहले साझे में ही हम सब मिलकर एक तीर्थ यात्रा कर आएं, बाद में किसने देखा है कौन अमीर बन जाएगा, कौन गरीब रह जाएगा। यह निर्णय सभी को पसंद आया। बैलगाड़ी बुलाई, 6 भाई, पत्नी, माता-पिता ऐसे 14 लोग चले। घर के मालिक पिताजी थे, पैसा पिताजी की जेब में रहता था।

पहले दिन एक स्थान पर पड़ाव डाला। पहले बेटे को बुलाया कहा—बेटा ये 100 रु. पकड़ो, बाजार जाओ हम 14 प्राणी हैं सबके लिए भोजन लेकर आओ, बैलों के लिए चारा लेकर आओ।

वह गया और नगर में चक्कर लगा रहा था कि देखा एक जगह झगड़ा हो रहा था। बात का पता लगाया—तो पता चला कि बाई का हार महिला ने चोरी किया है, महिला बोली मैं अपने बेटे की सौगंध खाती हूँ, मैंने नहीं चुराया। वह पंच तो था ही, पूछा—तुमने हार कहां रखा था? बोली यहां रखा था, दूसरी

से पूछा-तू कब आयी बोली अभी आयी। ठीक है, जहां हार रखा था उस स्थान पर गया वहां जमीन पर कुछ निशान सा बना था, वह निशान एक बिल में जा रहा था।

उसने फावड़े से उस बिल को खोदा, उसमें हार रखा मिल गया। वह बोला मैंने तुम्हारा झगड़ा निपटाया है, तुम मुझे क्या दोगी? बोली 5000 रु. और जिसके सिर से आक्षेप मिटा था उसने 2000 रु. दिए, हार बाई को दे दिया। उसने 7000 रु. जेब में रखे और मूछों पर हाथ फेरता हुआ चल दिया, बाजार से हलवा, पूड़ी, रबड़ी आदि सब बनवा कर वापस आया। नौकरों से बैलों के लिए चारा भी मंगवा लिया। पिताजी से कहा—ये रुपये और बचे हैं आप ले लो, सब भाई देखते रहे 100 रु. में इतना सामान भी आ गया और रुपये भी लौटा दिए।

दूसरे बेटे का नम्बर आया, वह जुआरी था। पिताजी ने उसे भी 100 रु. दिए और भोजन व चारा लाने को कहा। वह वहां गया जहाँ जुआ खेला जाता है और शुरू हो गया, जेब में 100 रु. थे, लगा दिए दाव पर और एक दाव में ही 100 के 900 हो गए, खेलते-खलते 45000 हो गए वह बाजार गया बहुत से मिष्ठान पकवान लिए, बैलों के लिए भी अच्छा दाना-पानी लिया और नौकरों को बुलवाकर घर सामान भिजवाया। पिताजी से कहा—ये रहा सामान और बचे 40,000 रु. तुम रखो।

अब इसके बाद तीसरे बेटे को बुलाया, वह था व्यापारी। उसे भी 100 रु. दिए, वह भी गया बाजार। एक से गेहूं खरीदा दूसरे को बेचा, ऐसे करते-करते सुबह से शाम तक उसने 100 रु. के 300-400 रु. कर लिए, पसीने से चकनाचूर हो गया। शाम को सब्जी पराठें व बैलों के लिए भूसा खरीदकर घर पहुंचा, पिताजी से कहा पिताजी मेरे पास तो बस यही है।

अगला चौथा दिन आया, चौथे बेटे को बुलाया जो किसान था, उसे भी 100 रु. दिए। वह कहता है 100 रु. में तो एक व्यक्ति का भोजन ही आएगा, इससे क्या होगा? पिताजी बोले—बेटा मैं नहीं जानता, तू जाने तेरा काम, मैंने सबको 100 रु. दिए तुझे भी दे रहा हूं। अब वह गया 100 रु. लेकर खेत पर वहां मूली गाजार रखीं थीं, उसने वह 50 रु. में उठवाई और घर ले गया। सभी ने गाजर मूली खायी। बैलों के लिए उनके पत्ते थे वे खिलाए।

अगला 5वां दिन आया, अंधे बेटे को बुलाया 100 रु. दिए। वह बोला—पिताजी मैं तो अंधा हूं—पिताजी बोले मैं नहीं जानता। 100 रु. ले

जा और सामान ला। उसकी पत्नी और वे दोनों रोते हुए गए। रास्ते में चलते-चलते एक पत्थर से ठोकर लगी, वे गिर पड़े। पति ने कहा—इस पत्थर को हटाकर अलग रख दो वरना जो भी आएगा वो ठोकर खाकर गिर पड़ेगा। पत्नी ने पत्थर हटाया, संयोग की बात पत्थर के हटाते ही वहां गड़ा हुआ एक कलश जिसमें सोने की मोहरे थी वह मिला। पत्नी ने कलश में से मोहर निकाली और बाजार से सामान ले आयी। बांकी का भरा कलश घर पर जाकर पिताजी को दे दिया।

अब अगले दिन उस पुजारी का नंबर आया उसे भी पिताजी ने 100 रु. दिए और वही करने को कहा। वह गया सीधे 100 रु. की मंदिर की द्रव्य लेकर आया, मंदिर में जाकर खूब धूमधाम से पूजा की। संयोग की बात मंदिर को क्षेत्रपाल ने अवधिज्ञान से जाना इसके पिता और भाई आदि सभी वहां ठहरे हैं, 100 रु. लेकर आया है भोजन पानी के लिए पर यहां पूजा कर रहा है। क्षेत्रपाल ने उस बालक का रूप बनाया और उसके निवास तक भोजन, आभूषण आदि गाड़ियों की लाइन पर लाइन लगा दी।

भोजन पानी स्वयं आपके परिवार के लिए और दूसरे गांव के लिए है, वस्त्रादि हैं आप जिसे चाहें दें, भेंट करें। पिताजी ने कहा—ठीक है और वह देव अदृश्य हो गया, शाम को वह बालक पहुंचा बोला—पिताजी मुझे क्षमा कर दो, मैं तुम्हारा दुष्ट पुत्र हूं, कुपुत्र हूं मैं कुछ भी नहीं लाया। 100 रु. की द्रव्य लेकर पूजा कर चला आया हूं। पिताजी बोले—तू नहीं तेरा पुण्य लेकर आया है।

महानुभाव! सभी पुत्र आए पिताजी ने कहा—अब बताओ कौन-कौन न्यारा होना चाहता है? छहों भाइयों ने अपना भाग्य परख लिया था। इसलिए न्यारा होने का विचार भी बदल गया।

शिक्षा—अपने जीवन में भाग्य पुरुषार्थ दोनों को महत्त्व देते हुए अपने जीवन का सम्यक् संचालन करना चाहिए तभी हम सच्ची सुख शांति को प्राप्त कर सकते हैं।

❑❑❑

2. सपने का सच

एक बार महाराज जनक अपनी राज्य सभा में बैठे अपने पुरोहित से बोले कि मैंने रात्रि में एक भयानक सपना देखा है। सपने में एक ज्योतिषी मुझसे कहने लगा—महाराज आज आपके पुण्य का उदय चल रहा है किन्तु वह दिन दूर नहीं जब आप भिखारी की तरह भीख मांगते दिखाई देंगे। सपने में ही मेरा राज्य सब नष्ट हो गया और मैं भिखारी की तरह भटकता फिर रहा हूं। मुझे बहुत तेजी से भूख लगी है, मैं किसी गांव के समीप पहुंचा, पूछा यहां कहीं भोजन मिलेगा, लोगों ने कहा—यहां एक भोजनशाला है, जहां निःशुल्क भोजन कराया जाता है तुम जल्दी पहुंचो। मैं जैसे ही वहां पहुंचा तब तक भोजनशाला बंद हो गई थी। मैंने रसोईये के पैर पकड़े, गिड़गिड़ाने लगा कुछ भी हो खाने के लिए दे दो मैं भूखा-प्यासा हूं। उस रसोईये को दया आ गयी और थोड़ी-सी खिचड़ी भगोने में से खुरच कर ले आया और पत्तल के दोने पर रख दी। तीन दिन से मैं भूखा-प्यासा था, मेरे प्राण कण्ठ में आ गए थे, जैसे ही मैं खिचड़ी का दोना लेकर उठा मैं धड़ाम से नाली में गिर पड़ा और जैसे ही नाली में गिरा मेरी नींद खुल गयी।

प्रायः कर के व्यक्तियों की नींद तभी खुलती है जब हृदय पर कोई गहरी चोट लगे। राजा जनक की नींद खुली और वे आकुल व्याकुल हो गए।

राजा जनक पुरोहित के साथ बैठकर चर्चा कर रहे हैं कि मैंने ऐसा सपना देखा है, सपने में ज्योतिषी ने बताया कि तुम्हारे जीवन में कंगाली आने वाली है और मेरे जीवन में कंगाली आ गई और मैं भीख मांगने लगा। अब समझ यह नहीं आता कि सपना क्या वास्तव में भी सत्य हो जाएगा? समझ नहीं आ रहा कि ये सपना सत्य है या जो राजमहल जहां मैं दिखाई दे रहा हूं वह सत्य है। पुरोहित ने कहा—सत्य ये है कि न वह सत्य है और न यह सत्य है। वह रात्रि का सपना है और यह दिन का सपना है। एक सपना आंख बंद करके देखा जाता है और एक सपना आंख खोल के देखा जाता है, ये राजमहल खुली आंख का सपना है और वह भिखारी बनना बंद आंख का सपना है—

शिक्षा—आंख खुली तो सपना गया, आंख मुंदी तो अपना गया।
दो दिन का मेहमान यहां पर, सांस रुकी तो दफना गया ॥

□□□

3. भेद विज्ञान

एक यम नाम का राजा था, वह बड़ा प्रभावक राजा था। उसने सुना कि नगर के निकट के उद्यान में मुनिराज का संघ आया है। वह राजा यम, मुनिराज की निंदा करता हुआ वहां वाद-विवाद करने के लिए पहुंचा। वह अपने आपको बड़ा ज्ञानी मानता था इसका उसे बहुत अहंकार था किन्तु जैसे ही वहां पहुंचा, महाराज के दर्शन किए, शांत मुद्रा को देखकर कषाय शामित हो गई और जैसे ही उनका उपदेश सुना, संसार शरीर भोगों से विरक्त हो गया और वैरागी हो गया। वह यम नाम का राजा उन्हीं मुनिराज के पास दीक्षा लेकर मुनि बन गया। जो राजा अपने आपको बहुत बड़ा ज्ञानी, विद्वान समझता था, अन्तर्मुहूर्त के बाद तीव्र पाप कर्म का ऐसा उदय आया कि वह सबकुछ भूल गया, सात तत्त्वों के नाम तक याद न रख सका, णमोकार मंत्र भी याद नहीं रहा। किन्तु गुरु महाराज के साथ में रहते हुए, साधना करते हुए केवल इतना भेद विज्ञान स्मरण बना रहा कि जीव अलग है—अजीव अलग है, निज-पर का भेद जान लिया, इसके माध्यम से उन्होंने अपने आत्मा का कल्याण किया। पूरे जीवनकाल में उन्होंने केवल तीन खण्ड सूत्र याद किए; उन्हीं के माध्यम से प्रतिक्रमण, वही सामायिक, उसी से स्वाध्याय करते थे।

शिक्षा—कभी अपनी उपलब्धि पर अहंकार नहीं करना चाहिए। ये कब नष्ट हो जाती हैं, कुछ भी कहा नहीं जा सकता।

□□□

4. तुषमाष भिन्नं

एक श्रेष्ठी थे शिवभूति। जिन्होंने बड़ी श्रद्धा भक्ति के साथ मुनि महाराज का चातुर्मास अपने नगर में कराया। जैसे ही मुनिराज का चातुर्मास पूर्ण हुआ वे विहार कर जाने लगे, तो सेठ पीछे बैठकर के आंसू बहाने लगा। लोगों ने बोला—मुनिराज तुम्हारे यहां चार माह तक रहे तुमने सारा खर्चा उठाया किन्तु तुमने एक दिन भी आहार नहीं दिया, यदि तुम्हारी श्रद्धा भक्ति होती तो तुम मुनिमहाराज को आहार देते। सेठ ने कहा—मैं त्याग से घबराता रहा, यदि मुनिमहाराज को आहार देता तो मुझे त्याग करना पड़ता। तो अब आंसू क्यों बहा रहे हो? मुनिमहाराज मुझे छोड़कर जा रहे हैं तो मुझे दुःख हो रहा है। तो तुम भी साथ में चले जाओ, विचार तो मैं भी यही कर रहा हूं, कि मैं भी चला जाऊं सब कुछ छोड़-छाड़ के। क्या मुनि बनोगे? हां विचार तो ऐसा ही बन रहा है। घर के, नगर के लोग बोले—बड़ा अच्छा विचार है तुम्हारा, यदि तुम जैसे व्यक्ति मुनि बन गए तब तो कहना ही क्या है। जल्दी करो कहीं देर न हो जाए। लोग तो उपहास में कहने लगे।

किन्तु उनका पुण्य कर्म का उदय ही था, वे निकट भव्य थे। परम वैराग्य से युक्त होकर उन्होंने गुरु के पादमूल में दीक्षा ले ली और घोर तपश्चरण करने लगे। वे शास्त्र के सिर्फ "तुषमाष भिन्नं" इन छह अक्षरों को जानते थे, उन्हें आगम का एक वाक्य भी याद नहीं था। वे मात्र गुरु द्वारा कहे इस दृष्टान्त को कि जैसे तुष से माष उड़द भिन्न है, वैसे ही शरीर से आत्मा भिन्न है। यही बार-बार उच्चारण कर पक्का करते रहते थे। उच्चारण करते रहने पर भी वे कदाचित् उसे भूल गए, अब वे अर्थ तो जानते थे किन्तु शब्द नहीं, शब्दों के भूल जाने से उनके मन में बार-बार क्षोभ उठा करता था।

एक दिन उन्होंने किसी स्त्री को दाल को तुषों से पृथक करते देखा और पूछा आप क्या कर रही हैं? वह बोली मैं तुषों और उड़दों को अलग-अलग कर रही हूँ। मुनि बोले—मैंने पा लिया, हाँ! मैंने पा लिया और इतना कहकर चले गए।

पुण्य कर्म का उदय देखो, वे आत्मा में इतनी तल्लीनता को प्राप्त हुए कि मात्र भावश्रुत ज्ञान के द्वारा अन्तर्मुहूर्त में केवल ज्ञान को प्राप्त कर भव्यों को मोक्ष मार्ग दिखलाते हुए मोक्ष गए।

शिक्षा—रटन्तु विद्या से अधिक लाभकारी अर्थ समझना और उसे जीवन में अंगीकार करना लाभकारी है।

□□□

5. नाम का डर

एक बार किसी समय वन में एक महात्मा ध्यानस्थ थे। तभी उन्हें ऐसा लगा जैसे कोई काली सी परछाई उनके सामने से जा रही हो। महात्मा जी ने तुरंत कड़क कर आवाज लगाई, कौन? वह परछाई बोली महात्मा जी मैं यमराज। बोले क्या काम है? यमराज ने उत्तर दिया—"मुझे आज्ञा है पास वाले गांव से 40 व्यक्तियों को साथ में ले जाना है।" महात्मा ने कहा ठीक है, यमराज ने गांव में पहुंचकर हैजे की बीमारी फैला दी। तीन सौ चालीस व्यक्तियों की मृत्यु उस बीमारी से हुई। वह सबको अपने साथ लेकर जाने लगा। पुनः महात्मा को परछाई दिखी? कहा कौन, यमराज है क्या? वह बोला हां महाराज जी। महात्मा क्रोधित होते हुए बोले कि "तू झूठ कहता है। तूने मुझसे चालीस व्यक्तियों को साथ ले जाने की बात कही थी। तूने 340 लोगों के प्राण ले लिए।" वह बोला "नहीं महात्मा जी, मैंने चालीस लोगों के प्राणनाश हेतु हैजा फैलाया था और सच तो यह है हैजे से तो चालीस ही लोग मरे हैं; बाकी 300 तो उसका नाम सुनकर ही मर गए।"

शिक्षा—डर के निमित्त से व्यक्ति अपना घात स्वयं कर लेता है।

□□□

6. सच्ची भक्ति

बात उस समय की है जिस समय ललितपुर में ललितप्रभ नाम का राजा रहता था। वह अपनी प्रजा का वात्सल्यपूर्वक पालन करता था। एक दिन उस राजा ने सम्मेद शिखर जी की वंदना का भाव बनाया। सम्मेद शिखर का एक-एक कण पवित्र है।

यही बात राजा ललितप्रभ ने अपनी माता से कहकर अनुज्ञा प्राप्त की। मां ने कहा—बेटा मैं भी यही चाहती थी, तेरा जीवन भी तभी सफल होगा जब तू भी सम्मेद शिखर जी की यात्रा कर ले। राजा ने अपने अधिकारियों को संकेत कर दिया। नगरवासी यात्रा करने में समर्थ थे वे राजा के साथ चलने लगे। दो बालक और ललितपुर में रहते थे जो एक विधवा मां के बेटे थे और दोनों की उम्र लगभग 7 या 8 वर्ष होगी। दोनों बालकों ने अपनी मां से सम्मेद शिखर की महिमा भी सुन रखी थी कि

"एक बार वन्दे जो कोई
ताहि नरक पशुगति नहि होई।"

उन लड़कों की मां राजा के पास आयी निवेदन किया, आपकी हम गरीब जनता पर बड़ी कृपा दृष्टि है, राजा ही परमात्मा के समान होता है, इसलिए हम आपके चरणों में एक प्रार्थना करने आए हैं। मेरे बेटों की भावना है कि वे आपकी सेवा करते हुए सम्मेद शिखर जी जाना चाहते हैं। राजा ने कहा—ठीक है माँ! मैं आपके पुत्रों को यात्रा के लिए लेकर जाऊंगा।

दोनों बालक बड़ी खुशी-खुशी जिन दर्शन की भावना के साथ चलने को तैयार हुए। तभी मां ने कहा कि कभी भी राजा, ज्योतिषी और प्रभु के पास खाली हाथ नहीं जाते। यदि कहीं खाली हाथ जाते हैं तो इनके पास से खाली हाथ लौटना पड़ता है। तभी दोनों बच्चों के लिए उनकी मां ने एक पोटली में ज्वार के दाने बांध दिए। शनैः शनैः वे सम्मेद शिखर जी पहुंचे।

राजा ने वंदना प्रारम्भ की, 3-4 दिन वहां रुके, सबने वंदना की। राजा ने कहा—अब चलना चाहिए। यह समाचार उन बालकों ने सुना तो उनका मन आकुल-व्याकुल हो गया, हम सम्मेद शिखर जी तो आ गए किन्तु पहाड़ की वंदना नहीं कर सके, हमारा आना तो बेकार जाएगा, क्या करें—दिन भर तो यहां सेवा में रहते हैं वंदना कैसे की जाए। संध्याकाल में सब कार्यों से निवृत्त होकर रात्रि में दोनों भाई उत्साह से दौड़ते चले गए और गौतम स्वामी की टोंक पर पहुंच गए,

वहां से क्रम-क्रम से पूरी वंदना की। उनके पास जो ज्वार के दाने थे वही मुट्ठी भर चढ़ाते चले गए और दौड़कर वंदना करते हुए नीचे लौटकर आ गए। वंदना बहुत अच्छी हो गयी, जीवन का अकृत्रिम आनंद उन्हें प्राप्त हुआ।

प्रातःकाल हुआ, पुनः राजा की सेवा में लग गये, राजा वंदना करने के लिए निकला और देखता है सभी मंदिरों में भगवान के आगे हीरे-मोती चढ़े हैं। राजा ने सोचा क्या कोई और राजा यहां ठहरा हुआ है, जो मुझे नीचा दिखाना चाहता है राजा बिना वंदना किए लौटकर आ जाता है और पता लगाने के लिए राजा ने सैनिक खड़े कर दिए।

दिन में कोई व्यक्ति नहीं आया। रात्रि में राजा की सेवा कर दोनों भाइयों ने पुनः यात्रा की। पोटली से ज्वार चढ़ाते चले गए, सब सैनिकों ने देख लिया कि इनके अलावा कोई और नहीं आया। उन बालकों को पकड़कर राजा के पास लाया गया, महाराज! ये वे ही शातिर हैं जिन्होंने आपके खजाने की चोरी करके सम्मेद शिखर जी की टोंक पर हीरे-मोती चढ़ाये हैं। राजा ने कहा—देखने में बड़े छोटे और भोले-भाले दिखाई देते हो, जिस थाली में खाते हो उसी में छेद करते हो।

वे दोनों हाथ जोड़कर रोते हुए कहने लगे—आप हमारे माता-पिता से बढ़कर हैं, आपकी कोई वस्तु हमने बिना पूछे आज तक छुई नहीं है। राजा ने कहा—झूठ बोलते हो। दोनों बालक कहने लगे—हमें कलंकित मत करो, हमने चोरी नहीं की। ध्यान रखना हम गरीब जरूर हैं किन्तु बेईमान नहीं है, चोर नहीं हैं। हमने चोरी नहीं की।

राजा ने कहा इतनी निर्भीकता से बोल रहे हैं तो बात में कोई न कोई दम होगा, फिर भी बोला—मेरे सैनिक कहते हैं कि तुमने ही हीरे मोती चढ़ाये हैं। बोले—महाराज! हमने तो ज्वार के दाने चढ़ाये थे जो हमारी मां ने दिए थे। चलो ज्वार के दाने लेकर के चढ़ाओ यदि वे हीरे मोती नहीं बने तो समझ लेना। राजा और दोनों बालक गए और दोनों भाईयों की आंखों में आंसू भरे हुए दोनों भाई एक-एक वेदी पर मुट्ठी भर ज्वार के दाने चढ़ाते हैं। देखते ही देखते वे ज्वार के दाने जगमाने लगते हैं, हीरे-मोती बन जाते हैं। राजा यह देख नतमस्तक हो जाता है और कहता है वास्तव में सच्ची भक्ति तो तुम्हारी है, मेरी तो दिखावटी थी, और मुकुट उतारकर जमीन पर फेंक देता है, वहीं जिन दीक्षा ले लेता है।

उस राजा के कोई पुत्र नहीं था, राजा सबके सामने घोषणा कर देता है कि ये दोनों बालक मेरी पूरी सम्पत्ति के मालिक होंगे। वे देवपत और खेवपत नाम के दोनों बालक लौटकर के आते हैं और अपनी मां को सारी बात बताते

हैं। उन्होंने भी संकल्प लिया कि राजा की सम्पत्ति में से एक पाई भी अपने लिए खर्च नहीं करेंगे, पूरी सम्पत्ति धर्म में लगा देंगे।

महानुभव! उन दोनों बालकों ने, ललितपुर में एक स्थान है "देवगढ़" वहां पर मूर्तियों का केंद्र बनाया, वहां सैकड़ों हजारों शिल्पकार तैयार कर मूर्तियां बनवाईं, प्रतिष्ठा करवाईं।

शिक्षा—निस्वार्थ भावना से की गई सच्ची भक्ति कभी निष्फल नहीं होती।

❑❑❑

7. सुरक्षा

एक बार वयोवृद्ध अनुभवी पण्डित किसी संत महात्मा के पास चर्चा करने के लिए आया, सोचा महात्मा जी से कुछ बात की जाए। दोनों चर्चा हेतु एक हॉल में मिलें। चर्चा करते-करते एकाएक भूकंप के झटके लगे पण्डित जी चर्चा छोड़कर के जल्दी बाहर आ गए, कहीं छत गिर न जाए नहीं तो मैं मर जाऊंगा और संत महात्मा वहां से हिले भी नहीं, चुपचाप वहीं बैठे रहे। थोड़ी देर बाद जब भूकंप का झटका रुका तो वे पण्डित कांपते हुए लौटकर के आए और संत से पूछा कि आप बाहर क्यों नहीं गए, यदि छत गिर जाती तो? संत बोले—तुमने सोचा तुम्हारी सुरक्षा बाहर है इसलिए तुम बाहर की ओर दौड़े और मुझे लगा मेरी सुरक्षा अंदर है इसलिए मैं अंदर ही रहा। भय तुम्हें लगा, मुझे भी लगा, किन्तु मैं बाहर नहीं दौड़ा मैं अपने अंदर चला गया, तुम्हें सुरक्षा अपने बाह्य में दिखाई दे रही है मुझे अपनी सुरक्षा अंदर में दिखाई दे रही है। तुम बाहर जाकर भी कांप रहे थे, भयभीत रहे और मैं तो अपने अंदर जाकर के निर्भीक हो गया था। जब तक तुम्हारे पास बाहर बैठा था तो डर लग रहा था, जब अंदर पहुंच गया तो भय दूर हो गया, निर्भीक हो गया। संसार की कौन-सी शक्ति है जो मेरा बाल-बांका भी कर सके। महानुभाव! कोई भी जब बाहर की ओर जाता है, बाहर की सुरक्षा करता है, वह अपनी रक्षा मांगता है, कहता है रक्षा करो और जो अंदर में चला जाता है वह बाहरी सुरक्षा के लिए हाथ नहीं फैलाता।

शिक्षा—हम अपनी सुरक्षा स्वयं कर सकते हैं, जब मरण का समय आता है तब बाहर का कोई बचा नहीं सकता।

दल बल देवी देवता, मात-पिता परिवार।
मरती वीरियाँ जीव को, कोई ना राखनहार।।

□□□

8. समर्पण

एक युवा बालक कॉलेज जाते समय किसी लड़की को बार-बार देखता था। एक दिन उस लड़के ने लड़की को रास्ते में रोक लिया—और कहता है मैं तेरे रूप पर अपने प्राण न्यौछावर करता हूं, यदि तू मुझे जिंदा देखना चाहती है तो मुझे स्वीकार कर ले। मैं तुझे दिल से, मन से, आत्मा से प्यार करता हूं, तेरे बिना मैं जी नहीं सकता।

लड़की ने कहा—तुम मुझसे प्यार क्यों करते हो? वह बोला—मेरी दृष्टि में इस संसार में तुमसे सुंदर कोई नहीं है। लड़की थोड़ी समझदार रही होगी वह बोली यदि तुमने मेरी सुंदरता को देखकर प्यार किया है तो तुमने थोड़ी गलती की। बोला नहीं मैंने हजारों लड़कियां देखीं किन्तु मेरा मन और कहीं नहीं रीझा। मैं तेरे लिए पागल हो गया, तू कह दे कि मर जा तो मैं मर जाऊंगा किन्तु मैंने तो अपना सबकुछ तेरे लिए समर्पण कर दिया।

लड़की ने कहा ठीक कह रहे हो किन्तु क्या तुम समर्पण की परिभाषा जानते हो? बोला—क्यों नहीं, तेरे प्रति मेरा अंधा समर्पण है, तेरे लिए मैं सबकुछ समर्पित कर सकता हूं नहीं तो परीक्षा लेकर देख ले, तेरे लिए अपना घात भी कर सकता हूं। वह बोली ठीक है—किसी और के प्रति राग, प्यार लगाव तो नहीं है। बोला नहीं। लड़की बोली मैं तुमसे फिर कहती हूं कि तुमने गलती की है। एक बार काश तुमने मेरी छोटी बहिन को देख लिया होता तो तुम ऐसी गलती कभी न करते। देखो वह पीछे से आ रही है, जैसे ही वह लड़का पीछे मुड़ा, लड़की ने उसके गाल पर एक तमाचा मारा, बदतमीज इसे कहते हैं समर्पण? यदि तेरा समर्पण मेरे प्रति था तो तेरी निगाह पीछे क्यों गई?

शिक्षा—यदि तुम्हारा समर्पण एक बार अमूर्त के प्रति हो जाएगा तो तुम्हारा मन मूर्तमान में नहीं जाएगा; किन्तु मूर्तमान के प्रति समर्पण होता है तो ये निगाह मानती नहीं, एक को देखकर के चार को देखती हैं, चार को देखकर के हजार को देखती हैं। कोई व्यक्ति आज तक मूर्तमान को देखकर संतुष्ट नहीं हो सका।

□□□

9. नमकीन शक्कर

एक चीटी ने दूसरी चींटी से पूछा बहिन तुम इतनी दुःखी सी क्यों दिखाई देती हो, तुम्हारा शरीर कुछ दुबला सा हो गया। वह चींटी रोती हुई कहती है क्या बताऊं मेरा तो भाग्य ही फूट गया, क्या पाप कर्म का उदय आया है—नमक के ढेर पर मेरा जन्म हुआ है, नमक खाते-खाते मेरी तो हड्डियां ही गल गयीं। अरे! बहिन तूने मुझसे क्यों नहीं कहा? जहां मैं रहती हूं वहां शक्कर ही शक्कर है, गुड है, गन्ने हैं वहां चल वहां अपन मस्ती से रहेंगे।

वह चींटी उस चींटी की बात मानकर के पहुंच गयी और वहां पहुंच कर पहली चींटी ने दूसरी से कहा—अब तू भी शक्कर खा। वह खाने लगी किन्तु उसे अभी भी नमक का स्वाद आ रहा है, उसने पूछा—अब तो तुझे शक्कर का स्वाद आ गया होगा? बोली—बहिन तूने तो मुझे धोखा दे दिया, कहां है यहां शक्कर, यहां भी तो नमक है। अरे! यहां नमक कहां से आया? यहां तो शक्कर है, लगता है नमक खाते-खाते तेरी जीभ में नमक का ही स्वाद चढ़ गया है इसलिए तुझे शक्कर का स्वाद नहीं आ रहा है। तू नमक के ढेर को तो छोड़ आयी कहीं ऐसा तो नहीं है कि तू थोड़ा सा नमक मुंह में रखकर ले आयी हो?

वह रोती हुई कहती है—हां, थोड़ा-सा लायी थी कलेवा के लिए, कहीं शक्कर न मिली तो? तू मुझे भूखा ही मार देती इसलिए थोड़ी डली मुंह में रखी है। बहिन! मेरा विश्वास कर थोड़ी देर के लिए मुख से नमक की डली बाहर निकाल दे, फिर इसे चख यदि शक्कर का स्वाद नहीं लगे तो फिर इसे खा लेना। उसने ऐसा ही किया, नमक की डली बाहर निकाल कर रख दी, उसे शक्कर का स्वाद आ गया। किन्तु मुझे लगता है बहुत सारी चींटियां ऐसी भी होती हैं जो बात नहीं मान पाती, उसे छोड़ना नहीं चाहती।

शिक्षा—प्रभु परमात्मा व गुरु पर पूर्ण श्रद्धा ही कार्य को पूर्ण करने का संबल देती है।

□□□

10. इंजीनियर का हिसाब

एक इंजीनियर थे, वह यात्रा के लिए पूरे परिवार के साथ जा रहे थे। इंजीनियर पढ़े-लिखे समझदार थे। जिस क्षेत्र की यात्रा करने जा रहे थे वहां कोई वाहन नहीं चलता था और संयोग की बात ये थी कि मार्ग में नदी भी पैदल पार करनी पड़ती थी।

इस बार ग्रीष्म काल में अच्छी बारिश पड़ गयी तो नदी में पानी ज्यादा आ गया। अब इंजीनियर साहब नदी किनारे खड़े थे, सोचने लगे कि नदी पार कैसे करूं। उन्होंने सोचा कोई बात नहीं, चार फीट गहरा पानी है और अपनी लंबाई नापी, उनकी लंबाई 7.5 फीट, पत्नी की लंबाई 7 फीट, बेटे की 5 फीट, दूसरे बेटे की 3 फीट और अगले की 3.5 फीट। पूरे कुटुम्ब परिवार की लंबाई नापकर के उन्होंने औसत निकाला कि औसत सबका मिलकर के लगभग 5.5 फीट है। 5 से कम तो है ही नहीं और नदी की गहराई 4 फीट उन्होंने हिसाब लगाकर पत्नी से कहा—चिंता न कर अपन आराम से पार हो जाएंगे। दो बच्चों के हाथ खुद ने पकड़े, एक बच्चा पत्नी को पकड़ाया और चलने लगे, जैसे ही नदी के बीच में पहुंचे नदी की बहुत तेज धार से वह बच्चे बह गए; पत्नी को बड़ी मुश्किल से सम्भाल पाए, जैसे-तैसे किनारे तक पहुंच गए। अब रोने लगे, पुनः अपनी डायरी निकाली, पत्नी कहती है तुम्हारा हिसाब कैसा रहा? वह कहता है वही तो मैं सोच रहा हूं, कि हिसाब हमारा ज्यों का त्यों फिर भी कुनबा डूबा क्यों? हिसाब में तो कोई गड़बड़ नहीं है। नदी की गहराई और हमारी लंबाई भी ठीक थी फिर क्यों डूब गए?

महानुभाव! लगता है हम लोग भी इसी तरह से हिसाब लगाते हैं और हमारा हिसाब भी ऐसे ही फेल हो जाता है जैसे उस इंजीनियर का फेल हो गया था। शायद अनपढ़ होता, देहाती व्यक्ति होता तो नदी में पैर न बढ़ाता।

शिक्षा—महानुभाव समर्पण से पहले बुद्धि का प्रयोग किया जाता है कि समर्पण कहां और किसको किया जाए किन्तु समर्पण के बाद बुद्धि का प्रयोग नहीं किया जाता, न करना चाहिए।

❑❑❑

11. धर्म की परिभाषा

एक बार पूज्य गुरुदेव राष्ट्रसंत आचार्य श्री विद्यानंद जी महाराज के पास कुछ विदेशी लोग आए। वे आचार्य श्री से बड़े प्रभावित हुए और प्रणाम करके जब जाने लगे तब आचार्य श्री ने उन्हें कुछ धर्म की पुस्तकें दीं। पुस्तकें प्राप्त करते ही वे आपस में एक दूसरे को देखने लगे और मुस्कुराने लगे।

महाराज जी ने पूछा—क्या बात है आप मुस्कुरा रहे हो, कुछ कहना चाहते हो क्या? वे बोले—महाराज ये धर्म की पुस्तकें हैं, हम न धर्म को जानते हैं और न मानते हैं। महाराज ने कहा—ऐसा हो ही नहीं सकता, संसार में ऐसा कोई भी व्यक्ति नहीं है जो धर्म को नहीं मानता, ये हो सकता है आप धर्म की परिभाषा नहीं जानते हों। वे बोले—महाराज श्री हम कह रहे हैं ना कि हम न ही धर्म को जानते हैं और न ही मानते हैं। महाराज श्री ने कहा—अच्छा! एक बात बताओ।

एक व्यक्ति बाजार से लौट रहा था बड़ा ईमानदार सरल सहज था, रोड़ पर चलते हुए अचानक किसी व्यक्ति ने पीछे से उस पर प्रहार कर दिया। वह बेचारा बेहोश होकर जमीन पर गिर पड़ा। अब ये बताओ जिस व्यक्ति ने प्रहार किया था उसने अच्छा किया या बुरा? विदेशी बोले—महाराज श्री जिसने लाठी से प्रहार किया है उसे हम ही क्या पूरी दुनिया बुरा कहेगी।

वह व्यक्ति जब रोड पर बेहोश पड़ा था तभी चार लड़के वहां से जा रहे थे। कॉलेज से लौटते वक्त उन चारों ने देखा कि यह तो जीवित है उठाकर अस्पताल ले गए, उसके घर तक समाचार भेजा। महाराज श्री ने पूछ लिया—ये बताओ उन चारों लड़कों ने उस व्यक्ति के साथ अच्छा किया या बुरा किया? महाराज! उन चारों ने तो बहुत अच्छा किया जो रोड पर मूर्च्छित पड़ा था उसे अस्पताल में भर्ती किया, इसे तो दुनिया भी कहेगी कि अच्छा किया। पूज्य गुरुदेव बोले—तो बस! यही धर्म है।

शिक्षा—संसार में जितनी भी बुराईयां हैं, जितने भी बुरे काम हैं वे सभी पाप कहलाते हैं और संसार में जितनी भी अच्छाईयां हैं वे सब धर्म कहलाती हैं। धर्म की यही परिभाषा है।

□□□

12. पुरुषार्थी

एक महात्मा जी थे वे प्रतिदिन अपने लोटे को बार-बार मांजते थे, साफ करते थे, शिष्यों ने पूछा महात्मा जी! आप ऐसा क्यों करते हो? वे बोले—मैं आप लोगों को कुछ सिखाना चाहता हूं—जैसे लोटे को 4 दिन साफ न करो तो उस पर गंदगी जम जाती है ऐसे ही अपने चित्त को रोज-रोज साफ न करो तो इस पर भी गंदगी जम जाती है। ऐसे ही हमको अपने चित्त को साफ करना जरूरी है। जो व्यक्ति आलसी होते हैं, धर्म विरुद्ध होते हैं वो कहते हैं भगवान मुझे एक बार में ऐसा दे दे कि मैं जिंदगी भर चैन से बैठा रहूं किन्तु धर्मात्मा कहता है भगवान मैं तेरे पास प्रतिदिन आऊंगा तेरी भक्ति करूंगा, नित्य कुंआ खोदना है नित्य पानी पीना है, एक बार बनाकर के जिन्दगी भर खाना नहीं चाहता। जो व्यक्ति पुरुषार्थी होता है वह धर्म करने से, साधना करने से पीछे नहीं हटता। पुरुषार्थ करने वाला व्यक्ति एक दिन पुरुषोत्तम बन जाता है। वो कहता है मैं जिंदगी के अंतिम क्षण तक त्याग तपस्या संयम का पालन करता रहूंगा। आज पालन करके चैन से बैठना नहीं चाहता।

शिक्षा—पुरुषार्थ करके ही अपने भाग्य को चमकाया जा सकता है।

□□□

13. कर्त्तव्य निष्ठा

एक महात्मा जी मार्ग में चले जा रहे हैं, रास्ते में एक व्यक्ति लेटा हुआ है। महात्मा जी ने उस व्यक्ति से कहा—भैया मैं तुम्हें कुछ धर्म का उपदेश सुनाऊं तुम उसे सुनोगे? उसने कहा—नहीं-नहीं मुझे अभी धर्म का उपदेश नहीं सुनना है। क्यों नहीं सुनना? वह बोला मैं अभी परेशान हूं। क्या परेशानी है? वह बोला मुझे जोर से प्यास लगी है। आप कुछ कर सकते हो तो पानी ले आओ। वह महात्मा जी पानी की खोज कर पानी पिलाते हैं। अब उस महात्मा ने कहा—क्या अब उपदेश सुनोगे? वह बोला नहीं—अरे! अब क्या बात है। बोला मैं 3 दिन से भूखा हूं मुझे कुछ खाने के लिए दे दो, महात्मा जी जंगल से कुछ फल लाए और उसे दे दिए। फल खाने पर पुनः महात्मा ने कहा—अब मैं तुम्हें उपदेश दे दूं, उसने कहा अभी नहीं—मैं बहुत थका हूँ, मुझे पिछले कई दिनों से भूख की बाधा से नींद नहीं आ रही थी मैं अब थोड़ा सोना चाहता हूं, यदि तुम कुछ कर सकते हो तो एक काम करो मुझे सर्दी लग रही है इसका कोई उपाय करो। महात्मा जी ने उसे अपना कंबल उड़ा दिया और वह कंबल ओढ़कर सो गया।

जब सोकर उठा तो महात्मा ने कहा—अब तो उपदेश सुनोगे। वह बोला—हां अब मैं अवश्य उपदेश सुनूंगा। महात्मा जी ने कहा—अब क्या हुआ जो तुम उपदेश सुनने को तैयार हो गए। वह बोला बात यह है कि इतने सब कारण होने के बाद भी आपने मेरी आवश्यकताओं की पूर्ति अपना कर्त्तव्य समझकर की। मैं आपसे उपदेश सुनने के लिए इसलिए तैयार हो गया कि आप मात्र धर्म को सुनाने वाले नहीं हैं, धर्म को आपने स्वयं अपने जीवन में धारण किया है इसलिए मेरी आपके प्रति श्रद्धा हो गई है।

महात्मा जी ने मुसाफिर को उपदेश में बस यही कहा—वत्स! कर्त्तव्य का पालन करना ही धर्म है। तुम जहां पर भी रहो अपने कर्त्तव्यों का निष्ठा के साथ पालन करना यही धर्म का उपदेश है। ये उपदेश उस मुसाफिर ने सुना। यह मुसाफिर कोई और नहीं था, निकटवर्ती देश का वह राजा था। वह राजा उस महात्मा से बहुत प्रभावित हुआ। अब वह राजा बड़ी निष्ठा के साथ अपने राजधर्म का पालन करता, रात्रि में अपने नगर में परिभ्रमण करता, देखता प्रजा में कोई असंतोष तो नहीं है, उनकी आवश्यकताओं की पूर्ति करता।

वह एक रात्रि भेष बदलकर अपने नगर में घोड़े पर बैठकर आ रहा था, उसनें देखा एक व्यक्ति रास्ते में पड़ा कराह रहा है जैसे ही उसकी दशा देखी उसे अपनी दशा ख्याल आ गयी कि एक बार मैं भी तो ऐसे ही पड़ा था, उस समय महात्मा मेरे पास आए थे। वह अपने घोड़े से उतरता है, जाता है व्यक्ति के पास देखा तो वह बुखार से तप रहा था। उसकी दशा इतनी अस्वस्थ थी कि वह उठ भी नहीं पा रहा था। राजा ने उसे अपने घोड़े पर बिठाया और अपने नगर की ओर ले गया। रात्रि के समय में राजा वेष बदलकर आया था उसे कोई पहचान नहीं पा रहा था, अधिकांश लोग अपनी गहरी नींद में सोए हुए थे। पहरेदार अपने कर्त्तव्य में लीन थे, जो सभी को सजग करते जा रहे थे 'जागते रहो' और राजा उस व्यक्ति को उसके घर तक ले जाता है। जैसे ही दरवाजा खटखटाया उसमें से एक महिला निकली उस महिला ने वेष बदले राजा को देखा और पहचान लिया और उसके चरणों में गिरकर बोली—महाराज क्षमा करना मैं यहां की जमादार हूं और आप मेरे बेटे को अपने घोड़े पर बिठाकर यहां तक लाए हैं, हम तो आपके इस उपकृत ऋण से सात जन्म में भी उन्मुक्त नहीं हो पाएंगे। आप वास्तव में धन्य हैं, आप राजा नहीं राजा के रूप में देवता पुरुष हैं, भगवान हैं जो आपके हृदय में इतनी दया और करुणा का भाव है।

शिक्षा—महानुभाव! सत्यता यही है व्यक्ति जब कर्त्तव्य का पालन करने के लिए तैयार होता है तब उसे छोटा-बड़ा, ऊंच-नीच दिखाई नहीं देता।

इसलिए निस्वार्थ भाव से अपने कर्त्तव्यों का पालन करना चाहिए।

□□□

14. वर्तमान का पुरुषार्थ

तीन मित्र तीर्थयात्रा करने के लिए गए। मार्ग जंगल में से होकर के जाता था, रात्रि जंगल में व्यतीत करनी पड़ी। तीनों ने कहा यहां हिंसक जंगली जानवरों का भय है थोड़ा-सा जागरुक व जाग्रत रहें। तीनों थके हुए थे उन्हें भूख लगी थी तीनों के पास चूरमा के 4 लड्डू और साथ में खीर भी थी। तीनों ने खाने से पूर्व थोड़ा विश्राम करने की सोची। तीनों के बीच बड़ी मुश्किल ये थी कि लड्डू तो चार थे और साथी तीन थे। 1-1 लड्डू तो तीनों के हिस्से में आ गया, चौथा लड्डू जो बचा उसे कौन खाएगा? अब इसके बारे में क्या करें। बहुत सोच-समझकर एक निर्णय लिया कि जिसको अच्छा स्वप्न आए वही उस चौथे लड्डू को खाए और इस निर्णय के साथ तीनों सो गए।

बीच वाला उठा उसने देखा ये दोनों सो गए, मुझे तो कस कर भूख लगी है, मैं क्या करूं? इधर-उधर देखता है सोचता है एक लड्डू वो मेरे हिस्से का है ही, उठाता है और खा लेता है। उसने सोचा मुझसे अच्छा सपना और किसका हो सकता है तभी बाकि लड्डू उठाये और खा लिये, लड्डू खाकर बोला—अकेले इससे मेरा काम नहीं चलेगा खीर भी सुबह तक खराब हो जाएगी। खीर की भगोनी उठायी और गटागट थोड़ी खीर पी ली और गहरी नींद में लीन हो गया।

सुबह तीनों जगे, सामने भगोना भी ढ़का रखा था, लड्डू का डिब्बा भी बंद था। फिर आपस में पूछा बताओ क्या स्वप्न आया? बीच वाला बोला मैंने तो बहुत खराब स्वप्न देखा। पहले तुम दोनों अपने-अपने स्वप्न बताओ। पहला वाला बोला—आज मैंने देखा कि मैं जब सो रहा था एक देवदूत मेरे पास आया वो मेरे चरणों में साक्षात् प्रणाम करके कहता है हे भद्र! इंद्रपद को त्याग करके आप यहां पर आ गए आपकी इंद्राणी हैं, देवांगनाएं हैं तो मैं आपको यहां पाकर धन्य हो गया, अब जाकर स्वर्ग में समाचार देता हूं। और वह देव मेरी स्तुति किए जा रहा है और मुझे बहुत आनंद आ रहा है, पहले मित्र ने अपना पूरा सपना कह सुनाया।

अब तीसरा साथी अपना सपना सुनाने लगा—वह बोला जैसे ही मैं सोया मुझे जंगल का दृश्य दिखायी दिया, एक ज्योतिषी मेरे पास आया उन्होंने मेरे हाथों की लकीरें देखीं, मेरे पैरों के चिन्ह देखे और कहने लगे—अरे! तुम यहां

कैसे? मैंने पूछा क्यों क्या हुआ? मेरी ज्योतिष विद्या कहती है तुम्हें तो चक्रवर्ती होना चाहिए। तुम्हें तो बस एक रात्रि के बाद चक्रवर्ती का पद मिलने वाला है, 96000 रानियां व छः खण्डों के स्वामी बन जाओगे। इस प्रकार तीसरे व्यक्ति ने अपना यह स्वप्न सुनाया।

बीच वाला साथी बोला—मैं क्या बताऊं न तो मैं इंद्र पद को छोड़कर आया, न आगे चक्रवर्ती पद को पाऊंगा। मैं तो तुम दोनों के बीच में सो रहा था तभी क्या हुआ इस जंगल का एक देवता आकर मेरे पैर के पास खड़ा हो गया और मेरे पैर पर गदा मारी। कहा उठ! मैं तो उसके आगे हाथ जोड़कर खड़ा हो गया और थरथर कांपने लगा। मैंने पूछा क्या बात है—वह बोला पास ये लड्डू रखा है, खीर रखी है फिर भी तू भूखा सो रहा है, इन्हें जल्दी उठा और खा। मैंने उससे कहा मेरे दोनों साथी अभी सो रहे हैं, सुबह जगकर मिलकर खाएंगे किन्तु उसने मुझसे कहा—पहले लड्डू खा और अपनी गदा मारने का डर दिखाया तो मैंने चारों लड्डू खा लिये।

मित्रों ने पूछा—फिर क्या हुआ? मित्रों क्या बताऊं उसने मेरी गर्दन को कसकर पकड़ा और भिगोनी की तरफ इशारा करते हुए बोला—इसे क्या तेरे काका खाएंगे, चल उठ और खा जल्दी से। मित्रों उसने जबरदस्ती मुझसे खीर उठवाई और पिला दी। अरे उसने मुझे बहुत मारा पीटा मेरी हड्डी-पसली अभी भी दर्द कर रही हैं। यह सुनकर साथियों ने डिब्बा खोला, भगोना खोला तो देखा न किसी में लड्डू है न किसी में खीर।

शिक्षा—महानुभाव! एक मित्र ने अतीत का सपना देखा था, एक ने अनागत का सपना देखा था, एक ने वर्तमान के खीर और लड्डू खाए थे। जो वर्तमान में उठकर के पुरुषार्थ करता है वही मोदक व क्षीरान्न को प्राप्त करने का अधिकारी होता है। वर्तमान में जीने वाला व्यक्ति ही वर्धमान बनने का सच्चा अधिकारी है।

□□□

15. चेहरे पर शांति-कांति

एक बार वैशाली के राजकुमार वर्धमान के पास मगध सम्राट राजा श्रेणिक का पुत्र राजगृही से चलकर आता है और वर्धमान से मिलता है। अजातशत्रु कुणिक के माथे पर सलवटें पड़ी हुई थीं किन्तु वर्धमान के चेहरे पर बहुत कांति व शांति थी। अजातशत्रु ने वर्धमान से पूछा (दोनों आपस में मौसी के बेटे थे) वर्धमान एक बात बताओ मैं इतना चिंतित, इतना व्यथित, इतना परेशान हूँ किन्तु आपके चेहरे पर तो चिंता की एक भी लकीर नहीं, आप बड़े निश्चिंत, प्रसन्नचित्त दिखाई दे रहे हैं। आपके चेहरे पर इतनी कांति, शांति है कि मैंने तो कभी कल्पना भी नहीं की, कि किसी मनुष्य के चेहरे पर ऐसी कांति-शांति भी हो सकती है। आपका चेहरा देखकर तो मुझे भी शांति का अनुभव हो रहा है। इसका क्या कारण है? उन्होंने कहा—मैं अतीत की यादों को याद नहीं करता और भांवेष्य के स्वप्न भी नहीं देखता हूं। मैं केवल वर्तमान में जीना जानता हूं। इसलिए मैं शांत चित्त रहता हूं और मेरे चेहरे पर कांति अटकेलियां खेलती रहती है।

शिक्षा—जीवन में अच्छा बुरा सबके साथ घटित होता है लेकिन उन्हें अपने साथ जीवन भर लेकर नहीं चलना चाहिए।

❑❑❑

16. किसान का दान

एक छोटे से गांव में तीन कृषक रहते थे। उन तीनों के खेत पास-पास थे, तीनों संतोषी थे, भद्रपरिणामी थे व आपस में प्रेमभाव से रहते थे। उन तीनों की परीक्षा लेने के लिए दरिद्र के भेष में एक देव नारायण का भेष बनाकर आया। वह पहले कृषक के पास गया, बोला—कृषक महोदय! मुझे बहुत जोर से भूख लगी है मैं तुम्हें वरदान देने आया हूं, तुम मुझे भोजन दे दो। वह बोला—तुम स्वयं दरिद्र हो मुझे क्या वरदान दोगे, मेरे पास वरदानों की क्या कमी है। अभी कुछ समय पहले मैंने बहुत बड़ा भोज किया था, हजारों व्यक्तियों को भोजन कराया था, इससे पहले इतना बड़ा स्नेह भोज मेरें पिता जी ने किया था।

वृद्ध नारायण ने कहा—भाई तुमने क्या किया क्या नहीं मुझे इससे क्या? यदि तुमने अभी मेरी भूख को शांत कर दिया तो मैं तुम्हें वचन देता हूं मैं निश्चित रूप से तुम्हें वरदान दूंगा। जो तुमने किया है उसे भूल जाओ उसके बारे में कुछ नहीं किया जा सकता है 'नेकी कर दरिया में डाल' अभी तुम्हारे पास क्या है? कुछ नहीं।

वह वृद्ध दरिद्र अगले किसान के पास गया—वह कृषक कहता है, हे वृद्ध नारायण! आप हमारे पास आए थोड़ी देर ठहर जाओ, मेरे खेत में बहुत अच्छी फसल आ रही है। मुझे विश्वास है फसल इतनी अच्छी आएगी कि हजारों बोरों अनाज हो सकता है। मैं उनसे बहुत व्यंजन बनवाऊंगा और आपको बहुत अच्छा भोजन करवाऊंगा, बस थोड़ा-सा ठहर जाओ। वृद्ध नारायण कहता है—भाई मेरे प्राण तो कंठ में आ रहे हैं मैं ठहर नहीं सकता। मुझे कोई भोजन दे दे तो मैं भोजन करना चाहता हूं।

वह तीसरे कृषक के पास गया—उसकी फसल पहले बहुत अच्छी आयी थी किन्तु अभी उसके पासकुछ नहीं, पर उसने कहा हे देवता! तुम मेरे यहां पधारे हो 'अतिथि देवो भवः' और उनके पैर पकड़कर कहा—मैं आपको बहुत बड़ा भोजन तो नहीं दे सकता। यदि आप वास्तव में क्षुधातुर हैं मेरे पास चार टिक्कड़ व नमक मिर्च की चटनी है, मैं इससे ही अपनी क्षुधा शांत करता हूं। सूखे टिक्कड़ दे दिए, नारायण ने उसमें से दो टिक्कड़ खाए और दो वापस किए कि मेरी तृप्ति हो गयी और तथास्तु कहकर जाने लगा। देखते क्या हैं

कि उसके खदान में स्वर्ण की अशर्फियां का कलश निकला। दोनों किसान देखते रहे कि इसके पास इतना धन कैसे आ गया।

शिक्षा—उस कृषक ने वर्तमान का सदुपयोग किया था इसलिए उसे इतना वैभव मिला। जो अतीत के गुणगान कर रहा था वह वैभव से वंचित रह गया और जो भविष्य की कल्पना करके उसे सपने दिखा रहा था वह भी वंचित रह गया। इसी प्रकार जो व्यक्ति वर्तमान में जीता है वह निःसंदेह दूध की तरह है जो भविष्य में जीता है उसके पास छाछ भी नहीं रहता और जो अतीत की यादें करता है उसके पास दूध का नाम तो रह जाता है पर दूध नहीं। इसलिए वर्तमान में जीने वाला व्यक्ति वर्धमान बनता है।

□□□

17. गृहस्थ या महात्मा?

एक बार कोई एक युवा, संत महात्मा के पास पहुंचा, कहने लगा—जब अपनी बुद्धि काम न करे तब गुरु की बुद्धि से चलना चाहिए। मेरी जिज्ञासा बस इतनी सी है कि मैं युवा हो चुका हूं। घर के सभी सदस्य कहते हैं घर में बहू कब लाएगा? किन्तु मेरा मन कहता है कि मैं साधु बन जाऊं और मैं यह भी चाहता हूं कि मेरे बाद मेरे माता-पिता दुःखी न हों। मैं अपने माता-पिता की सेवा करूं या सन्यासी बनूं? मैं क्या करुं इसका समाधान नहीं कर पा रहा हूं।

वह महात्मा गृहस्थ ही थे, उनकी चर्या संतोषी महात्मा जैसी थी। जल में रहकर कमल के जैसे संसार से विरक्त थे।

जब वह युवा आया था उस समय मध्यान्ह काल के 12 बज रहे थे, सूर्य मध्य में था अपना प्रखर प्रताप भूमण्डल पर फैला रहा था, उस समय उस महात्मा ने अपनी पत्नी को आवाज लगाई। भाग्यवान्! जरा दीपक तो ले आ। उसकी पत्नी अंदर से आती है दीपक जलाकर के सामने रख देती है। पत्नी ने कुछ भी नहीं पूछा। युवा के मन में शंका पैदा हुई सूर्य का इतना प्रकाश हो रहा है और इन्होंने दीपक जला रखा है। जिस महात्मा के पास में सुझाव लेने के लिए आया हूँ वे कैसी अटपटी सी चेष्टा कर रहे हैं।

थोड़ी देर बाद वह स्त्री पुनः आती है और दो गिलासों में दूध रख जाती है। एक गिलास उस युवा ने ले लिया और दूसरा महात्मा ने उठा लिया। दूध पीना प्रारम्भ किया। दूध का एक घूंट ही उस युवा ने मुंह में दिया कि तुरंत ही गिलास नीचे रख दिया क्योंकि उस दूध में बहुत सारा नमक पड़ा हुआ था। थू-थू करने लगा महात्मा ने दूध का गिलास उठाया और पूरा पीकर ही गिलास को नीचे रखा। महात्मा ने पूछा कुछ समझ में आया? उसने ना में सिर हिलाया।

महात्मा ने कहा चलो कोई बात नहीं है। मेरे साथ चलो। वह युवा साथ में गया, धूप बहुत तेज थी एक पहाड़ की चोटी पर चढ़ गए। दोनों पसीना पसीना हो गए, मंदिर के समीप पहुंचे वहां एक महात्मा जी ध्यान लगाएं बैठे थे, उनके पास पहुंचकर कुछ धर्म की चर्चा की, धर्म का उपदेश सुना और दोनों आने लगे तभी गृहस्थ ने पूछा—महात्मा जी आप बुरा ना मानें तो एक बात पूंछू—मैं ये जानना चाहता था कि आपकी उम्र कितनी है? महात्मा जी

ने कहा मेरी उम्र लगभग 80 वर्ष मान लो शरीर की अपेक्षा से किन्तु संन्यास को लिए हुए अभी 40 वर्ष हुए हैं। फिर थोड़ी देर बाद कहा महात्मा जी मैं भूल गया क्या आप फिर से बताएंगे कि आपकी उम्र कितनी है—हां मेरी उम्र शरीर की अपेक्षा 80 वर्ष है व संन्यास की अपेक्षा 40 वर्ष हो गई।

वे दोनों वहां से आने लगे और थोड़ी दूरी पर से महात्मा जी को आवाज लगायी। महात्मा जी ने आवाज सुनी और ऊपर से नीचे आए और कहा बताओ क्यों आवाज लगायी—वह बोला महात्मा जी हमें ऊपर चढ़कर आना मुश्किल था इसलिए आपको आवाज लगाई। क्षमा करना मैं आपकी उम्र भूल गया था। महात्मा जी ने कहा शरीर की अपेक्षा 80 वर्ष, संन्यास को लिए 40 वर्ष हो गए। इस प्रकार अनेक बार प्रश्न पूछने पर भी महात्मा जी ने शांत स्वर में ही उत्तर दिया। वह गृहस्थ संत व युवा दोनों नीचे उतर कर आए।

संत ने युवा से पूछा कुछ समझ में आया। वह युवा बोला मेरी समझ में तो कुछ भी नहीं आया, मेरी समस्या तो ज्यों की त्यों खड़ी है, महात्मा ने कहा—देखो! यदि तुम्हें गृहस्थ बनना है तो ऐसा जीवन साथी लाना जिसके जीवन में तर्क-वितर्क नहीं हो। जहां तर्क होता है वहां नर्क होता है। मैंने भरी दोपहरी में अपनी पत्नी से दीपक मंगवाया, उसने ये नहीं पूछा कि दीपक क्यों मंगा रहे हो बस अपने कर्त्तव्य का पालन करते हुए उसने मेरी एक आवाज पर दीपक लाकर दे दिया। और फिर स्वतः ही उसे लगा कि घर में अतिथि आया है तो वह दो गिलास दूध रख गयी, तुमने भी पिया मैंने भी पिया, किन्तु तुम एक घूंट पीकर ही रह गए। वह बोला पीता कैसे उस दूध में तो बहुत सारा नमक पड़ा था। महात्मा बोले—जब वह मुझे सहन कर सकती है तो मैं भी उसे सहन करता हूं। यदि ऐसी सहन करने की तेरी क्षमता हो तो बेटा तुम गृहस्थ जीवन में प्रवेश कर सकते हो। जब उसे गुस्सा आए जब वह अग्नि बने तब तुम पानी बन जाना, जब तू अग्नि बनें तो वह पानी बन जाए तो वह घर कभी नरक नहीं बन पाएगा।

और दूसरी बात—यदि तेरा भाव महात्मा बनने का है तो फिर उस महात्मा की तरह जिन से हम मिले थे। उन्होंने अपनी समाधि तोड़कर हमें चर्या का उपदेश दिया। फिर मैंने एक ही प्रश्न को अनेक बार पूछा जो ये बात मुझे और तुम्हें पहली बार में ही समझ आ गयी थी फिर भी मैंने थोड़ी-थोड़ी देर बाद वही प्रश्न बार-बार किया। महात्मा जी के चेहरे पर एक बार भी क्रोध की रेखा दिखायी नहीं दी।

शिक्षा—जो जितनी ज्यादा परीक्षा देता है उसके उतने ज्यादा प्रमोशन होते चले जाते हैं तो तपस्या करना तो पढ़ाई करना है, प्रतिकूलताओं में समता धारण करना ही परीक्षा देना है।

□□□

18. उपकार एक भाई का

एक व्यक्ति प्रातःकाल अपनी गाड़ी को साफ कर रहा था, नयी गाड़ी थी। पड़ोसी ने देखा—सोचा ये तो रोज साइकिल से आने-जाने वाला व्यक्ति है आज इसके पास लगभग 5 लाख की गाड़ी कहां से आ गयी। उसने उससे पूछा—भैया गाड़ी कितने की ले आए, वह कहता है—ये गाड़ी मैंने खरीदी नहीं है, यह गाड़ी मुझे मेरे छोटे भाई ने दी है। मेरे पास रहता नहीं है, वह शहर में रहता है। 10 वर्ष पूर्व मैंने उसे पढ़ाई हेतु शहर भेजा था।

हम दोनों के माता-पिता पहले ही गुजर गए थे। बचपन से मैंने अपने भाई को बड़ा किया और बैंक में चपरासी की नौकरी करके अपने परिवार का पालन करता रहा और अपने छोटे भाई को पैसे बचा बचाकर अच्छी-से-अच्छी शिक्षा देने का प्रयास किया और मेरा भाई आज कलेक्टर बन गया। आज सरकार की ओर से उसे बंगला व गाड़ी आदि सुविधाएं दी गयीं। किन्तु उसने गाड़ी में बैठने से मना कर दिया, क्योंकि उसके मन में मेरे प्रति कृतज्ञता का भाव था। उसने मुझे बुलाया उस बंगले में रहने के लिए किन्तु मैं जा नहीं सकता तो उसने भी सौगंध खा ली कि आप नहीं आओगे तो मैं भी उस बंगले में नहीं जाऊंगा। ये गाड़ी तो मुझे सरकार की ओर से मिली है इसे तो मैं नहीं भेज सकता, किन्तु सौगंध खाता हूं जब तक आपके लिए गाड़ी नहीं ले लूंगा तब तक मैं गाड़ी में नहीं बैठूंगा। उसने कड़ी मेहनत करते हुए गाड़ी खरीदकर मेरे पास भिजवा दी। उसने मुझसे कहा है—भैया पहले गाड़ी में तुम बैठोगे उसके बाद सरकार से मिली गाड़ी में मैं बैठूंगा। भैया, इस प्रकार मेरे छोटे भाई से यह गाड़ी मुझे प्राप्त हुई है।

यह सब सुनकर वह पड़ोसी कहता है—हे भगवान! काश मेरे पास भी ऐसी गाड़ी होती। वह कहता है—भाई! तुम ऐसी बात क्यों कहते हो, अरे तुम्हें जब भगवान से मांगना ही है, भावना ही भाना है तो कहो—हे भगवान! काश मेरे पास भी ऐसा भाई होता। तभी एक संत महात्मा उस गली से निकल रहे थे उन्होंने उन दोनों की बातें सुनकर बोले—अरे भाई तुम भी अधूरा ही मांग रहे हो। जब मांगना ही है, भावना ही भानी है तब तुम ये कहो कि हे भगवान्! मैं ऐसा भाई बन जाऊं कि मैं अपने भाईयों को गाड़ी बांट सकूं।

शिक्षा—हमेशा अच्छी और बड़ी भावना भानी चाहिए। सर्व हित व कल्याण के लिए भागवान से प्रार्थना करनी चाहिए। उदारवादी बनो उधारवादी नहीं।

❑❑❑

19. भावना का प्रभाव

अमेरिका में एक शोध प्रमुख संस्थान था। उन्होंने भावनाओं के विषय में शोध किया कि कैसे भावनाओं का प्रभाव पड़ता है और शोध इस प्रकार किया कि एक कक्षा के 20 विद्यार्थियों को अलग-अलग बैठा दिया। सबको 1-1 कागज और पैन दे दिया, बीसों विद्यार्थियों से कह दिया तुम्हें इस कागज पर अपनी कक्षा के अच्छे विद्यार्थियों के नाम एक ओर लिखना है व खराब विद्यार्थियों के नाम एक ओर लिखना है, सब विद्यार्थियों ने नाम लिखे किन्तु एक विद्यार्थी ऐसा था जिसने खराब विद्यार्थियों के 18 नाम लिखे व अच्छे विद्यार्थियों में 2 नाम लिखे। वहीं एक विद्यार्थी ऐसा था जिसने खराब विद्यार्थियों में सिर्फ अपना नाम लिखा था और अच्छे विद्यार्थियों में 19 नाम लिखे।

पुनः सारे कागज एकत्र किए गए तो देखा गया कि कक्षा में एक विद्यार्थी ऐसा था जिसने अपनी लिस्ट में 18 खराब व्यक्तियों के नाम लिखे उस विद्यार्थी का नाम 18 विद्यार्थी की उस लिस्ट में था जिसमें उन्होंने खराब विद्यार्थियों के नाम लिखे थे। दूसरी एक ओर वह विद्यार्थी था जिसने अपनी लिस्ट में केवल एक स्वयं का नाम ही खराब विद्यार्थी में लिखा था और 19 नाम अच्छे में लिखे थे। उस विद्यार्थी का नाम उन 19 विद्यार्थियों ने अच्छे में लिखा था कि ये कक्षा का सबसे अच्छा विद्यार्थी है। जिसने 19 को अच्छा माना था, तो उन 19 ने भी उसको अच्छा माना। जो सबको-बुरा मानता है, जो 18 को बुरा माना था तो उन 18 ने भी उसको बुरा माना।

शिक्षा—भावना का प्रभाव सामने वाले व्यक्ति पर भी पड़ता है, जिसके लिए अच्छा करोगे या सोचोगे वह भी तुम्हारे लिए अच्छा करेगा या सोचेगा।

□□□

20. चिड़िया उड़ी

एक बालक जंगल में पशु-पक्षियों के बीच में रहता था। पक्षी भी उसके ऊपर बैठते थे। उसके पिता ने कहा—तू पक्षियों के बीच में दिनभर खेलता रहता है आज जब तू शाम को घर आये तो एक चिड़िया ले आना, मैं उसके साथ खेलना चाहता हूँ। वह बालक गया पक्षी सारे उसके पास आ गये। जब तक उसके मन में पकड़ने का भाव नहीं आया तब तक तो वे उसके आसपास खेलते रहे किन्तु जैसे ही उसके मन में पकड़े का भाव आया पक्षी सारे उड़कर दूर हो गए। वह एक महात्मा के पास गया—पूछा तो उन्होंने बताया—बेटा! तेरी भावना पक्षी समझ गए थे, तू उन्हें पकड़ना चाहता था इसलिए वे उड़ गए।

जब तक उन्हें तुमसे अभय दान मिल रहा था तब तक वे तेरे पास आ रहे थे, तेरी भावना बदलते ही वे समझ गए। इंसान तो भाषा सुनता-समझता है किंतु पशु-पक्षी वृक्ष आदि भावना तक को पड़ लेते हैं, भावना की भाषा विश्व की सर्वोत्कृष्ट भाषा है इसे कोई भी समझ सकता है, शब्दों की भाषा समझने वाले सीमित हैं, भावना की भाषा समझने वाले देव, तिर्यंच आदि सभी होते हैं।

शिक्षा—सदैव अपनी भावना सबके प्रति अच्छी रखो।

□□□

21. बच्चे के लिए दूध

प्रातः काल का समय था, नवयुगल दम्पत्ति अपनी नयी गाड़ी में बैठकर जा रहे थे। उनके साथ उनका एक छोटा-सा बालक भी था। वे सैर करने के लिए जैसे ही शहर के बाहर निकले तो उनकी गाड़ी आलीशान होटल के सामने रुकी। पत्नी ने कहा—बेटा भूखा है इसके लिए दूध की आवश्यकता है। वह गाड़ी से उतर कर होटल के अंदर गये, दूध लिया और दूध के पैसे पूछे, 100 रुपये लगेंगे, उस व्यक्ति ने 100 रु. दे दिये। गाड़ी आगे बढ़ गयी। वे दिन भर घूमे, मनोरंजन करते-करते शाम हो गयी। जो दूध उन्होंने खरीदा था अब वह खत्म हो चुका था। शाम को जब वे घूमकर लौट रहे थे तो गाड़ी दूसरे रास्ते से आयी, बालक को भूख लगी बालक रोने लगा, अभी शहर दूर था, तो रास्ते से वहीं जंगल में एक झोंपड़ी दिखाई दी। सोचा यहां से दूध लेकर बच्चे को पिला दें।

गाड़ी झोपड़ी के पास रुकी। देखा वहां एक वृद्ध व्यक्ति बैठा है, ठेले पर छोटा-सा स्टोव रखा है चाय बना रहा था। उसने पूछा—बाबा क्या आपके पास दूध है? बोला—हां है। तो ठीक है मुझे थोड़ा दूध दे दो मेरा बेटा भूखा है, रो रहा है। वृद्ध ने दूध दे दिया। अब उस व्यक्ति ने वृद्ध से पूछा—इस दूध के कितने पैसे हो गए बताओ। बाबा जी ने कहा—बेटा यहां बच्चों के लिए दूध नहीं बेचा जाता। बाबा जी ने जिस लहजे से कहा तो उन दोनों की आंखों में आंसू आ गये।

जो वृद्ध थोड़ी देर पहले उनसे कह रहा था एक चाय पी लो मेरी दो पैसे की कमाई हो जाएगी किन्तु अब ये वृद्ध पुरुष मेरे बालक के लिए इतना सारा दूध बिना पैसे के दे सकता है, वास्तव में ये मानवता है। अब वे दोनों कहते हैं बाबा हम आपकी चाय अवश्य पीयेंगे और दोनों ने चाय पी उन्होंने थोड़ा ज्यादा पैसा देना चाहा यह सोचकर कि इसने हमें फ्री में दूध दिया है—उस दूध के पैसे भी इसी में शामिल हो जाएंगे। बाबा ने हाथ जोड़ लिये कहा—मैंने चाय की जो कीमत बतायी है उतने ही पैसे लूंगा लेकिन तू अपने बेटे के दूध के पैसे भी देना चाहता है, बेटा मैं भगवान से डरता हूं।

शिक्षा—हर कार्य का मूल्यांकन पैसों से नहीं करना चाहिए, दिमाग के साथ-साथ दिल का भी प्रयोग करें।

□□□

22. बचाने वाला भगवान

एक छोटे से ग्राम में राम निवास 'सुखिया' रहता था। उसका छोटा सा परिवार एक पत्नी व एक बेटा रहता था। वह भगवान का भक्त, भद्रपरिणामी था, सरल सहज था। गांव देहात का रहन-सहन था ऐसा वह रामनिवास अपनी सुखिया नाम की पत्नि के साथ रहता था, इसलिए उसे राम निवास सुखिया कहते थे।

एक दिन की बात उसका 20 वर्ष का युवा बेटा खेत से काम करके लौटा तो उसका शरीर बुखार से तपने लगा। उसका बहुत उपचार किया, कई देसी दवाई–खिलाई किंतु उसका बुखार ठीक नहीं हुआ रात बीत गयी जागते-जागते। वे दोनों अपने पुत्र को डॉक्टर के पास लेकर जाते हैं, डॉ. वी.के. चड्ढा उस नगर का प्रसिद्ध डॉ. था। सुखिया और रामनिवास बहुत आशा और उम्मीद के साथ उसके पास पहुंचे क्योंकि उस डॉ. की तारीफ पूरे शहर में थी। किन्तु ये क्या, डॉ. साहब अपने क्लीनिक से निकले उन्होंने अपनी गाड़ी स्टार्ट की और जाने को तैयार हुए। सुखिया ने आवाज लगायी। डॉ. साहब मेरा बेटा बहुत अस्वस्थ है, मूर्छित पड़ा हुआ है एक बार उसे देख लो। डॉ. साहब ने कहा–मेरे खेलने का समय हो गया है, मैं अभी इसे नहीं देख सकता, मेरे साथी मेरा इंतजार कर रहे होंगे, कहते हुए गाड़ी आगे बढ़ा ली। बेचारे दोनों देखते रह गए। कहां ले जाएं अपने बेटे को। अब तो बस भगवान की ही शरण है। ज्यों ही बालक को उठाते हैं वहीं उस डॉक्टर के क्लीनिक पर ही बालक के प्राण चले जाते हैं। वे दोनों अपने मृत बालक को लाते हैं, अश्रुधारा दोनों की रुक नहीं रही और आकर उसका दाह-संस्कार किया।

समय बीता, कई वर्ष बीत गये। अब वह राम निवास वृद्ध हो गया। चलने-फिरने में भी असमर्थ सा हो गया था। एक दिन संध्या काल की बात गांव में अफरा-तफरी मच गयी, राम निवास ने पूछा–बात क्या है इतना शोर-शराबा क्यों हो रहा है तो मालूम हुआ कि डॉ. वी.के. चड्ढा के बेटे को सर्प ने डस लिया, यहां बहुत भीड़ इकट्ठी हो गयी है, बहुत सारे सयाने, मांत्रिक-तांत्रिक आ गये हैं किन्तु कोई भी उसके विष को दूर नहीं कर पा रहा है। सुखिया ने भी बात सुनी। राम निवास कुछ आगे बढ़ा सुखिया ने रोकते हुए कहा–नहीं-नहीं तुम वहां नहीं जाओगे। किंतु बाद में चुपचाप कंबल ओढ़कर

वह वी.के. चड्ढा के घर पहुंच गया भीड़ में घुस गया और धक्का खाते-खाते बालक के पास पहुंच गया। बालक का पैर पकड़कर मंत्र पढ़ना प्रारम्भ करता है और कुछ ही मिनट हुए कि बालक की चेतना वापस आ गयी और राम निवास चुपचाप वहां से लौटकर अपने घर आ गया।

बालक का विष दूर हुआ सबने पूछा वह व्यक्ति कौन था? लोगों ने बताया कि हमारे ही गांव के राम निवास ने बालक का विष उतारा है। वह डॉ. उपकार चुकाने के फर्ज से उसके पास आता है और रामनिवास को देखकर स्तम्ब्ध रह गया। जिसके पुत्र को वह बचाने से इंकार कर देता है आखिर उसने ही डॉ. साहब के बेटे के प्राण बचाये।

शिक्षा—हर व्यक्ति को अपने कर्त्तव्यों को पालन करते हुए प्राथमिकता देनी चाहिए।

□□□

23. मकान बिक गया

एक व्यक्ति चला जा रहा था, सामने एक मकान में आग लग गयी तो लोगों ने शोर मचाया आग लग गयी, ये शोर उसके कान में भी आया। उसने सुना मेरे मकान में आग लग गयी और वह दौड़कर जाता है, उसने अपने पिता जी से कहा—पिताजी अपने मकान में आग लग गयी, पिता ने कहा—अरे हमने तो अपना मकान बेच दिया। उसकी लिखा पढ़ी भी हो गयी। अभी जो व्यक्ति रो रहा है, आंसू बहा रहा था अब चेहरे पर थोड़ी शांति आयी। फिर भी एक बार फोन लगाकर पूछा—भाई जो मकान बेचा था क्या उसकी लिखा पढ़ी हो गयी, वहां से जवाब आया नहीं। बस इतना सुनना ही था वह व्यक्ति पुनः रोने लगा। वह लिखा पढ़ी तभी हो गयी होती तो सही रहता। महानुभाव! ये संसारी प्राणी की दशा हैं, उसकी अपने-पराये की प्रवृत्ति चलती ही रहती है।

शिक्षा—व्यक्ति वस्तु में सुख-दुःख खोजता है और उसमें अपनापन जागृत करता हुआ एकमेक हो जाता है जो मूर्छा का कारण बनता है। अतः वस्तु में सुख-दुःख की खोज मत करो।

□□□

24. सराय में आराम

एक युवा व्यक्ति जिसने फौज में प्रवेश किया, उसकी शादी हुए अभी कुछ माह हुये थे, किन्तु ऑर्डर आया, तुम्हें शीघ्र ही अपनी ड्यूटी पर पहुंचना है। अपनी पत्नी को समझाया कि मुझे सीमा पर जाना है लौटकर आने में लंबा समय लग सकता है। देश के लिए शहीद भी हो जाऊं तो भी तुम घबराना नहीं। पत्नी ने कहा—संभव है आपके वंश की वृद्धि हो सकती है, आप जल्दी आना मैं आपकी प्रतीक्षारत रहूंगी। वह युवा चला जाता है और समय बीतता है। 1 वर्ष बाद उसे खबर लगी कि उसे पुत्र रत्न की प्राप्ति हुयी है। वह वहीं से खुशी व्यक्त करता है, आने में असमर्थता ज्ञापित करता है। पुनः घर से पत्र आता है पिताजी का देहावसान हो गया किन्तु वह न जा सका। कुछ दिनों बाद फिर समाचार आया मां का भी देहावसान हो गया। वह फिर भी न जा सका। इस प्रकार उसे 12 वर्ष हो गये। 12 वर्ष बाद वह बहुत व्याकुल हो गया सोचने लगा मैंने आखिर किसके लिए धन कमाया? मैंने अपने माता-पिता को खो दिया, अपनी जन्मभूमि को खो दिया, मेरी पत्नी न जाने किस प्रकार रह रही होगी, मैंने अपने पुत्र का मुख तक नहीं देखा इतनी सब बातों को सोच-सोचकर वह बहुत व्याकुल हो गया और अपने ऑफिसर से कहा कि अब मैं अपने घर जाना चाहता हूं, उसे घर जाने की आज्ञा मिल गयी।

यह बात जिस समय की है उस समय दूरभाष सम्पर्क भी नहीं था, वाहन आदि भी नहीं चलते थे। वह अपने घोड़े पर बैठकर आ रहा था और बहुत सारा धन जो उसने कमाया था सब अपने साथ लेकर आ रहा था। मार्ग में एक सराय में ठहरा, सराय के मालिक से अपने ठहरने की पूर्ण व्यवस्था करायी, साथ में घोड़े के चारे-पानी की भी व्यवस्था करवायी और सुबह जल्दी ही अपने घर पहुंच जाऊंगा यह सोचकर मन में खुश होकर सो गया। रात के 12 बजे थे कि उसी समय में एक महिला आयी उसके साथ में एक बालक था, बहुत बीमार था और बहुत रो रहा था उसकी मां उसे चुप करने का प्रयास भी कर रही थी किंतु उस बालक को तीव्र वेदना थी। सराय में वह फौजी सो रहा था उसकी नींद खराब हुयी उसने सराय के मालिक को बुलाया, डांटा कहा ये इतना शोर क्यों मचा रखा है। वह मालिक उस महिला के पास गया कहा—आप इसे शांत करिये किंतु मां क्या करती उसकी आंखों से अश्रुधारा बहती चली जा रही थी क्योंकि वह अपने बेटे की बढ़ती वेदना को सह भी नहीं पा

रही थी और उसके लिए कुछ कर भी नहीं पा रही थी। अंत में उस युवा फौजी ने सराय के मालिक से कहा—मुझे सोना है, सुबह-सुबह मुझे जाना है इसे बाहर निकालो। सराय के मालिक ने उस महिला व बच्चे को बाहर निकाल दिया। अब वह फौजी चैन से सोने लगा और अपनी पत्नी व बेटे से मिलने के लिए स्वप्न संजोने लगा और सुबह उठकर अपनी जन्मभूमि पहुंच गया।

मकान देखा—अरे ये क्या ये तो खण्डहर-सा पड़ा है, अड़ौसी-पड़ौसी से पूछा मेरी पत्नी आदि कहां हैं? उन्होंने बताया वह तुम्हारी याद में तुम्हें खोजती-खोजती यहां से चली गयी, बेचारी किसके सहारे जीती माता-पिता की मृत्यु हो गयी, बेटा भी उसका बीमार हो गया था, उसे लेकर तुम्हारी याद में तुमसे मिलने के लिए 3 दिन पहले ही यहां से चली थी। वह फौजी वहां से निकलकर उसे खोजने जाता है। सोचता है वह सरायों पर रुक-रुककर गयी होगी तो मार्ग में जितने भी सराय पड़ते वहां पूछ-पूछ कर उसकी खोज करता हुआ निकल गया और पूछते-पूछते उसी सराय में पहुंचा जहां पर पिछली रात्रि रुका था, वहां पूछा क्या यहां कोई महिला रुकी थी, उस महिला का नाम, गांव का नाम आदि सब बताया तो पता चला कि एक महिला आयी थी किंतु रात्रि में ही उसे हमने यहां से निकाल दिया था वह रोती हुयी यहां से चली गयी। वह और आगे उसे ढूंढ़ने लगा, कुछ ही दूरी पर उसे वह महिला मिली—जिसे देखते ही फौजी स्तब्ध रह गया। वह उसकी पत्नी ही थी। घबराते हुए फौजी ने अपने पुत्र के बारे में पूछा तो महिला फूट-फूटकर रोती हुई बोली—मैं अभी श्मशान से ही उसका अंतिम संस्कार करके आ रही हूं। इतना सुनकर वह फौजी फूट-फूटकर रोने लगता है, कहता है मैंने अपने बेटे को अपने ही हाथों से खो दिया। जिस बेटे के लिए मैं इतनी सम्पत्ति लाया था, वह मेरे कारण आज इस दुनिया में नहीं है। देखो जब उसे यह ज्ञात नहीं था कि सराय में आने वाली महिला व बालक उसके ही हैं, उसका ही बालक रो रहा है तब उस फौजी ने उसे वहां से बाहर निकलवा दिया और आज जब यह ज्ञात हुआ तब स्वयं उसके लिए रो रहा है।

शिक्षा—आज दुनिया की यही शैली हो गयी है। वह अपना-पराया करता है। जिसे पराया मानता है उसके प्रति करुणा, दया, रहम, सूखता चला जा रहा है और जिसे अपना मानता है उसके लिए प्राणों को भी देने के लिए तैयार रहता है। सबके साथ एक सा व्यवहार करें।

□□□

25. नमक का स्वाद

एक बालक ने सब्जी बनायी वह उसमें नमक नहीं डाल पाया और टिफिन पैक करके अपनी बहन को दे आया जहां वो पड़ती थी। वह बालिका ने जब भोजन किया तो स्वाद ना होने से उसने वह डिब्बा (टिफिन) ज्यों का त्यों नमक की बोरी में रख दिया। 1 घण्टे बाद (टिफिन) वापस ले लिया और जब सब्जी खायी तो उसे स्वाद नहीं आया। अरे! मैंने तो इस टिफिन को 1 घण्टे तक नमक की फैक्ट्री में नमक के बोरे में रखा था फिर भी स्वाद नहीं आया। भैया चाहे वह टिफिन नमक के बोरे में रखा हो या नमक की बोरी टिफिन के ऊपर रख दी जाए क्या फर्क पड़ता है जब तक कि नमक उस सब्जी में न पड़े। अंदर जाकर नमक न घुले तब तक नमक का स्वाद नहीं आ सकता। जब तक नमक की और सब्जी की दूरी बनी हुई है तब तक वह नमक सब्जी में अपना प्रभाव नहीं छोड़ सकता।

शिक्षा—ऐसे ही प्रभु परमात्मा और भक्त की दूरी बनी है कितनी ही समीपता हो जाए जब तक वे दोनों मिलते नहीं हैं तब तक भक्त को भगवान की भक्ति का आनंद नहीं आता है। जब भक्त अपने आप में भगवान को घोलने लगता है तो भक्त भी अपने आप भगवान बनने लगता है। उसका कर्म मल धुलने लगता है। परमात्मा बनेगा तो कर्म का मल धुलेगा, परमात्मा अंदर घुसेगा तो कर्मों का ताला खुलेगा।

□□□

26. कुल्हाड़ी की धार

एक लकड़हारा था जो अपनी कुल्हाड़ी से लकड़ी काटता था, हट्टा-कट्टा, सुडोल शरीर वाला है, वह बहुत मेहनत करता हुआ अपने परिवार का पालन-पोषण करता है एक बार उसने एक दिन में 10 लकड़ी काटी, दूसरे दिन खूब मेहनत की पर 9 लकड़ी काट पाया, अगले दिन फिर से मेहनत की और 7 ही लकड़ी काट पाया, ऐसा क्यों? जबकि वह मेहनत तो ज्यादा कर रहा है, समय ज्यादा लगा रहा है फिर भी परिणाम कम क्यों निकल रहा है? दरअसल में उसकी कुल्हाड़ी की धार मंद होती चली जा रही है। मेहनत ज्यादा करें धार कमजोर हो तो लकड़ी ज्यादा नहीं कटेगी। ऐसे ही एक भक्त ने माना कि पहले दिन प्रार्थना की 5 मिनट, दूसरे दिन 10 मिनट, तीसरे दिन 25 मिनट करते-करते एक घण्टा लगा किन्तु पहले दिन 5 मिनट में जो आनंद आया वह आनंद एक घण्टा प्रभु भक्ति में नहीं आया। क्यों? क्योंकि उसकी प्रार्थना की धार मोटी हो गयी थी। अन्यथा अन्तर्मुहूर्त की भक्ति भी तीव्र हो तो बड़ा प्रभाव दिखाती है और तीव्र नहीं हो तो 2-4-6 घण्टे की भक्ति की प्रभाव नहीं दिखाती।

शिक्षा—कार्य करते समय अपने तीनों योगों—मन वचन काय का पूर्ण रूपेण प्रयोग करो।

□□□

27. प्रभु की शिकायत

एक भक्त था—रामदास। वह भगवान की बहुत भक्ति करता था, भक्ति करते-करते उसे लगा कि उसे भगवान दिखाई दे रहे हैं। उसने सबसे कहा मुझे भगवान दिखाई देते हैं। नगर वालों को सुनकर बड़ा आश्चर्य हुआ, नगर वाले सभी पहुंचे और कहने लगे दिखाओ तुम्हारे भगवान कहां हैं? उसने भक्ति की किंतु भगवान नहीं, आये बहुत देर हो गयी तो सभी लोग वहां से चले गये, रामदास अकेला रह गया और रोने लगा। थोड़ी देर बाद भगवान का रूप दिखाई दिया तो वह शिकायत करने लगा—कहने लगा भगवान! यदि तुमने मुझे दर्शन देने ही थे तो सब नगर वालों के सामने क्यों नहीं आये अब क्यों आये? मैं 3 घण्टे से खड़ा था आपकी भक्ति में। तभी उसे उनकी वाणी सुनाई दी—रामदास तू आज मेरे लिए तीन घण्टे खड़ा हो गया और मैं नहीं आया तो तूने तुझसे शिकायत कर दी। मैंने तो कभी तुझसे शिकायत नहीं की। जबकि मैं तो सदा तेरी परछाई बनकर तेरे साथ खड़ा रहता हूं। तू 24 घण्टे में मुझे कितनी बार देख पाता है? तू कभी मुझे देखता है क्या? तू मुझे नहीं देखता तो मैंने आज तक तुझसे शिकायत नहीं की और मैं तुझे 3 घण्टे नहीं दिखाई दिया तो शिकायत करने लगा। भक्त कभी शिकायत नहीं करता और शिकायत करने वाला कभी भक्त नहीं होता। सच्ची भक्ति और शिकायत एक दूसरे के दुश्मन हैं।

शिक्षा—महानभुाव! चाहे क्षण भर भी करो पर सच्ची प्रार्थना करो झूठी प्रार्थना से कुछ भी नहीं होने वाला। झूठी प्रार्थनाएं प्रभु से नहीं मिलाती जैसे नकली नोटों से व्यापार नहीं होता। असली नोट कम भी हो तब भी व्यापार चल सकता है। नकली नोट, नकली प्रार्थनाएं स्वप्न की तरह से हैं, ये केवल मन को बहला सकती हैं मंजिल तक नहीं पहुंचा सकती।

□□□

28. पहाड़ को धक्का

एक बार कुछ लोग खेत पर काम करने गये, वहां एक पहाड़ था। सर्दी का समय था, पहाड़ की वजह से धूप नहीं आ रही थी, वे बड़े परेशान थे, तो वे 10-20 लोग खेत का काम छोड़कर पहाड़ को धक्का देने लगे। आने-जाने वाले व्यक्ति कहते हैं क्या कर रहे हो? वे बोले इस पहाड़ ने हमारी आने वाली धूप को रोक रखा है इसलिए इसको साईड में कर रहे हैं। वे बोले पागल हो गये हो क्या? और कहकर चले गये। उन लोगों को धक्का देते-देते दोपहर हो गयी। सूर्य दोपहर में ऊपर आ गया, तो कहने लगे चलो कुछ तो साता मिली हमें। और खेत का काम छोड़कर शाम तक लगे रहे कहने लगे—देखो हमने पहाड़ को ठेल दिया जो सूर्य पहाड़ के पीछे था वो अब पहाड़ के सामने आ गया। शाम को घर चले गये। दूसरे दिन पुनः खेत पर काम करने आये, पहाड़ वहीं था, सूर्य का उदय हुआ धूप नहीं आयी। तो वे कहने लगे रात में जब हम घर जाते हैं तो ये पहाड़ वापस आ जाता है। दिन में ढेल-ढेलकर इसे हम पीछे करते हैं।

शिक्षा—समझदारी व सूझबूझ कर किया कार्य ही सार्थकता को प्राप्त होता है अन्यथा परिश्रम व्यर्थ हो जाता है।

□□□

29. सौ का सौ ही रहा

एक बार दो किसान अपने खलियान में ढेर लगाकर उसकी रखवाली कर रहे थे। सामने से कोई देव निकला। किसान ने हाथ जोड़े और पूछा—ये हमारे खेत में अनाज का ढेर लगा है यह कितना ढेर है। उन्होंने कहा ये तुम्हारा ढेर 100 मन का है, दूसरे ने पूछा हमारा ढेर कितना है तो कहा तुम्हारा भी 100 मन का है और आशीर्वाद देकर चले गये। प्रातःकाल उन दोनों ने अपने-अपने ढेर को तोला तो ढेर 100-100 मन के ही निकले। रात्रि में पहले वाला किसान जब सो गया था तब दूसरा किसान रात में ही उसके ढेर में से तसला भर-भर के धान अपने ढेर में डाल लिए, सोचा 10-20 मन धान मेरे ढेर में बढ़ जाएगा। मेरा हो जाएगा 120 मन। इसका रह जाएगा 80 मन।

किंतु प्रातः काल जब तौला तो ढेर दोनों के 100-100 मन ही निकले। दूसरे किसान के मन में चिंता हुई 100 कैसे रहा, 120 क्यों नहीं हुआ। वे देव 100 मन कहकर ही गये थे और रात भर में मैंने 20 मन तो डाल ही दिया होगा। चिंता में बैठा ही था, तब तक वे देवता वहां से पुनः निकलकर आये। उसने पूछा—देवता जी क्या आप झूठ भी बोलते हो, बोले नहीं। आप कल कहकर गये थे कि हमारा अनाज का ढेर 100 मन का है। देवता बोले—क्यों? क्या 100 मन से कम निकला है? बोले—नहीं 100 मन तो आपने नाप बताया था। देवता बोले फिर इसमें झूठ कहां रहा। बोला—बात ये है कि रात्रि में मैंने इसके ढेर में से कम-से-कम 20 मन अनाज अपने ढेर में डाल लिया था तो मेरा ढेर 120 मन का होना चाहिए। देवता बाले—तूने उसके ढेर से 20 मन निकाला और मैंने तेरे ढेर में से उसके ढेर में डाला था। बात बराबर रही, जो काम रात में तूने किया वहीं मैंने किया।

शिक्षा—जो दूसरों के लिए कुआं खोदता है उसके लिए भी खाई तैयार रहती है। दूसरों का अहित चाहने वाला अपना भी हित नहीं कर पाता।

□□□

30. समाधिमरण

जीवन्धर कुमार पूजा के वस्त्र पहनकर हाथ में स्वर्ण पूजन थाल व सामग्री लेकर के भगवान के दर्शन हेतु जिनालय जा रहे थे, मार्ग में एक जगह भण्डारा हो रहा था। वहां एक (कुत्ता) श्वान घुस गया और भोजन सामग्री झूठी कर गया, वहां के मठाधीशों ने उसको डण्डे से मारा। वह कुत्ता सड़क पर घायल पड़ा हुआ है, उसका प्राणान्त होने वाला है। कुमार जीवन्धर ने पूजा की थाली एक तरफ रखी, उस कुत्ते को उठाया अपनी जंघा पर रखा, सहलाया पुनः अपनी थाली से जल का कलश उठाया जिससे वह बच जाए, किन्तु उसका प्राणान्त होने वाला था। मरणासन्न अवस्था में उस श्वान को उन्होंने णमोकार मंत्र सुनाया जिससे उसका कल्याण हो जाए, उसे संबोधन दिया हे भव्य जीव! तू संसार में क्यों भटक रहा है, जिसने तुझे मारा है उसके प्रति बैर मत रख, बुरे भाव मत रख, तू अपने परिणामों को सुधार ले और इस अंत समय में प्रभु परमात्मा का नाम ले, तू भी कभी भगवान बन सकता है ऐसा संबोधन पाकर देव हो जाता है। वह स्वर्ग में अपने अवधि ज्ञान से जानता है और जीवन्धर की सेवा करने के लिए आता है।

महानुभाव! ऐसे ही पद्मरुचि सेठ तीर्थयात्रा के लिए जा रहे थे, मार्ग में मरणासन्न बैल दिखायी दिया वे रथ से उतरकर आये, उन्होंने तीर्थयात्रा को रोका और से सम्बोधन देते-देते उस बैल के प्राण छूट गए। पद्मरुचि सेठ ने बैल की सेवा करने से इतना पुण्य का संचय कर लिया कि वे आगे चलकर अष्टम बलभद्र श्री रामचन्द्र होते हैं। बैल का जीव उस समाधि को प्राप्त करके सुग्रीव नाम का विद्याधरों का राजा होता है, वह भी अपने पूर्वभव के वृत्तान्त को जानता है और रामचन्द्र जी की सेवा करने का संकल्प ले लेता है।

शिक्षा—मरण समय में प्रभु का स्मरण करना ही समाधि सल्लेखना मरण है। मरते हुए प्राणी को पानी और प्रभु नाम का अमृत दोनों पिलाने चाहिए जिससे उसे सद्गति की प्राप्ति हो।

□□□

31. ग्वाला भी तर गया

एक ग्वाला जब गाय चराकर लौटकर आ रहा था तो मार्ग में देखता है कि कड़कड़ाती सर्दी में एक दिगम्बर साधु पहाड़ की चोटी पर तपस्या करने बैठे हैं। उसे लगा कि ये कहीं सर्दी में ठिठुर न जाएं तो वह जल्दी से अपनी गायों को सेठ के यहां बांधकर आया और रातभर अग्नि जलाकर सेवा करता रहता है। वह ग्वाला अनपढ़ तो था किंतु अग्नि से अपने हाथ गर्म कर करके उनके शरीर से लगाता है ताकि उनकी सर्दी दूर हो जाए वह ग्वाला प्रातःकाल देखता है कि वे मुनिराज अपने ध्यान को पूरा करके आकाश मार्ग से जा रहे हैं, वह कहने लगा—हे वन के देवता! मुझे कुछ तो वरदान दे दो आप तो देवता हो, भगवान जैसे हो मेरा कल्याण कैसे होगा? मुनिराज ने कुछ दिया नहीं अपनी जंघा पर हाथ रखकर "णमो अरिहंताणं" कहा और आकाश मार्ग से चले गये। णमो अरिहंताणं पद को सुनकर वह ग्वाला दिन रात उसी का उच्चारण करता रहता। उसे उस मंत्र पर अटूट श्रद्धा हो गयी।

एक दिन अचानक नदी में बाढ़ आने से उसकी गायें उसमें बह गयी, उन्हें बचाने के लिए वह भी नदी में कूदा और नदी में बहता हुआ एक ठूठ आकर उसके पेट में चुभ गया जिससे वह मृत्यु को प्राप्त हो गया। वह आगे चलकर सेठ सुदर्शन हुआ। पुनः उसी भव में दीक्षा लेकर तप किया व पटना से मोक्ष को प्राप्त किया, उसका कल्याण हो गया।

शिक्षा—सच्ची श्रद्धा से अनपढ़ हो या ज्ञानवान सभी मुक्ति को प्राप्त कर सकते हैं।

□□□

32. माँ की सेवा

एक युवा ने अपनी मां को अपनी पीठ पर बिठाकर शिखर जी की यात्रा करायी, उससे पूछा तुम गरीब हो क्या? तुमने अपनी मां को डोली से यात्रा क्यों नहीं करायी। वह बोला मैं ऐसी एक नहीं बीसों डोली मंगवाकर यात्रा करा सकता हूं। किन्तु मैं समझता हूं, मैंने अपनी पीठ पर अपनी मां को बिठाकर एक यात्रा करायी है, इस एक यात्रा से मुझे हजारों यात्राओं का फल मिल गया। जो सेवा मैंने तन से की है वह सेवा मुझे धन से प्राप्त नहीं होती। गरीब की सेवा धन देकर भी की जा सकती है, अच्छे वचनों से भी की जा सकती है। सेवा के अनेक रूप हैं जहां जिस समय जिस वस्तु, व्यक्ति की आवश्यकता है वहां अपना वैसा सहयोग प्रदान करना सेवा है। जिसकी तुम सेवा कर रहे हो वह तुम्हारी सेवा से इतना समर्थ हो जाए कि उसे आगे किसी की सेवा लेने की आवश्यकता न पड़े। वह भी दूसरों की सेवा ही धर्म की कोटी में आती है।

शिक्षा—अपने माता-पिता की सेवा स्वयं अपने हाथों से करें, नौकरों के द्वारा कराई गई सेवा सार्थक नहीं।

□□□

33. डूबते को डुबाया

एक व्यक्ति ने डूबते हुए बालक को बचाया। वह बालक बच गया। जब भी वह व्यक्ति वहां से गुजरता था, वह बालक दिखाई देता था तो वह व्यक्ति उस बालक को बार-बार कहता था कि देख उस दिन मैंने तुझे बचा लिया था नहीं तो डूबकर वहीं मर जाता। वह बालक हाथ जोड़कर कहता है हां-हां अंकल जी आपने मुझे प्राणदान दिया, मुझे बचा लिया, मैं आपका उपकार जीवनभर नहीं भूलूंगा। अब वह व्यक्ति जब बालक मिल जाए तभी बार-बार टोके। कभी भी किसी के सामने अपना अहसान सा दिखाता रहता। एक दिन वह बालक आया और बोला अंकल जी आप एक काम करो मेरा गला दबा दो, क्योंकि वैसे तो मैं एक ही बार मरता किंतु अब तो आप दिन भर में दसों बार टोकते हैं। ऐसी सेवा काम की नहीं जो एक बार कर दी और दिन में 100-100 बार टोको। सेवा करना है तो–

'नेकी कर दरिया में डाल'

शिक्षा–तुम भूल जाओ तुमने किसी की सेवा की है वह तुम्हें कभी नहीं भूलेगा, सेवा करके सबसे कहते फिरोगे तो तुम्हारा सारा पुण्य क्षीण हो जाएगा। इसीलिए अपनी शक्ति को न छिपाते हुए प्रसन्न भाव से सेवा करो।

□□□

34. ज्ञान का अजीर्ण

एक बार एक विद्वान थे, जिन्हें अनेक शास्त्रों का ज्ञान था और उसका अहंकार भी। एक बार वे महानुभाव अपने शिष्य के घर गये। उस शिष्य ने गुरु का स्वागत किया और बोला—गुरु जी आप शीघ्र ही स्नान कर लें फिर आप और हम मिलकर प्रभु की पूजा भक्ति करेंगे तब तक भोजन भी तैयार हो जाएगा।

सर्दी का समय था, गुरु जी ने सोचा कि कौन स्नान करे आलस तो आ रहा है और कहने लगे बेटा—तुम जानते नहीं क्या मुझे, तुम मुझसे भक्ति पाठ करने की कह रहे हो, मुझे इन सबकी क्या आवश्यकता। मेरे अंदर तो ज्ञान की गंगा बह रही है। जब ऐसी अखण्ड गंगा बह रही है तो बताओ मुझे स्नान करने की क्या आवश्यकता है। शिष्य ने कहा—ठीक है गुरुजी। किन्तु भगवान की पूजा कैसे करोगे? अरे भाई पूजा भक्ति करने की मुझे क्या आवश्यकता, मुझे भगवान का पूरा चरित्र याद हैं।

शिष्य ने अपनी पत्नी से कहा—जाओ व्यंजन पकवान बनाओ। पत्नी भी कुशल थी उसने भी व्यंजन जल्दी तैयार कर दिये और फिर गुरुजी भोजन करने बैठे, शिष्य भी बैठ गया। गुरु जी ने खूब सारे व्यंजन खा लिये। जब पण्डित जी ने सब खा लिया तो शिष्य ने कहा—अब आप विश्राम कर लीजिए। जब पण्डित जी विश्राम करने कमरे में चले गये तो शिष्य ने उनके कमरे की बाहर से कुण्डी लगा दी। 3 घण्टे बाद गुरु जी उठे, चिल्लाये बोले बेटा दरवाजा खोलो मुझे बड़ी तेज प्यास लगी है, एक लोटा पानी दे दो। शिष्य बोला—गुरु जी आपको पानी की क्या आवश्यकता है आपके अंदर तो अखण्ड अथाह ज्ञान की गंगा बह रही है वहां से एक लोटा पानी लेकर पी लो। वे बोले नहीं बेटा मेरे प्राण कण्ठ में आ रहे हैं यदि तूने मुझे पानी नहीं दिया तो तुझे हत्या का पाप लगेगा। पण्डित जी खूब रोये-चिल्लाये और अंत में हाथ जोड़कर क्षमा मांगी बेटा मैं कभी अहंकार नहीं करूंगा। शिष्य ने कुण्डी खोली गुरु जी को बाहर निकाला, पानी पिलाया कहा गुरु जी मुझे क्षमा कर देना मैंने यह सब इसीलिए किया क्योंकि आपको ज्ञान का अजीर्ण हो गया था।

शिक्षा—अहंकार व्यक्ति को देखकर नहीं आता अपितु अहंकार गुरु-शिष्य, छोटे-बड़े किसी को भी आ सकता है। अहंकार नहीं करना चाहिए।

□□□

35. माहौल

एक बालक स्कूल पढ़ने के लिए गया। स्कूल में पहले दिन पढ़ाया, सदा सत्य बोलो झूठ नहीं बोलना चाहिए। वह घर आया तो उसने देखा पिताजी घर में बैठे हैं तभी कोई व्यक्ति तगादा करने आया, पिताजी ने बालक से कहा—द्वार पर चले जाओ उस आये व्यक्ति से कह दो पिताजी घर में नहीं है। बालक ने भी जाकर यही कह दिया। दूसरे दिन वह बालक पुनः स्कूल पढ़ने गया, स्कूल में पढ़ाया आपस में लड़ना-झगड़ना नहीं चाहिए। घर आया देखा माता-पिता आपस में लड़-झगड़ रहे हैं। तीसरे दिन पुनः स्कूल गया पाठ सिखाया—बड़ों की विनय करनी चाहिए, घर आकर देखा कि पिताजी तो दादाजी से अपशब्द कह रहे हैं, उनकी अवनिय कर रहे हैं। इस प्रकार बालक ने देखा कि घर का माहौल कुछ और है, स्कूल का कुछ और है। वह कहने लगा—पिताजी मैं अब स्कूल नहीं जाऊंगा, स्कूल में टीचर उल्टी शिक्षा देते हैं। पूछा क्या पढ़ाते हैं—वह बोला ऐसा-ऐसा पढ़ाते हैं। पिता ने कहा बेटा ठीक तो पढ़ाते हैं। वह बोला जब स्कूल में ठीक पढ़ाते हैं तो घर का माहौल उल्टा क्यों हैं? मैं नहीं पढूंगा, या तो घर का माहौल सुधारो या घर और स्कूल का माहौल एक सा करो।

शिक्षा—जिस घर में अच्छे संस्कार दिये जाते वे बालक उस स्कूल में नहीं पढ़ते। जहां पर घर के व स्कूल के संस्कार एक जैसे होते हैं वहां बच्चों को पढ़ने में बाधा नहीं आती।

□□□

36. भारतीय सैनिक

युद्ध के मैदान में एक भारतीय सैनिक घायल हो गया। वह सैनिक अपनी आंख खोलकर देखता है कि आस-पास और भी सैनिक घायल पड़े हैं। अपने हाथ-पैरों से खिसकता-खिसकता, जैसे-तैसे करके, कहीं से पानी लाया और एक विदेशी शत्रु के पास पहुंचता है, हाथ में पानी का लोटा लेकर के कहता है—भाई! हम भारतीय संस्कृति के साथ जीने वाले हैं, हमारी-तुम्हारी शत्रुता तब तक थी जब हम आमने-सामने युद्ध कर रहे थे अब तुम और हम मित्र-मित्र हैं। तुम प्यासे हो, दर्द से कराह रहे हो मैं तुम्हें पानी पिलाने के लिए आया हूं, पानी पी लो।

वह विदेशी शत्रु जो बेहोशी की हालत में था, दर्द से कराह रहा था उसने अपने वस्त्र से छिपी कटार निकाली और उस भारतीय सैनिक के पेट में झोंक दी। उसने कहा—तुम शत्रु मानो या ना मानो, हम तो तुम्हें शत्रु मानते हैं, हमें तुम्हारे हाथ का पानी नहीं पीना है भले ही हम अपने प्राण दे देंगे। वह भारतीय सैनिक वहां मूर्च्छित हो गया किन्तु अभी भी उसकी श्वासें चल रही थी। तब तक कुछ कार्यसेवी। युद्ध क्षेत्र की समीक्षा करते-करते वहां आये और उन दोनों घायलों को भी अस्पताल में भर्ती किया।

वह सैनिक दो दिन तो बेहोश ही रहा ऐसा लग रहा था बचेगा नहीं किन्तु तीसरे दिन उसकी मूर्च्छा टूटी तो वह उठा आंख खोली तो उसे युद्ध क्षेत्र का वही दृश्य याद आ जाता है। भारतीय सैनिक ने जब इधर-उधर देखा कि मेरे आस-पास कौन है। संयोग वश तीसरे पलंग पर उसे वह विदेशी सैनिक दिखाई दिया।

उस भारतीय सैनिक के पास दूध रखा था जो कि उसके पीने के लिए रखा था, उसने दूध का गिलास हाथ में लिया पीने को हुआ तो उसके मन में भाव आया, उस दिन मैं उस सैनिक को पानी नहीं पिला पाया किन्तु अब मैं अपनी भावना जरूर पूरी करूंगा, लो तुम पहले मेरे हाथ से दूध पीओ उसके बाद मैं पीऊंगा। उसने कहा—कहीं तुम दूध में जहर तो नहीं मिला लाये? वह बोला हम भारतीय हैं किसी के साथ धोखा नहीं करते। वह विदेशी शत्रु उसकी इन बातों से इतना पिघल गया कि उसकी आंखों में आंसू आ गये।

ये भारतीय सैनिक कौन-सी मिट्टी के बने हैं, चट्टान के हैं या पत्थर के बने

हैं। मैंने इसे धोखे से मारा, अपमान किया फिर भी यह मुझे दूध पिलाने आया। वह अपने पलंग से उठा और उसके पैर पकड़ लियें वह कहता है मैंने जो भारत के बारे में सुना था कि भारत वास्तव में विश्व का गुरु है। मैं अब कभी भारत छोड़कर नहीं जाऊंगा भले ही मेरे शरीर ने विदेश में जन्म लिया है किन्तु अब मैं यहीं इस देश के लिए अपने प्राण विसर्जित करने में ही अपना सौभाग्य मानूंगा।

शिक्षा—दुश्मन को भी प्यार से अपना बनाया जा सकता है।

□□□

37. नोट के बदले पैसे

एक भिखारी था। वह भिखारी भीख मांगता था जब लोग उसे नोट देते थे तो वह नोट फेंक देता था। तो लोगों को बड़ा कौतुक हुआ, खेल जैसा आनन्द आने लगा कि वह पैसे (सिक्के) तो लेता है पर नोट नहीं लेता। लोग उसे नोट देते हैं। वह फेंक देता लोग उसे सिक्का दे देते वह रख लेता। इसे नोट देकर तो देखो ये कैसे फेंक देता है। लोग समझ रहे हैं कि ये पागल है किंतु भिखारी समझ रहा है इन लोगों को मैं पागल बना रहा हूं। क्योंकि यदि मैं नोट लेना प्रारम्भ कर दूंगा तो एक व्यक्ति ही नोट देगा और कोई देगा ही नहीं। अब क्योंकि मैं नोट फेंकता हूं तो ये मेरा खेल बन गया, लोग मुझे चैक करने आते हैं कि नोट देते हैं तो फेंकता हूं सिक्का रख लेता हूं। ऐसा करते-करते मेरे पास हजारों सिक्के इकट्ठे हो गये।

शिक्षा—ऐसे ही धन वाला व्यक्ति समझता है कि मैं दुनिया को पागल बना रहा हूं किन्तु दुनिया समझ रही है कि वास्तव में जो धन में पागल हो गया है वही पागल है।

38. वरदान नहीं अभिशाप

एक विशाल नगर पर अपना अधिपत्य जमाने वाला राजा राज्य करता था। किन्तु लालच ने उस राजा लालच ने उस राजा पर अपना अधिपत्य बनाया हुआ था। एक दिन उसके नगर में एक तपस्वी आए जो सबकी मनोकामना एक वरदान में ही पूरी करते थे। राजा ने भी उनसे वर मांगा कि मैं जिस वस्तु को चाहूं वह सोना बन जाए। उसे महात्मा ने खूब समझाया कि ऐसा वरदान मत मांग, तू उससे सुखी नहीं हो पाएगा किन्तु वह नहीं माना कहने लगा नहीं महात्मा जी मैंने आपकी इतनी सेवा की और अब आप वरदान देने से कतरा रहे हैं। वह बोला—मुझे तो वही वरदान चाहिए। एक बार महात्मा ने पुनः कहा—सोच लो विचार कर लो किन्तु वह नहीं माना तो महात्मा जी ने तथास्तु कह दिया। वह वरदान पाकर दौड़ा और जाकर जब लौहे की वस्तुएं छू ली सब स्वर्णमय हो गयी। मकान छुआ वह भी स्वर्णमय हो गया, सब सोने-सोने का हो गया। इसके बाद भोजन करने बैठा जैसे ही पानी होंठों से लगाया वह भी सोने का हो गया, ग्रास छूआ वह भी सोने का हो गया। अब क्या करे? रोने लगा परेशान होकर दौड़कर पुनः महात्मा जी से क्षमा याचना करने आता है कहता है ये वरदान वापस ले लो, महात्मा जी ये तो अभिशाप है।

शिक्षा—ऐसे ही धन को प्राप्त कर जो ठोकर खा लेते हैं तब वे कहते हैं धन मांगना अभिशाप है वरदान नहीं है।

❑❑❑

39. बईमानी की कमाई

एक ग्वालिन गांव से प्रतिदिन दूध लाती थी और दूसरे गांव में बेचती थी। मार्ग में एक नदी पड़ती थी, वह ग्वालिन उस नदी में से पानी लेकर अपने दूध में मिलाती थी। 10 किलो दूध का 13-16 किलो दूध बना लेती थी और ऊँचे मूल्य पर बेचकर आती थी। उसने इस तरह से बहुत धन कमा लिया, उसे लग रहा है मैंने दूध के साथ-साथ पानी भी बेच दिया, वह बहुत खुश हो रही थी कि मैंने पानी से पैसा कमा लिया। और उन पैसों को इकट्ठा कर एक सोने की नथ बनवायी। नथ भी काफी बड़ी और भारी बनवाई जो सबकी नज़रों में आनी चाहिए थी। एक दिन उस नथ को पहनकर नदी पार कर रही थी, दूध भी साथ में था, वह नदी में झांक रही थी कि तभी एक बंदर पेड़ से उछलकर आया और उसकी नाक पर झपट्टा मारा जिससे उसकी नथ नदी में गिर गयी और नाक भी कट गयी। तभी जो व्यक्ति उसके साथ नाव में बैठे थे वो कहने लगे अरे तू कहती थी मैंने पानी से पैसा कमाया है। देख **"पानी का धन पानी में, नाक कटी बेईमानी में।"**

शिक्षा—पैसा कभी भी बेईमानी से कमाया हुआ लाभकारी सिद्ध नहीं होता।

□□□

40. टाईम पास

एक व्यक्ति ट्रेन से यात्रा कर रहा था, वह ट्रेन जब संकीर्ण मार्ग से जा रही थी और सुरंग के द्वारा पर्वतों के बीच से निकल रही थी तो उस ट्रेन में दो व्यक्ति आपस में चर्चा करने लगे। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति से कहता है भाई आप कहाँ से आये हैं? वह सामने वाला व्यक्ति कहता है—मैं अभी दिल्ली से आया हूं, उसने प्रति प्रश्न किया कि आप कहां से आ रहे हैं। उसने अपको कहां जाना है? बोला भाई साहब मुझे तो मुंबई तक जाना है, और आपको? वह बोला मुझे भी मुंबई जाना है।

अरे ये तो बड़ी अच्छी बात है हमारा तुम्हारा साथ तो मुंबई तक हो गया। अच्छा ये बताओ आपका वास्तविक निवास स्थान कहाँ है? वह बोला—मैं तो मुंबई में ही रहता हूँ। अच्छा! और आपका निवास स्थान? मैं भी। अरे ये तो बड़ा अच्छा संयोग है। अच्छा इतना तो बताइए कि आप मुंबई में रहते कहाँ हो? मैं मुंबई में बोरीवल्ली में रहता हूँ, और आप, मैं भी बोरीवल्ली में रहता हूँ। वाह! ये तो और भी अच्छी बात है। थोड़ी देर बाद पूछा—भाई बोरीवल्ली तो बहुत बड़ी है आप उसमें कहाँ रहते हैं बोरीवल्ली में जैन मंदिर के सामने वाली बिल्डिंग में रहता हूँ, और आप? मैं भी वाह! क्या संयोग है, बहुत ठीक।

एक बात और बताओ उस बिल्डिंग में 32 माले हैं तुम कौन से नं. के माले पर रहते हो। वह बोला मैं तो 21वें नंबर के फ्लोर में रहता हूँ और आप? अरे वाह रहता तो मैं भी 21वें नंबर के फ्लोर पर हूँ—अरे भाई क्या संयोग बैठता चला जा रहा है 21वें नंबर के फ्लोर पर आप भी रहते हो मैं भी रहता हूँ, पर 21वें नं. फ्लोर में 27 कमरे हैं आपके कमरे का नंबर कौन-सा है? भाई साहब मैं तो 27वें नंबर के कमरे में रहता हूँ, और आप? मैं भी 27वें नंबर के कमरे में रहता हूँ। अब जो साथ में बैठे हुए यात्री थे वे इन दोनों की वार्ताओं को सुन रहे थे उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ कि ये थोड़ी बात अटपटी सी सुनने में लगती है कि दोनों कह रहे हैं कि दोनों 27वें नंबर के कमरे में रहते हैं।

अब उन यात्रियों से रहा नहीं गया उसने कहा—भाई साहब आपको यदि कुछ हर्ज न हो तो हम आपसे एक छोटी-सी बात पूछना चाहते हैं कि एक कमरे में रहते हुए भी क्या आप दोनों एक दूसरे को जानते नहीं जो इतनी लंबी चौड़ी चर्चा आप कर रहे हैं। वे दोनों बोले तो ये ट्रेन सुरंग से निकल रही थी तो हमें डर लग रहा था। हम दोनों टाईम पास कर रहे हैं। हम दोनों तो बाप बेटे हैं।

शिक्षा—हमें समय सदुपयोग करना चाहिए उसे चर्चाओं में बर्बाद नहीं करना चाहिए। चर्चा ऐसी हो जिसे चर्या में भी उतारा जा सके। □□□

41. दौड़

विलमा रूडोल्फ जिसका जन्म टेनेसीसी के एक गरीब परिवार में हुआ था। चार वर्ष की उम्र में उसे पोलियो हुआ, वह इतनी अस्वस्थ हुई कि शायद उसके जीने की भी आशा न थी। 9 वर्ष की उम्र में उसका ऑपरेशन हुआ, डॉक्टर्स ने कहा बेटा—बिना वैशाखी के सहारे तुम चल न सकोगी। कभी बिना वैशाखी के चलने की कोशिश नहीं करना, इतना सुनते ही उसकी आंखों में आंसू आ गये वह बोली डॉक्टर साहब मैं आगे बढ़ना चाहती हूं और दौड़ना चाहती हूं। उसने अपनी मां से कहा, मां ने कहा—बेटी चिंता मत करो यदि तुम्हारे मन में जुनून है, संकल्प है कि तुम दौड़ना चाहती हो तो मैं तुम्हारी मदद करूंगी। उस बालिका ने धीरे-धीरे चलना प्रारम्भ किया 15 वर्ष की उम्र में उसे पहली सफलता मिली। और वह अपने संकल्प में अति दृढ़ हुई। टेनेसी स्टेट यूनिवर्सिटी गई, जहां वह एड टेम्पल नाम के कोच से मिली और मेहनत की। कहा जाता है ऑलम्पिक्स गेम में उनका दुनिया के सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ियों से मुकाबला हुआ, उसका मुकाबला जुत्ता ट्रेन से था, पहली दौड़ 100 मीटर की थी, दूसरी 200 मीटर की व तीसरी दौड़ 400 मीटर की रिले रेस थी। इसमें टीम का सबसे तेज एथलीट ही दौड़ता है। विल्मा ने सन् 1960 में तीसरा गोल्ड मैडल जीता व ऑलंपिक दुनिया में सबसे तेज धाविका बन गयी।

शिक्षा—संकल्प बहुत बड़ी चीज है कई बार ऐसा लगता है विश्व की समस्त शक्तियां तराजू के एक पलड़े पर रख दी जाएं और दूसरे पलड़े पर अकेला संकल्प रख दिया जाए तो संकल्प ही भारी होता है।

❑❑❑

42. संकल्प शक्ति

आपने कपिल वस्तु के महाराज शुद्धोधन के पुत्र सिद्धार्थ के बारे में सुना होगा—यथाजात दिगम्बर दीक्षा लेने के उपरांत उन्होंने खूब साधना की। कहते हैं उन्होंने कई निर्जल उपवास किये किन्तु जब उन्हें सिद्धी की प्राप्ति नहीं हुयी तो वे अपने मार्ग से च्युत होकर लौट कर आ रहे थे। वे एक झील के पास पहुंचे, पानी पीने के लिए ज्यों ही उन्होंने कदम बढ़ाये सामने देखते हैं एक गिलहरी बार-बार अपनी पूंछ को पानी में भिगोती है और बाहर आकर झाड़ती है। उसे देखकर के कुमार सिद्धार्थ के मन में विचार आया कि ये क्या खेल खेल रही है। उन्होंने गिलहरी से पूछा—तुम्हें यदि कोई ऐतराज न हो तो ये बताओ ये कौन-सा खेल है, वह गिलहरी उसे टेढ़ी निगाह से एक बार देखती है पुनः अपने काम में लग जाती है। बार-बार पूछा—तो बोली—इस झील ने मेरे बच्चों को खा लिया है। मैंने संकल्प लिया है कि मैं इस दरिया को सुखा कर ही रहूंगी। तब सिद्धार्थ ने कहा—क्या तुम्हें अपनी शक्ति का ख्याल भी है। उसने कहा—हां मुझे बहुत अच्छी तरह से ख्याल है, मैं वो सिद्धार्थ नहीं तो जो अपने संकल्प को तोड़ दे, मैं जीते जी इस कार्य को पूर्ण करके ही रहूंगी। इस बात को सुनकर के सिद्धार्थ को शिक्षा प्राप्त होती है और पुनः लौट जाते हैं। कहते हैं वे साधना में संलग्न हुए और उन्हें बोधि की प्राप्ति हुयी।

शिक्षा—अपने तय किये गए लक्ष्य की प्राप्ति संकल्प शक्ति के आधार से ही सम्भव है। अतः अपनी संकल्प शक्ति को जागृत करो।

❑❑❑

43. व्यक्तित्व की पहचान

एक अंधा पुरुष चतुष्पद पर बैठा हुआ था। संध्याकाल का समय था, सोच रहा था कोई भला पुरुष यहां पर आये जो मुझे रास्ता बता दे, मुझे अपनी झोंपड़ी की तरफ जाना है, रास्ते चार हैं, उसके मन में संदेह था कहीं मैं गलत रास्ते पर न चला जाऊं यह सोचकर वहां बैठा था। तभी थोड़ी देर में एक सैनिक वहां आया, उसने उस अंधे पुरुष को देखकर कहा—ओ बे अंधे यहां क्यों बैठा है? यहां से महाराज गये थे क्या? महामंत्री जी गये थे क्या? उसने कहा—नहीं यहां से अभी नहीं गये। और वह अंधा कुछ कहना चाहे तब तक सैनिक आगे बढ़ गया। थोड़ी देर बाद कोतवाल आया उसने भी उसी लहजे में और अधिक ऊंची आवाज में, कुछ गालियां देते हुए पूछा—क्यों? यहां से राजा या मंत्री आदि गये हैं। उसने कहा—नहीं, महाराज व मंत्री तो नहीं गये, हां! एक सैनिक निकल कर गया है। थोड़ी देर बाद महामंत्री आया उसने कहा सूरदास जी यहां से क्या राजा निकल कर गये हैं? नहीं, अभी आपका सैनिक व कोतवाल निकल कर गया है।

थोड़ी देर बाद राजा वहां से राजा निकलता है और पूछता है अहो! प्रज्ञाचक्षु महात्मन्! आप यहां जब से बैठे हैं, क्या आपने यहां से हमारे सैनिकों को जाते देखा है? उस अंधे ने कहा—महाराज को प्रणाम हो, महाराज अभी आपका सैनिक, कोतवाल व महामंत्री जी भी आपको खोजते-खोजते निकल गये और आप भी यहां आये बड़ी कृपा दृष्टि की। राजा ने पूछा—आप यहां क्यों बैठे हो? उसने कहा—राजन् मैं रास्ता पूछना चाहता था, राजा ने कहा आपकी झोपड़ी सामने ही है। क्या मैं आपको वहां छोड़ आऊं, बोला—बहुत-बहुत शुक्रिया अब मैं चला जाऊंगा।

राजा ने उस अंधे व्यक्ति से पूछा—कि एक बात तो बताओ तुमने हम सबको कैसे पहचाना? बोला—महाराज! अपराध क्षमा करें क्योंकि जो जैसा होता है उसका वैसा ही व्यवहार होता है। महाराज आपके शब्द ही स्वयं में कह रहे हैं कि आप स्वयं ही उच्च आदर्शवादी हैं, आपकी अपनी समस्या को पूछने के साथ-साथ मेरे यहां बैठने का कारण भी पूछा, झोंपड़ी तक छोड़ने का आग्रह भी किया। निःसंदेह महाराज व्यक्ति की वाणी व व्यवहार से मालूम चल जाता है कि कौन कैसा है? कौवा व कोयल भले ही दोनों का रंग एक होता है किन्तु दोनों की वाणी अलग-अलग होती हैं। इसी तरह सज्जन व दुर्जन में भेद वाणी से जाना जाता है।

शिक्षा—जब भी बोलें मीठा व अच्छा बोलें। गरीब हो या अमीर सबके साथ अच्छा व्यवहार करें।

❑❑❑

44. खोज पूरी हुई

एक बार द्रोणाचार्य ने अपने शिष्य युधिष्ठिर व सुयोधन (दुर्योधन) दोनों को बुलाकर कहा—आप निकटवर्ती गांवों में जाओ अपने कागज, कलम साथ में लेकर जाना इस गांव में जितने भी अच्छे व्यक्ति हैं उन सबके नाम लिखकर लाना है। सुयोधन यह सुन पहले तो आश्चर्यचकित हुआ किन्तु गुरु का आदेश टालने का सामर्थ्य नहीं कर सका इसीलिए जी गुरुदेव कहकर नगर के अच्छे लोगों के नाम लिखने के लिए चला जाता है।

पुनः युधिष्ठिर को बुलाकर कहा तुम्हें भी जाना है और इस गांव में रहने वाले सभी बुरे व्यक्तियों की नाम की सूची बनाकर लाना। भ्रमण किया और संध्याकाल में लौटकर के आये, किन्तु दोनों के कागज खाली जैसे दिखायी दे रहे थे, गुरु ने सुयोधन से कहा—क्या आपने मेरे आदेश का पालन किया। वह बोला—जी गुरुदेव! क्या कहें मुझे इस ग्राम में कोई भी व्यक्ति अच्छा नहीं दिखाई दिया, इसलिए किसी का नाम तो लिखना ही था तो मैंने अपनी सूची में एक ही नाम लिखा है और वह नाम है सुयोधन। गुरु ने कहा अच्छे व्यक्तियों में मात्र एक ही नाम लिखा है।

द्रोणाचार्य ने युधिष्ठिर से भी पूछा—वत्स! क्या आपने अपना काम पूरा कर दिया। जी गुरुदेव! मैं सभी जगह गया, प्रायः कर सभी से मिला, गुरुदेव आपने बड़ा जटिल काम बताया था किन्तु मैंने पूरा करने का पूरा प्रयास किया और यह सूची बनाकर ले आया हूं। द्रोणाचार्य ने देखा कि युधिष्ठिर के हाथ में जो सूची थी उसमें केवल एक ही नाम लिखा था—युधिष्ठिर। द्रोणाचार्य ने पूछा मतलब? वे बोले—गुरुदेव इस नगर के आदमी बड़े ही भले हैं जहां भी गया वहां देखा कि क्या देवता तुल्य लोग हैं, उनका आदर-सम्मान प्रशंसनीय है, क्या उनकी भक्ति और कर्त्तव्य निष्ठता है, गुरुदेव वास्तव में वे आदर्श व्यक्ति हैं। गुरुदेव! मुझे लगा इनके सामने मैं तो कुछ भी नहीं हूं, इसीलिए इस गांव में यदि कोई बुरा व्यक्ति है तो मैं हो सकता हूं क्योंकि मैं बुरा व्यक्ति खोजने के लिए चला था इसलिए मैंने अपना नाम लिख दिया।

शिक्षा—हम जैसी सोच रखते हैं, वैसी ही हमारी दृष्टि हो जाती है। दूसरों को अपराधी मत मानो हो सकता है उससे ज्यादा हम स्वयं अपराधी हों।

□□□

45. टूटी घड़ी

एक सेठ जी थे, उनके घर में एक नौकर था वह बहुत साल से उनकी सेवा कर रहा था। वह बहुत वफादार था। एक दिन उस नौकर के हाथ से सेठ जी की प्रिय घड़ी गिरकर के टूट गयी। नौकर को बहुत दुःख हुआ और शाम को जैसे ही सेठ जी घर आये तो उसने हाथ जोड़कर क्षमा मांग ली। सेठ जी ने कहा—अरे ये घड़ी तो मैं विदेश से लेकर के आया था, मुझे बहुत ज्यादा प्रिय थी। सेठ जी क्या करते उसे डांटा और क्षमा कर दिया। वह नौकर अपने स्थान पर चला गया, सेठ जी अपने कक्ष में सोचते रहे—अरे! मेरी इतनी सुंदर व महंगी घड़ी थी, विदेशी घड़ी थी और उसी में खो गये। थोड़ी देर बाद देखते हैं कि वह नौकर सेठ के पास ही सो रहा था और उसके खर्राटे की आवाज आती है। सेठ जी घड़ी के टूट जाने से सो नहीं पा रहे हैं किन्तु वह सेवक जिससे घड़ी टूटी थी वह खर्राटे भरकर आराम से सो रहा था।

प्रातःकाल हुआ सेठ जी ने सोचा मैं तो रात भर घड़ी के विकल्प में सो नहीं पाया, अब क्या करना चाहिए। संध्याकाल में सेठ जी ने नौकर को बुलाया कहा—सेवक एक बात है। वह कहने लगा—कहिये मालिक क्या बात है। वे बोले—बात यह है कि तू मेरा बड़ा प्यारा नौकर है तूने इतने सालों से मेरी बड़ी वफादारी से सेवा की है, मैं तुझसे बहुत संतुष्ट हुआ हूं, कल मैं सोच रहा था कि मैं तुझे कोई बहुत अच्छी ईनाम दूं। जो मेरी सर्वप्रिय वस्तु थी वह घड़ी मैं तुझे ईनाम में देने वाला था, मेरी निशानी तेरे पास रहती किन्तु वह घड़ी अब टूट गयी, टूटी घड़ी को मैं क्या ईनाम में दूं, अब सोचता हूं कोई और वस्तु तुझे देने के लिए देखूंगा। संध्याकाल पूर्ण हुआ वह सेठ तो इतना कहकर अपने कमरे में गये और यह सोचकर कि घड़ी का क्या विकल्प करना मानो मैंने वह घड़ी नौकर को दे ही दी, अब टूट गयी है तो फेंक दी जाएगी और चुपचाप सो गये। अब नौकर तो रात भर करवट बदलता रहा। अरे! वह घड़ी नहीं टूटती तो मुझे मिल जाती। क्योंकि कल वह मालिक की घड़ी को मालिक की समझ रहा था इसलिए खुर्राटे मारकर सो रहा था, आज मालिक घड़ी नौकर की समझकर खुर्राटे मारकर सो रहा है।

शिक्षा—वस्तु में अपनापन मानना ही दुःख व तनाव का कारण है।

❑❑❑

46. चातक पक्षी

एक चातक पक्षी प्यास से व्याकुल होकर अपनी मां से कहता है—मां मेरा कंठ सूख रहा है, प्राण कंठ में आ गये, मैं पानी पीना चाहता हूं। उसकी मां उसको समझाती है बेटा! हम चातक हैं हम सरोवर का पानी नहीं पीएंगे हम कोई राजहंस नहीं जो मान सरोवर का पानी पी लें, हम कोई मछलियां नहीं जो झील और नदी का पानी पीते हैं, हम चातक पक्षी हैं हम तो बरसात का पानी पीते हैं, स्वाति नक्षत्र का पानी पीएंगे जिस स्वाती नक्षत्र की बूंद सीप में आ जाए तो मोती बन जाती है। वह स्वाती नक्षत्र में बरसा पानी ही हमारी तृषा को संतृप्त करने में समर्थ होता है, हम अन्य पानी नहीं पी सकते हैं। वह बोला—मां मैं इतनी इंतजारी नहीं कर सकता। मां ने कहा ठीक है—जैसा तेरा मन करे और वह चातक पक्षी उड़कर मान सरोवर की ओर जाता है, कहता है मैं किसी छोटे-मोटे गड्ढे का पानी नहीं पीऊंगा।

वह चातक पक्षी चलते-चलते थक गया और एक वृक्ष की शाखा पर बैठ गया। दोपहर का समय था उस समय उसी वृक्ष के नीचे एक वृद्ध किसान भी बैठा हुआ था व साथ में उसका बेटा भी था। बेटे ने अपने पिता से पूछा—पिताजी आप इतनी देरी से क्यों आये, उसने कहा—बेटा मार्ग में मुझे एक रुपयों की थैली मिली थी, उसमें सोने के सिक्के भरे थे। उसे लेकर उन रुपयों के मालिक तक पहुंचाने के लिए पता लगा रहा था, इसलिए मुझे आने में विलम्ब हो गया। वह बोला—पिताजी आप उन सिक्कों की थैली को यहां लेकर आ जाते, क्यों व्यर्थ में परिश्रम करते रहे। किसान बोला—नहीं बेटा हमारे कुल की यह मर्यादा है कि हम ईमानदारी से प्राप्त धन का ही उपभोग करते हैं, जो हमारे भाग्य का नहीं उसका नहीं। देखो! चातक पक्षी को, जो बरसात का साफ पानी पीते हैं, अन्य किसी गड्ढे, नदी का पानी नहीं पीते। जब पक्षी अपनी कुल मर्यादा नहीं तोड़ते तब हम मनुष्य होकर कैसे तोड़ सकते हैं।

शिक्षा—हमें अपनी संस्कृति, संस्कार व सभ्यता की सुरक्षा करनी चाहिए।

□□□

47. साधु की मर्यादा

एक बहुरूपिया राजा के पास आया और आकर के कहने लगा—महाराज! मैं बहुत अच्छे-अच्छे स्वांग रचता हूं। इतने अच्छे स्वांग रचता हूं कि कोई मुझे पहचान नहीं सकता कि असली रूप में क्या था। राजा ने कहा—हम तुम्हारी बातों पर ऐसे विश्वास नहीं कर सकते—वह कहता है यदि आप नहीं मानते तो मैं स्वांग रचता हूं, किन्तु एक बात है कि आपको यदि मेरा स्वांग अच्छा लगा तो मैं 5 रु. से कम नहीं लूंगा। राजा भी इस बात के लिए राजी हो गया, वह बहुरूपिया वहां से चला जाता है और नगर के बाहर किसी शांत स्थान पर जाकर बैठ जाता है, अपने परिणामों को शांत करता है, अपने चेहरे पर शांति लाता है और रोम-रोम से शांत मुद्रा को धारण करता है। वह भद्र परिणामी केसरिया वस्त्रों को पहनकर नगर के बाहर पर्वत की चोटी पर बैठ जाता है, उसे देखकर लोगों को लगा कि ये तो कोई बहुत बड़े संत महात्मा हैं और सभी उसको प्रणाम करने लगे, अनेक चढ़ावा चढ़ाने लगे किन्तु वह संत आंख बंद करके बैठा रहा। वहां नगर के सेठ, जौहरी, बड़े-बड़े लोग आकर भी उसे अपना मस्तक झुकाते किन्तु उसने किसी के सामने अपनी आंखें नहीं खोली। पुनः राजा के महामंत्री को पता चला तो वह रत्नों को थाल लेकर भेंट चढ़ाने के लिए आया कहने लगा—हे महात्मन्! आपकी कृपा दृष्टि हम पर भी कीजिए इन्हें स्वीकार कीजिए किन्तु महात्मा ने फिर भी अपनी आंखें नहीं खोली और अपने ध्यान में मग्न रहे। यह समाचार राजा के कानों तक भी पहुंचा कि हमारे नगर में बहुत बड़े तपस्वी महात्मा आये हैं, पूरा नगर उनके दर्शनार्थ पहुंचा है। राजा भी स्वयं को रोक न सका और उन महात्मा के चरणों में पहुंचा और कहता है—महात्मन् मुझ पर कृपा दृष्टि कीजिए, आशीर्वाद दीजिए, आपको मैं अपना आधा राज्य भेंट में चढ़ाता हूं, उसे आप स्वीकारिये, मैं आपसे बहुत प्रभावित हूं, आप कृपया अपनी आंखें खोलिए और मुझे आशीर्वाद दीजिए, किन्तु संत महात्मा ने अपनी आंखें नहीं खोली।

राजा मंत्री नगर के सभी जन लौटकर घर आ गये। रात्रि भी हो गयी पुनः प्रातःकाल तक भी महात्मा ज्यों की त्यों बैठे रहे। तीन दिन बाद वे महात्मा जी वहां से विहार करके चले गये, अदृश्य हो गये, अन्तर्ध्यान हो गये किसी को दिखाई नहीं दिये, किन्तु 3 दिन के बाद बहुरूपिया पुनः राजा के दरबार

में पहुंचा कहता है--महाराज मुझे मेरा 5 रु. का पुरुस्कार दीजिए। राजा ने कहा—तुमने कोई स्वांग तो दिखाया ही नहीं कैसा पुरस्कार? वह बोला महाराज मैंने स्वांग तो दिखाया था। वह स्वांग आपने भी देखा, मंत्री-पुरोहित व सभी नगरवासियों ने भी देखा! कौन सा स्वांग दिखाया तुमने, तुमने क्या रूप बनाया था? वह बोला महाराज क्षमा करें मैंने एक साधु का रूप बनाया था। मैं साधु का स्वांग कर रहा था। कब? जब उस पहाड़ पर मैं तपस्या रत था तब।

राजा ने कहा—जब उस समय लोग तुम्हारे सामने रत्नों के थाल चढ़ा रहे थे, हमने आपको आधा राज्य भी दिया तब आपने उसे स्वीकार क्यों नहीं किया। तब आपने अपने नेत्र क्यों नहीं खोले? महाराज! उस समय मैं साधु था। साधु रहते समय साधु की मर्यादा का उल्लंघन कैसे कर सकता था, साधु तो किसी से कुछ ग्रहण करता ही नहीं है। वह तो देना जानता है लेना नहीं जानता, वह मुट्ठी भर लेता है और दरियाभर लौटाता है। उसे भौतिक सम्पत्ति माया से क्या लेना देना इसीलिए मैंने तब अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया वहां पर वही मेरी मर्यादा थी। अब यहां पर मेरी मर्यादा है कि मैं पुरुस्कार के रूप में आप से 5 रु. प्राप्त करूं और आप भी अपनी मर्यादा का पालन करते हुए मुझे पुरुस्कार दीजिए। राजा ने उसे पुरुस्कार में 5 रु. भी दिये साथ ही और भी बड़ा पुरुस्कार दिया।

शिक्षा—हर व्यक्ति को अपने पद के अनुसार ही कर्त्तव्यों को निभाना चाहिए एवं अपने अधिकारों का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए।

□□□

48. संतोष का धन

पंडित जी शहर के बाहर अपनी पत्नी के साथ रहते थे। एक दिन वो अपने विद्यार्थियों को पढ़ाने के लिए जा रहे थे तो उनकी पत्नी ने उनसे सवाल किया "कि आज घर में चावल कैसे बनेगा क्योंकि घर में केवल मात्र एक मुट्ठी चावल ही है?" पण्डित जी ने पत्नी की ओर एक नजर से देखा फिर बिना किसी जवाब के वो घर से चल दिए।

शाम को वो जब वापस लोटकर आए तो भोजन के समय थाली में कुछ उबले हुए चावल और पत्तियां देखीं। यह देखकर उन्होंने अपनी पत्नी से कहा—"भद्रे ये स्वादिष्ट शाक जो है वो किस चीज से बना है?" मैंने जब आपसे जाते समय भोजन के विषय में पूछा था तो आपकी दृष्टि इमली के पेड़ की तरफ गई थी। मैंने उसी के पत्तों से यह शाक बनाया है। पण्डित जी ने बड़ी निश्चिंतता के साथ कहा कि अगर इमली के पत्तों का शाक इतना स्वादिष्ट होता है फिर तो हमें चिंता करने की कोई आवश्यकता ही नहीं है अब तो हमें भोजन की कोई चिंता नहीं रही।

जब नगर के राजा को पण्डितजी की गरीबी का पता चला तो राजा ने पण्डित जी को नगर में रहने का प्रस्ताव दिया किन्तु पण्डित जी ने मना कर दिया। राजा हैरान हो गया और स्वयं राजा उनकी कुटिया में उनसे मिलने गया तो राजा ने काफी देर इधर-उधर की बातें की लेकिन वो असमंजस में था कि अपनी बात किस तरह से पूंछे लेकिन फिर उसने हिम्मत कर पण्डित जी से पूंछ ही लिया कि आपको किसी चीज का अभाव तो नहीं है न?

पण्डित जी हंसकर बोले यह तो मेरी पत्नी ही जाने, इस पर राजा पत्नी की ओर सम्मुख हुए और उनसे वही सवाल किया पण्डित जी की पत्नी ने जवाब दिया कि अभी मुझे किसी भी तरीके का अभाव नहीं है क्योंकि मेरे पहनने का वस्त्र इतने नहीं फटे कि वो पहने नहीं जा सकते हैं और पानी का मटका भी तनिक नहीं फूटा कि उसमें पानी नहीं आ सकें और इसके बाद मेरे हाथों में जब तक चूड़ियां हैं तब तक मुझे किसी चीज का क्या अभाव हो सकता है? और फिर सीमित साधनों में भी संतोष की अनुभूति हो तो जीवन आनंदमय हो जाता है।

शिक्षा—जितनी चाहत होती हैं या बढ़ती जाती हैं उतना ही असंतोष व दुःख भी बढ़ता जाता है।

□□□

49. काबिलियत की कसौटी

किसी जंगल में एक बहुत बड़ा तालाब था। तालाब के पास हरी घास का मैदान था जिसमें अनेक प्रकार के फूलों के पौधे थे। दूर-दूर से लोग वहां आते और उस मैदान की तारीफ करते। उस मैदान के गुलाब के पौधे पर एक पत्ता भी था जब लोग हरी घास और फूलों की तारीफ करते तो वह खुद को काफी कमजोर महसूस करता।

उस समय वह सोचता मेरी ओर कोई नहीं देखता। मेरे जीवन का कोई महत्त्व नहीं है क्योंकि मैं किसी के काम भी नहीं आ सकता हूं। मैं हरी घास या इन फूलों जैसा सुंदर भी नहीं हूं। इसलिए कोई मेरी तारीफ भी नहीं करता, शायद यही वजह है कि कोई मेरी ओर नहीं देखता है। आखिर इतने फूलों और हरी घास के बीच मुझे मामूली से पत्ते का क्या काम? पत्ते को अपनी जिंदगी पर काफी अफसोस था अब वह काफी उदास रहने लगा।

एक दिन बड़े जोर से हवा चली इस दौरान हरी घांस झूमने लगी, फूल अपनी शाखाओं से अलग होकर नीचे गिरने लगे, पत्ता भी इस झोंके का सामना नहीं कर सका और तालाब में गिर गया। तालाब में एक चींटी अपनी जिंदगी बचाने के लिए पानी की लहरों के बीच संघर्ष कर रही थी। वह काफी थक चुकी थी और यह मान चुकी थी कि उसका डूबना अब तय है। तभी वह पत्ता चींटी के पास आया और बोला—आओ मैं तुम्हारी मदद कर देता हूं।

चींटी ने पत्ते की मदद स्वीकार कर ली। थोड़ी देर बाद वह किनारे तक आ गई तो पत्ते से बोली—तुम्हारा बहुत-बहुत धन्यवाद क्योंकि आज तुमने मेरी जान बचाई। तब पत्ते ने कहा—धन्यवाद तो मैं तुम्हें देता हूं क्योंकि आज पहली बार मेरा सामना मेरी काबिलियत से हुआ जिससे मैं अंजान था।

शिक्षा—किसी एक काम में असफल होने का मतलब हमेशा के लिए कमजोर या अयोग्य होना नहीं है। खुद की काबिलियत को पहचान कर हम वह काम कर सकते हैं जो हमने कभी नहीं किया। ईश्वर ने हम सभी को भिन्न-भिन्न काबिलियत दी है, हर एक चीज का अपना एक महत्त्व होता है इसलिए कभी अपने होने पर ग्लानि महसूस नहीं करनी चाहिए।

□□□

50. मैले कपड़े

एक शहर के पास ही एक गांव था। उस गांव में एक विद्वान संत रहते थे। एक दिन संत अपने एक अनुयायी के साथ सुबह की सैर कर रहे थे। अचानक ही एक व्यक्ति उनके निकट आया और उन्हें भला बुरा कहने लगा। उसने संत के लिए बहुत सारे अपशब्द कहे लेकिन संत फिर भी मुस्कुराते हुए चलते रहे। उस व्यक्ति ने देखा संत पर कोई असर नहीं हुआ तो वह व्यक्ति और भी क्रोधित हो गया और उनके पूर्वजों तक को गालियां देने लगा।

संत फिर भी मुस्कुराते हुए आगे बढ़ते रहे और संत पर कोई असर नहीं होते देख वो व्यक्ति निराश हो गया और उनके रास्ते से हट गया। उस व्यक्ति के जाते ही संत के अनुयायी ने संत से पूछा कि आपने उस दुष्ट की बातों का कोई जवाब क्यों नहीं दिया, वो बोलता रहा और आप मुस्कुराते रहे। क्या आपको उसकी बातों से जरा भी कष्ट नहीं हुआ।

संत कुछ नहीं बोले और अपने अनुयायी को अपने पीछे आने का इशारा कर दिया। कुछ देर चलने के बाद वे दोनों कक्ष तक पहुंच गए। वहां पहुंचकर संत बोले तुम यही रुको मैं अंदर से अभी आया। कुछ देर बाद संत अपने कमरे से निकले तो उनके हाथों में कुछ मैले कपड़े थे। उन्होंने बाहर आकर उस अनुयायी से कहा—ये लो तुम अपने कपड़े उतारकर ये मैले कपड़े पहन लो इस पर उस व्यक्ति ने देखा कि उन कपड़ों में से बड़ी तेज अजीब सी दुर्गंध आ रही है। इस प्रकार उसने हाथ में लेते ही उन कपड़ों को दूर फेंक दिया।

संत बोले अब समझे जिस तरह तुम अपने साफ सुथरे कपड़ों की जगह ये मैले कपड़े धारण नहीं कर सकते उसी तरह मैं भी उस आदमी के फेंके हुए अपशब्दों को कैसे धारण करता। यही वजह थी कि मुझे उसकी बातों का कोई फर्क नहीं हुआ।

शिक्षा—हमें भी बुरी बातों को अनसुना और बुरे दृश्यों को अनदेखा करना चाहिए, यही सुख का मार्ग है।

□□□

51. सफलता का रहस्य

एक बार एक नौजवान लड़के ने सुकरात से पूछा—कि सफलता का क्या रहस्य है?

सुकरात ने उस लड़के से कहा कि तुम मुझे कल नदी किनारे मिलो, वो मिले। फिर सुकरात ने नौजवान से उनके साथ नदी की तरफ बढ़ने को कहा और जब आगे बढ़ते हुए पानी गले तक पहुंच गया, तभी अचानक सुकरात ने उस लड़के का सर पकड़कर के पानी में डुबो दिया।

लड़का बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगा, लेकिन सुकरात ताकतवर थे और उसे वे तब तक डुबोये रखे जब तक कि वह नीला नहीं पड़ने लगा। फिर सुकरात ने उसका सिर पानी से बाहर निकाल दिया। और बाहर निकलते ही जो चीज उस लड़के ने सबसे पहले की वो थी—हांफते-हांफते तेजी से सांस लेना।

सुकरात ने पूछा—"जब तुम वहां थे तब तुम सबसे ज्यादा क्या चाहते थे?"

लड़के ने उत्तर दिया—"सांस लेना।"

सुकरात ने कहा—"यही सफलता का रहस्य है। जब तुम सफलता को उतनी ही पूरी तरह से चाहोगे जितना कि तुम सांस लेना चाहते थे तो वो तुम्हें मिल जाएगी। इसके अलावा और कोई रहस्य नहीं है।"

शिक्षा—हम जो भी कार्य करें वो पूरी लगन से करें एवं उस कार्य को पूर्ण करने में पूरा समय भी दें।

❑❑❑

52. बाज और मैना

एक बार पंछियों के राजा समझे जाने वाले बाज को एक मैना से प्यार हो गया। और वो मैना से शादी की बातें करने उसके पिता के पास पहुंचा। मैना का पिता पूरे दिल से शादी के खिलाफ था पर वो बाज के नुकीले चोंच और पंजे से डरता था। उसने एक उपाय सोचा और बाज को अपने पास बुलाकर उससे पूछा कि तुम मेरी बेटी से प्यार क्यों करते हो? बाज ने जवाब दिया कि उसकी सुरीली आवाज का मैं दीवाना बन गया हूं। इस पर मैना के पिता ने कहा कि तुम मेरी बेटी से शादी करने के लिए क्या कर सकते हो? इस पर बाज ने कहा—कुछ भी!

तब मैना के पिता ने बाज से कहा कि तुम अपनी नुकीली चोंच और पंजे दे सकते हो तो मैं अपनी बेटी से तुम्हारी शादी करवा दूंगा, क्योंकि मेरी बेटी तुम्हारे पंजों और चोंच से डरती है। चूंकि बाज मैना से बहुत प्यार करता था, वो तुरंत ही राजी हो गया।

जैसे ही बाज ने अपने पंजे और चोंच दिए वैसे ही मैना के पिता का उससे डर खत्म हो गया और उसे खदेड़ कर दूसरे जंगल में भगा दिया।

शिक्षा—बुद्धि से बलशाली को भी जीता जा सकता है।

□□□

53. संघर्ष

जीव विज्ञान के एक अध्यापक अपने छात्रों को पढ़ा रहे थे कि सूंडी तितली में कैसे बदल जाती है। उन्होंने छात्रों को बताया कि कुछ ही घण्टों में तितली अपनी खोल से बाहर निकलने की कोशिश करेगी। उन्होंने छात्रों को आगाह किया कि वे खोल से बाहर निकलने में तितली की मदद न करें। इतना कह कर वे कक्ष से बाहर चले गये।

छात्र इंतजार करते रहे। तितली खोल से बाहर निकलने के लिए संघर्ष करने लगी। छात्र को उस पर दया आ गई और अध्यापक की सलाह न मानकर उसने खोल से बाहर निकलने की कोशिश कर रही तितली की मदद करने का फैसला किया। उसने खोल को तोड़ दिया, जिसकी वजह से तितली को बाहर निकलने के लिए मेहनत नहीं करनी पड़ी, लेकिन थोड़ी ही देर में वह मर गई।

वापस लौटने पर शिक्षक को सारी घटना मालूम हुई। उन्होंने बताया कि खोल से बाहर निकल के आने के लिए तितली को जो संघर्ष करना पड़ता है, उसी की वजह से उसके पंखों को मजबूती और शक्ति मिलती है। यही प्रकृति का नियम है। तितली की मदद करके छात्र ने उसे संघर्ष करने का मौका नहीं दिया। नतीजा यह हुआ कि वह मर गई।

शिक्षा—हमें भी जिंदगी में कोई भी चीज बिना संघर्ष किए प्राप्त नहीं हो सकती। आज कल के मां-बाप स्नेह की वजह से बच्चों को संघर्ष करने का मौका नहीं देते जिसके कारण वह जिन्हें सबसे अधिक चाहते हैं उन्हीं को नुकसान पहुंचा बैठते हैं।

□□□

54. सबसे कीमती चीज

एक बार एक स्पीकर ने हाथ में पांच सौ का नोट लहराते हुए अपना सेमीनार शुरू किया। हॉल में बैठे सैकड़ों लोगों से उसने पूछा—"ये पांच सौ का नोट कौन लेना चाहता है?" हाथ उठना शुरू हो गए।

फिर उसने कहा—"मैं इस नोट को आपमें से किसी एक को दूंगा पर उससे पहले मुझे एक काम करना है।" और फिर उसने नोट को अपनी मुट्ठी में मोड़ना शुरू कर दिया और फिर उसने पूछा—"कौन है जो अब भी यह नोट लेना चाहते हैं?" अभी भी लोगों के हाथ उठना शुरू हो गए। उसने फिर नोट को नीचे गिराकर पैरों से कुचलना शुरू कर दिया। उसने नोट उठाया, वह बिल्कुल खराब और गंदा हो गया था।

उसने फिर पूछा—"क्या अब भी कोई इसे लेना चाहता है?" और एक बार फिर से हाथ उठना शुरू हो गए।

इस पर उसने कहा कि इससे एक बहुत महत्त्वपूर्ण सीख मिलती है वो ये है कि मैंने इस नोट के साथ इतना कुछ किया पर फिर भी आप इसे लेना चाहते हैं क्योंकि नोट के गंदे होने के बावजूद भी नोट की कीमत घटी नहीं, उसका मूल्य अभी भी 500 ही था।

शिक्षा—ऐसे ही हम भी जीवन में कई बार गिरते हैं, हारते हैं हमारे लिए कुछ निर्णय कई बार हमें बहुत हानि भी पहुंचाते हैं, तब हमें ऐसा लगता है कि हमारी कोई कीमत नहीं है और अपने भूतकाल और भविष्यकाल में जीते रहते हैं। पर इसका अर्थ यह नहीं कि हमारा मूल्य कम हो जाता है वह कभी कम नहीं होता। बस इसी बात को हमें कभी भूलना नहीं चाहिए।

□□□

55. एक रुपया

एक महात्मा भ्रमण करते हुए किसी नगर से होकर जा रहे थे। मार्ग में उन्हें एक रुपया मिला। महात्मा तो वैरागी और संतोष से भरे व्यक्ति थे भला एक रुपये का क्या करते इसलिए उन्होंने यह रूपया किसी दरिद्र को देने का विचार किया। कई दिन की तलाश के बाद भी उन्हें कोई दरिद्र व्यक्ति नहीं मिला।

एक दिन वो अपने दैनिक क्रियाकर्म के लिए सुबह-सुबह उठते हैं तो देखते हैं एक राजा अपनी सेना को लेकर दूसरे राज्य पर आक्रमण के लिए उनके आश्रम के सामने से सेना सहित जा रहा है। ऋषि बाहर आए तो उन्हें देखकर राजा ने अपनी सेना को रुकने का आदेश दिया और खुद आशीर्वाद के लिए ऋषि के पास आकर बोले—महात्मन् मैं दूसरे राज्यों को जीतने के लिए जा रहा हूं ताकि मेरा राज्य विस्तार हो सके। इसलिए मुझे विजयी होने का आशीर्वाद प्रदान करें।

इस पर ऋषि ने काफी देर सोचा और सोचने के बाद वो एक रुपया राजा की हथेली में रख दिया। यह देखकर राजा हैरान और नाराज दोनों हुआ लेकिन उसके पीछे का प्रयोजन काफी देर तक सोचने के बाद भी समझ नहीं आया। राजा ने महात्मा से इसका कारण पूछा तो महात्मा ने राजा को सहज भाव से जवाब दिया कि राजन् कई दिनों पहले मुझे ये एक रुपया आश्रम आते समय मार्ग में मिला था तो मुझे लगा कि किसी दरिद्र को इसे दे देना चाहिए क्योंकि किसी वैरागी के पास इसके होने का कोई औचित्य नहीं है। बहुत खोजने के बाद भी मुझे दरिद्र व्यक्ति नहीं मिला। लेकिन आज तुम्हें देखकर ये ख्याल आया कि तुमसे दरिद्र तो कोई है ही नहीं। इस राज्य में जो सब कुछ होने के बाद भी किसी दूसरे बड़े राज्य के लिए भी लालसा रखता है। यही कारण है कि मैंने तुम्हें ये एक रुपया दिया है।

राजा को अपनी गलती का अहसास हुआ और उसने युद्ध का विचार भी त्याग दिया।

शिक्षा—जो मिला है उसे सम्भालो और दूसरों को मिली वस्तु को अपनाने का भाव मत रखो।

□□□

56. बुद्धिमानों से भी बुद्धिमान

एक दिन बादशाह ने बीरबल से कहा—बीरबल कोई एक ऐसा आदमी ढूंढकर लाओ जो बुद्धिमानों से भी ज्यादा बुद्धिमान हो। जैसा हुक्म जहापनाह! पर इसके लिए समय और धन की जरूरत पड़ेगी। 500 स्वर्ण मोहरे ले लो और तुम्हें एक सप्ताह का समय दिया जाता है।

बीरबल समय और धन पाकर अपने घर पर आराम करने लगे। आधे से ज्यादा धन तो उन्होंने दीन-दुःखियों की सहायता में लगा दिया। सातवें दिन इधर-उधर घूमकर आया—भैंस चराते हुए एक ग्वाले को पकड़ा उसे नहला-धुलाकर अच्छे वस्त्र पहनाये। फिर सौ स्वर्ण मुद्राएं देकर अच्छी तरह सिखा पढ़ा दिया कि राजदरबार में उसे क्या करना है।

दरबार में पहुंचकर ग्वाले ने निःशब्द हाथ जोड़कर बादशाह को प्रणाम किया, उसके बाद बीरबल ने बादशाह से कहा आपके आदेशानुसार में बुद्धिमानों से भी बुद्धिमान व्यक्ति ले आया हूं।

बादशाह ने ग्वाले से पूछा—तुम कहां रहते हो? तुम्हारा नाम क्या है? तुम कौन सा विशेष कार्य जानते हो? बादशाह ने उससे प्रश्न पर प्रश्न किए परन्तु वह तो बीरबल द्वारा सिखा पढ़ाकर लाया गया था। अतः उसने कोई उत्तर नहीं दिया। बादशाह सवाल करते रहे और वह व्यक्ति खामोशी से बैठा उनका चेहरा देखता रहा। बादशाह को लगा कि यह उनका अपमान है कि मैं बोलता जा रहा हूं और यह व्यक्ति खामोश है। जब उसकी खामोशी उनसे और बर्दाश्त न हुई तो झल्लाकर वह बोले—यह तुम किस बेवकूफ को पकड़ लाए बीरबल? यह गूंगा बहरा तो नहीं है? मेरे किसी प्रश्न का उत्तर इसने नहीं दिया।

तब बीरबल ने मुस्कुराकर कहा यह इसकी बुद्धिमत्ता है अन्नदाता, राजा और अपने से बड़े या बुद्धिमान व्यक्ति के सामने चुप रहने पर ही भलाई है। इसलिए यह उन सुनी हुई बातों पर अमल कर रहा है। यह बुद्धिमानों से भी बुद्धिमान है। अकबर बीरबल का हाजिर जवाब सुनकर मुस्कुराये और ग्वाले को ईनाम देकर विदा किया।

शिक्षा—कभी-कभी मौन रहना भी अच्छा होता है। मूर्ख भी विद्वान कहलाने लगता है।

"मौनं सर्वार्थ साधनं"

□□□

57. सोच बदल देगी जिंदगी

एक छोटे से गांव में एक गरीब लड़का अपनी विधवा माँ के साथ रहता था। उसकी मां घर-घर जाकर बर्तन मांजकर और सिलाई करके घर का गुजारा करती थी, वह लड़का अक्सर चुपचाप ही बैठा रहता था। एक दिन उसके अध्यापक ने उसे एक पत्र देते हुए कहा—तुम इसे अपनी मां को दे देना। उसने घर आकर वह पत्र अपनी मां को दे दिया।

उसकी मां उस पत्र को पढ़कर मन-ही-मन मुस्कुराने लगी। बेटे ने अपनी मां से पूछा—मां इस पत्र में क्या लिखा है? मां ने मुस्कुराते हुए कहा—बेटा इसमें लिखा है कि आपका बेटा कक्षा में सबसे होशियार है। इसका दिमाग सभी बच्चों से भी तेज है। हमारे पास ऐसे अध्यापक नहीं हैं जो आपके बच्चे को पढ़ा सकें। इसलिए आप इसका दाखिला किसी और स्कूल में करवा दीजिए।

यह सुनकर वह लड़का खुश हो गया। और साथ ही उसका आत्म विश्वास बहुत ही बढ़ गया। वह मन-ही-मन सोचने लगा कि उसके पास कुछ खास है जिसके कारण वह इतना बुद्धिमान और तीव्र बुद्धि वाला है। अगले ही दिन उसकी मां ने उसका दाखिला दूसरे स्कूल में करवा दिया। उस लड़के ने मन लगाकर पढ़ाई की और एक दिन अपनी मेहनत के दम पर सिविल सर्विसेज का इम्तिहान पास कर लिया।

एक दिन अचानक ही उसकी मां मृत्यु हो गई। उस लड़के को अपनी मां से बहुत ही लगाव था। उसने अपनी मां की अलमारी खोली और उसके समान को देखने लगा तभी उसकी नजर उसी पत्र पर पड़ी जो उसकी अध्यापिका ने उसकी मां को देने के लिए कहा था। जब उसने पत्र पढ़ा तो उसके होश उड़ गये। इस पत्र में लिखा था आपको ये बताते हुए हमें बहुत दुःख हो रहा है कि आपका बेटा पढ़ाई लिखाई में बहुत ही कमजोर है। यह खेलकूद में भी अच्छा नहीं है। जिस तरह से इसकी उम्र बढ़ रही है उस तरह से इसकी बुद्धि का विकास नहीं हो पा रहा है। इसलिए हम इसे स्कूल से निकाल रहे हैं। आप दूसरे स्कूल में अथवा घर पर रहकर इसे पढ़ाइए।

शिक्षा—जिस प्रकार उस लड़के की मां ने अपने बेटे की सोच बदल दी ठीक उसी तरह हम भी अपनी सोच बदल सकते हैं। हम अपने बारे में क्या सोचते हैं ये हमारी जिंदगी में बहुत मायने रखता है। इसलिए हमेशा अच्छा सोचें क्योंकि सोच से ही जिंदगी बदलती है। □□□

58. बदलाव

एक लड़का सुबह-सुबह दौड़ने जाया करता था। आते-जाते वो एक बूढ़ी महिला को देखता था। वो बूढ़ी महिला तालाब के किनारे छोटे-छोटे कछुओं को साफ किया करती थी। एक दिन उसने इसके पीछे का कारण जानने की कोशिश की।

वह लड़का महिला के पास बैठ गया और उसका अभिनंदन कर बोला—"नमस्ते आंटी! मैं हमेशा आपको इन कछुओं की पीठ को साफ करते हुए देखता हूं, आप ऐसा किस वजह से करते हो?" महिला ने उस मासूम से लड़के को देखा और इस पर लड़के को जवाब दिया—"मैं हर रविवार को यहां आती हूं और इन छोटे-छोटे कछुओं की पीठ साफ करते हुए सुख-शांति का अनुभव कर लेती हूं। क्योंकि इनकी पीठ पर जो कवच होता है उस पर कचरा जमा हो जाने से इनकी गर्मी पैदा करने की क्षमता कम हो जाती है। इसलिए ये कछुए तैरने में मुश्किल का सामना करते हैं। कुछ समय तक ये ऐसा ही रहे तो ये कवच भी कमजोर हो जाते हैं इसलिए कवच को साफ करती हूं।"

यह सुनकर लड़का बड़ा हैरान था। उसने फिर एक जाना पहचाना-सा सवाल किया—"बेशक आप बहुत अच्छा काम कर रहे हो लेकिन जरा सोचिए इन जैसे कितने कछुएं हैं जो इनसे भी बुरी हालत में हैं, जबकि आप सभी के लिए ये सब नहीं कर सकते हो तो उनका क्या? आपके अकेले बदलने से कोई बड़ा बदलाव तो नहीं आएगा ना।"

महिला ने बड़ा ही संक्षिप्त लेकिन असरदार जवाब दिया कि भले ही मेरे इस कर्म से दुनिया में कोई बड़ा बदलाव नहीं आएगा लेकिन सोचो इस एक कछुएं की जिंदगी में तो बदलाव आएगा ना। तो क्यों न हम छोटे बदलाव से ही शुरूआत करें।

शिक्षा—हम सदैव स्वयं से शुरूआत करें तो धीरे-धीरे दूसरों को भी प्रभावित किया जा सकता है।

□□□

59. तीन साधु

एक औरत अपने घर से निकली, उसने घर के सामने सफेद लंबी दाढ़ी में तीन साधु-महात्माओं को बैठे देखा।

साधुओं ने कहा—"हमें भोजन करना है।" ठीक है! कृपया मेरे घर पर पधारिए और भोजन ग्रहण कीजिए। साधुओं ने अपने पति से पूछने को कहा।

उसने साधुओं के बारे में अपने पति को बताया तो उसने तुरंत उन्हें पुनः आमंत्रित करने के लिए कहा। औरत ने वही किया, वह साधुओं के समक्ष गई और बोली—"कृपया आप तीनों अंदर प्रवेश कीजिए।"

साधुओं ने स्त्री से कहा—हम किसी के घर में एक साथ प्रवेश नहीं करते।

उनमें से एक साधु बोले हममें से एक साधु का नाम 'धन', दूसरे का 'सफलता' और मेरा नाम 'प्रेम' है। अब जाओ अपने पति से विचार करके आओ कि तुम हम तीनों में से किसे बुलाना चाहती हो।

औरत ने अंदर जाकर अपने पति को सारी बात बता दी। पति बेहद खुश हुआ और बोला—"चलो, जल्दी से 'धन' को बुला लेते हैं। उसके आने से घर धन-दौलत से भर जाएगा, और फिर पैसे की कभी कमी नहीं होगी।" पर औरत बोली क्यों न हम 'सफलता' को बुला लें, उसके आने से हमारा सारा काम सही होगा और देखते-ही-देखते हम धन दौलत के मालिक भी हो जाएंगे।"

थोड़ी देर उनकी बहस चलती रही पर वे किसी एक निष्कर्ष पर नहीं पहुंच पाए। अंत में निश्चय किया कि वह साधुओं से ही कहेंगे कि धन और सफलता में से जो आना चाहे वह आ सकता है।

साधुओं ने एक दूसरे की तरफ देखा और बिना कुछ कहे जाने लगे। इस पर औरत ने कहा—"आप तीनों ऐसे वापिस क्यों जा रहे हैं?"

साधुओं ने जवाब दिया—"पुत्री हम तीनों इसी तरह द्वार-द्वार जाते हैं और घर में प्रवेश करने का प्रयास करते हैं, पर जो व्यक्ति लालच में धन या सफलता को बुलाने का प्रयास करता है, हम वहां से लौट जाते हैं और जो अपने घर में प्रेम का वास चाहता है उसके घर में हम दोनों भी बारी-बारी से प्रवेश कर जाते हैं।" ऐसा कहकर वे तीनों साधु वहां से चले गए।

शिक्षा—याद रखना कि जिनके घर में प्रेम है वहां धन और सफलता की कमी नहीं होती।

□□□

60. आम का पेड़ हमारे माता-पिता हैं

एक बच्चे को आम का पेड़ पसंद था। जब भी फुर्सत मिलती वो आम के पेड़ के पास पहुंच जाता। पेड़ के ऊपर चढ़ता, आम खाता, खेलता और थक जाने पर उसी की छाया में सो जाता। उस बच्चे और आम के पेड़ के बीच एक अनोखा रिश्ता बन गया।

बच्चा जैसे-जैसे बड़ा होता गया उसने पेड़ के पास आना कम कर दिया। कुछ समय बाद तो बिल्कुल ही बंद हो गया।

आम का पेड़ उस बालक को याद करके अकेला रोता।

एक दिन पेड़ ने उस बच्चे को अपनी तरफ आते हुए अचानक देखा और पास आने पर कहा—तू कहां चला गया था? मैं तुम्हें रोज याद किया करता था। चलो आज फिर से दोनों खेलते हैं।

बच्चों ने आम के पेड़ से कहा—"अब मेरे खेलने की उम्र नहीं है। मुझे पढ़ना है लेकिन मेरे पास फीस भरने के लिए पैसे नहीं है।"

पेड़ ने कहा—"तू मेरे आम लेकर बाजार में बेच दे, इससे जो पैसे मिले अपनी फीस भर देना।"

उस बच्चे ने आम के पेड़ से सारे आम तोड़ लिए और उन सब आमों को लेकर वहां से चला गया। उसके बाद फिर कभी दिखाई नहीं दिया। आम का पेड़ उसकी राह देखता रहता।

एक दिन वह फिर आया और कहने लगा—"अब मुझे नौकरी मिल गई, मेरी शादी हो चुकी है, मुझे मेरा अपना घर बनाना है, इसके लिए मेरे पास अब पैसे नहीं है।"

आम के पेड़ ने कहा—"तू मेरी अभी डाली को काट कर ले जा, उससे अपना घर बना ले।"

उस जवान ने पेड़ की सभी डाली काट ली और लेकर चला गया।

आम के पेड़ के पास अब कुछ नहीं था, वो अब बिल्कुल बंजर हो गया था। कोई उसे देखता भी नहीं था। पेड़ ने भी अब वह उसके पास फिर आएगा यह उम्मीद छोड़ दी थी।

फिर एक दिन अचानक वहां एक बूढ़ा आदमी आया। उसने आम के पेड़ से कहा—"शायद आपने मुझे पहचाना नहीं, मैं वही बालक हूं जो बार-बार

आपके पास आता और आप हमेशा अपने टुकड़े काटकर भी मेरी मदद करते थे।"

आम के पेड़ ने दुःख के साथ कहा—"पर बेटा मेरे पास अब ऐसा कुछ भी नहीं जो मैं तुझे दे सकूं।"

वृद्ध ने आंखों में आंसू लिए कहा—"आज मैं आपसे कुछ लेने नहीं आया हूं बल्कि आज तो मुझे आपके साथ जी भरकर खेलना है, आपकी गोद में सर रखकर सो जाता हूं।"

इतना कहकर वह आम के पेड़ से लिपट गया। आम के पेड़ की सूखी हुई डाली फिर से अंकुरित हो उठी। वो आम का पेड़ हमारे माता-पिता हैं। जब छोटे थे तो उनके साथ खेलना अच्छा लगता था। जैसे-जैसे बड़े होते चले गए उनसे दूर होते गए। पास भी तब आए जब कोई जरूरत पड़ी या कोई समस्या खड़ी हुई।

शिक्षा—आज कई मां-बाप उस बंजर पेड़ की तरह अपने बच्चों की राह देखकर जी रहे हैं। जाकर उनके भी गले लग जाना फिर देखना वृद्धावस्था में भी उनका जीवन फिर से अंकुरित हो उठेगा।

□□□

61. अपना अपना नजरिया

एक बार एक संत अपने शिष्यों के साथ नदी में स्नान कर रहे थे। तभी एक राहगीर वहां से गुजरा तो महात्मा को नदी में नहाते देखा वो उनसे कुछ पूछने के लिए रुक गया। वो संत से पूछने लगा—"महात्मन! एक बात बताइए कि यहां रहने वाले लोग कैसे हैं क्योंकि मैं इस जगह में नया आया हूं और इस जगह की कोई विशेष जानकारी नहीं है।"

इस पर महात्मा ने उस व्यक्ति से कहा—"भाई पहले तुम ये बताओ कि तुम जिस जगह से आए हो वहां के लोग कैसे हैं?" इस पर उस व्यक्ति ने कहा—"उनके बारे में क्या कहूं महाराज वहां तो एक से एक कपटी लोग रहते हैं इसलिए मैं उनको छोड़कर यहां बसेरा करने के लिए आया हूं।"

महात्मा ने जवाब दिया बंधू—"तुम्हें इस गांव में वैसे ही लोग मिलेंगे कपटी, दुष्ट और बुरे।" वह आदमी आगे बढ़ गया।

थोड़ी देर बाद एक और राहगीर उसी मार्ग से गुजरता है और महात्मा से प्रणाम करने के बाद वही जिज्ञासा पूछी जिसे पहले राहगीर ने पूछी थी।

महात्मा ने इस पर फिर वही प्रश्न पूछा और कहा—पहले तुम मुझे ये बताओ कि तुम पीछे से जिस देश से आए हो वहां के रहने वाले लोग कैसे हैं?

उस व्यक्ति ने महात्मा से कहा—गुरुजी जहां से मैं आया हूं वहां भी सभ्य सुलझे हुए और नेकदिल इंसान रहते हैं, मेरा वहां से कहीं और जाने का मन नहीं था लेकिन व्यापार के सिलसिले में मैं इस ओर आया हूं। महात्मा ने कहा—बंधू! तुम्हें यहां भी नेकदिल और भले इंसान मिलेंगे। वह राहगीर भी उन्हें प्रणाम कर आगे बढ़ गया।

शिष्य ये सब देख रहे थे उन्होंने उस राहगीर के जाते ही पूछा—गुरुजी ये क्या! आपने दोनों राहगीरों को अलग-अलग जवाब दिया हमें कुछ भी समझ नहीं आया। इस पर मुस्कुराकर महात्मा जी बोले—वत्स! आमतौर पर अपने आस-पास की चीजों को जैसा देखते हैं वैसी वो होती नहीं है इसलिए हम अपने अनुसार अपनी दृष्टि से चीजों को देखते हैं।

शिक्षा—अगर हम अच्छाई देखना चाहें तो अच्छे लोग मिल जाएंगे और अगर हम बुराई देखना चाहें तो हमें बुरे लोग भी मिल जाएंगे। सब देखने के नजरिये पर निर्भर करता है।

□□□

62. समय पर मिलेगा

एक बार शंकर जी से नंदी ने कहा—भगवन् आप एक जगह खड़े-खड़े थक गए होंगे। एक दिन के लिए आप छुट्टी ले लो और मेरा रूप लेकर घूम आओ। मैं मूर्ति बनकर आपकी जगह खड़ा रहूंगा। नंदी के ज्यादा जोर देने पर शंकर जी मान जाते हैं वो नंदी से कहते हैं जो भी लोग प्रार्थना करने आए तुम बस उनकी प्रार्थना सुन लेना लेकिन कुछ भी बोलना नहीं क्योंकि मैंने सभी लोगों के लिए एक योजना बनाई है। नंदी ने कहा—ठीक है मैं किसी से कुछ नहीं बोलूंगा।

शंकर जी नंदी का रूप लेकर घूमने चले गए। सबसे पहले मंदिर में एक व्यापारी आया। उसने कहा—भगवान मैंने आज से व्यापार शुरू किया है आप अपनी कृपा मेरे ऊपर बनाए रखना। तभी उस व्यापारी का पर्स नीचे गिर जाता है उसका ध्यान उस ओर नहीं जाता और वह बिना पर्स के ही मंदिर से चला जाता है। नंदी सोचता है कि उसे बता दूं लेकिन वह शिव जी की बात याद आने के कारण चुप हो जाता है।

थोड़ी देर बाद एक गरीब आदमी आता है। वह कहता है, हे भगवान मेरे घर में खाने के लिए कुछ नहीं है। मेरा परिवार भूख से मर रहा है। तभी उस गरीब की नजर वहां गिरे हुए पर्स पर पड़ी। वह भगवान का दिल से शुक्रिया अदा करता है और वहां से चला जाता है। थोड़ी देर बाद वहां एक नाविक आता है। वह कहता है भगवान में कुछ दिनों के लिए समुद्र यात्रा पर जा रहा हूं। आप हमेशा की तरह मुझ पर कृपा बनाए रखना और मेरी यात्रा को सफल बनाना।

तभी वहां पर व्यापारी पुलिस को लेकर आ जाता है। वह पुलिस को बताता है कि मेरा पर्स यहीं पर गिरा था। शायद इसी नाविक ने उठाया है। पुलिस नाविक को गिरफ्तार कर लेती है, तभी नंदी बोल पड़ता है कि पर्स इसने नहीं गरीब व्यक्ति ने उठाया है। नंदी के कहने पर पुलिस उस गरीब व्यक्ति को गिरफ्तार कर लेती है। रात को शंकर जी वापस आते हैं। नंदी खुशी-खुशी उन्हें सब बता देता है। शंकर जी कहते हैं कि तुमने मेरी योजना को बिगाड़ दिया है। वह व्यापारी बहुत अमीर था। अगर उसका पर्स गिर गया होता तो भी उसे कोई फर्क नहीं पड़ता। लेकिन उस गरीब व्यक्ति को पर्स मिलने से

उसका परिवार भूखा नहीं मरता। रही बात उस नाविक की वो जिस यात्रा में जाने वाला था वहां तूफान आने वाला है। अगर वह जेल जाता तों उसकी जान बच जाती। मैंने सब लोगों के लिए योजना बनाई थी। और तुमने सब खराब कर दिया।

शिक्षा–हमारी जिंदगी में जो कुछ भी होता है वो सब हमारी भलाई के लिए होता है इसलिए हमें उसे स्वीकार करके आगे बढ़ना चाहिए। भले ही जिंदगी में कुछ देर से मिले पर मिलता सही समय पर ही है।

❑❑❑

63. हाथी क्यों हारा

एक बार व्यक्ति एक हाथी को रस्सी से बांधकर ले जा रहा था। एक दूसरा व्यक्ति वह सब देख रहा था। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ कि इतना बड़ा विशालकाय जानवर इस हल्की-सी रस्सी से बंधा चला जा रहा है। दूसरे व्यक्ति ने हाथी के मालिक से पूछा—"कि इतना बड़ा जानवर एक हल्की-सी रस्सी को तोड़ नहीं पा रहा है और तुम्हारे पीछे-पीछे चल रहा है, कैसे?"

हाथी के मालिक ने बताया जब ये हाथी छोटे थे तो इन्हें रस्सी से बांध दिया जाता था। उस समय ये कोशिश करते हैं रस्सी तोड़ने की पर तोड़ नहीं पाते। बार-बार कोशिश करने पर भी वह उस रस्सी को तोड़ नहीं पाते तो हाथी सोच लेते हैं कि वह उस रस्सी को तोड़ नहीं सकते और बड़े होने पर कोशिश करना ही छोड़ देते हैं।

शिक्षा—हम भी ऐसी बहुत सी नकारात्मक बातें अपने दिमाग में बिठा लेते हैं कि हम नहीं कर सकते हैं और एक ऐसी ही रस्सी से अपने आपको बांध लेते हैं जो सच में होती ही नहीं है।

□□□

64. दर्जी की सीख

एक दिन स्कूल में छुट्टी की घोषणा होने के कारण, एक दर्जी का बेटा अपने पापा की दुकान पर चला गया। वहां जाकर वह बड़े ध्यान से अपने पापा को काम करते हुए देखने लगा। उसने देखा कि पापा कैंची से कपड़ों को काटते हैं और कैंची को पैर के पास टांग से दबाकर रख देते हैं। फिर सुई से उसको सीते और सीने के बाद सुई को अपनी टोपी में लगा लेते हैं।

जब उसने इसी क्रिया को चार-पांच बार देखा तो उससे रहा नहीं गया, तो उसने पापा से पूछा—पापा मैं बड़ी देर से आपको देख रहा हूं कि जब भी आप कपड़ा काटते हो उसके बाद कैंची को पैर के नीचे दबा देते हो, और सुई से कपड़ा सीने के बाद टोपी पर लगा लेते हैं, ऐसा क्यों? इसका जो उत्तर उसके पापा ने दो पंक्तियों में दिया जिसमें उसे दुनिया का सार समझ में आ गया।

पिता ने कहा—"बेटा, कैंची काटने का काम करती है और सुई जोड़ने का काम करती है, और काटने वाले की जगह हमेशा नीचे रहती है परन्तु जोड़ने वाले की जगह हमेशा ऊपर रहती है। यही कारण है कि मैं सुई को टोपी पर लगाता हूं और कैंची को पैर के नीचे रखता हूं।"

शिक्षा—तोड़ना आसान है और जोड़ना मुश्किल होता है। हमें सदा ही जोड़ने का महत्वपूर्ण कार्य करना चाहिए।

□□□

65. राजा की तीन सीखें

एक राजा के तीन पुत्र थे। एक दिन राजा ने पुत्रों को कुछ ऐसी शिक्षा देनी चाही जो समय आने पर वो राज-काज को सम्भाल सकें।

यह सोच राजा ने सभी पुत्रों को बुलाकर कहा—"पुत्रों, हमारे राज्य में नाशपाती का कोई वृक्ष नहीं है, कि तुम सब चार-चार महीने के अंतराल पर इस वृक्ष की तलाश में जाओ और पता लगाओ कि वह कैसा होता है? राजा की आज्ञा पाकर तीनों पुत्र बारी-बारी से गये और वापस लौट के आ गए।

पहला पुत्र बोला—"पिताजी वह पेड़ तो बिल्कुल टेढ़ा-मेढ़ा और सूखा हुआ था।"

"नहीं-नहीं वो तो बिल्कुल हरा-भरा था लेकिन शायद उसमें कुछ कमी थी क्योंकि उस पर एक भी फल नहीं लगा था।" दूसरे पुत्र ने पहले की बीच में रोकते हुए कहा।

फिर तीसरा बोला—"भैया, लगता है आप कोई गलत पेड़ देख आए क्योंकि मैनें सचमुच नाशपाती का पेड़ देखा, वो बहुत ही शानदार था और फूलों से लदा पड़ा था। और तीनों पुत्र अपनी-अपनी बातों को लेकर आपस में विवाद करने लगे। तभी राजन् सिंहासन से उठे और बोले पुत्रों तुम्हें विवाद करने की कोई जरूरत नहीं है। दरअसल तुम तीनों ही वृक्ष का सही-सही वर्णन कर रहे हो। मैंने जानबूझकर तुम्हें अलग-अलग मौसम में वृक्ष खोजने भेजा था और तुमने जो देखा वो उस मौसम के अनुसार था।

शिक्षा—पहली, चीज के विषय में पूर्ण और सही जानकारी चाहिए तो तुम्हें उसे लंबे समय तक देखना परखना होगा फिर चाहे वह कोई व्यक्ति, वस्तु या अन्य कोई विषय हो।

दूसरी, हर मौसम एक सा नहीं होता, जिस प्रकार वृक्ष मौसम अनुसार सूखता, हरा-भरा या फलों से लदा रहता है उसी प्रकार मनुष्य के जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं। अतः अगर तुम कभी भी बुरे दौर से गुजर रहे हो तो अपनी हिम्मत और धैर्य बनाए रखना, समय अवश्य बदलता है।

तीसरी, अपनी बात को सही मानकर उस पर अड़े मत रहो, दूसरों के विचारों को भी जानो। यह संसार ज्ञान से भरा हुआ है, चाह कर भी तुम सारा ज्ञान अकेले ग्रहण नहीं कर सकते हो इसलिए भ्रम की स्थिति में किसी ज्ञानी व्यक्ति से सलाह लेने से संकोच न करो।" □□□

66. तीन मूर्तियाँ

एक बुजुर्ग शिल्पी ने तीन मूर्तियां बनाई थीं, तीनों मूर्तियां देखने में एक जैसी थीं पर मूर्तियों की आंतरिक संरचना में फर्क था। शिल्पी इन मूर्तियों को लेकर बादशाह अकबर के दरबार में आया और बोला हुजूर यह तीनों मूर्तियां देखने में तो एक जैसी हैं, लेकिन इनमें से एक मूर्ति दो से श्रेष्ठ है।

अकबर ने बीरबल से कहा कि श्रेष्ठ मूर्ति की पहचान करें। बीरबल उठे और तीनों मूर्तियों को अपने हाथों में लिया उलट-पलट के बहुत देर तक देखते रहे, उन्हें मूर्तियों के कान और मुंह में बारीक छेद दिखाई दिए।

फिर बीरबल ने एक लंबा और पतला तार मंगाया उन्होंने एक मूर्ति के कान में तार डाला तो वह तार सीधा मूर्ति के पेट में उतर गया, बीरबल ने उस मूर्ति को उठाकर कहा—"तीनों में यह मूर्ति श्रेष्ठ है।"

शिल्पी ने कहा इसका कारण बताइए। बीरबल बोले—कल्पना करो मूर्ति राजा का मंत्री है और तार राजा की गुप्त बात, पहली मूर्ति के कान में डाला हुआ तार उसके मुंह से बाहर निकला इसका मतलब मंत्री राजा की कही गुप्त बात को कहीं भी कह सकता है और जो मंत्री राजा की गुप्त बात को सभी जगह बोल दे वह मंत्री विश्वास योग्य नहीं है।

दूसरी मूर्ति के कान में डाला गया तार दूसरे कान से बाहर निकल के आ गया। बात चाहे कितनी भी महत्त्वपूर्ण हो जो मंत्री उस पर ध्यान नहीं देता और उसे कान से सुनकर दूसरे कान से बाहर निकाल देता है वह भी योग्य नहीं है। ऐसा लापरवाह मंत्री राज्य के लिए खतरा भी खड़ा कर सकता है।

तीसरी मूर्ति के कान में डाला हुआ तार सीधे उसके पेट में उतर गया। जो मंत्री राज्य की गुप्त बात सुनकर उसे अपने पेट में रखता है, किसी से कहता नहीं वही श्रेष्ठ माना जाएगा। इसलिए यह मूर्ति श्रेष्ठ है। शिल्पी बीरबल का खुलासा सुनकर आश्चर्यचकित हो गया और उसने बीरबल को गले लगा लिया और तीनों मूर्तियां बीरबल को उपहार स्वरूप दे दी।

शिक्षा—दूसरे की गुप्त बात को अपने तक सीमित रखना चाहिए, वह विश्वास कर आपको अपनी बात कहता है।

❑❑❑

67. चिड़िया की परेशानी

एक चिड़िया थी, वह बहुत ऊंची उड़ती थी, इधर-उधर चहकती रहती। कभी किसी टहनी पर तो कभी किसी टहनी पर फुदकती रहती थी। पर उस चिड़िया की एक आदत थी कि जो भी उसके साथ अच्छा या बुरा होता उतने पत्थर अपने पास पोटली में रख लेती और अक्सर उन पत्थरों को पोटली से निकालकर देखती। अच्छे पत्थरों को देखकर बीते दिनों की अच्छी बातों की याद करके खुश हो लेती और खराब पत्थरों को देखकर दुःखी होती। ऐसा रोज करती। रोज पत्थर इकट्ठा करने से उसकी पोटली दिन प्रतिदिन भारी होती जा रही है। थोड़े दिन बाद उसे भारी पोटली के साथ उड़ने में दिक्कत होने लगी। पर उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह उड़ क्यों नहीं पा रही।

कुछ समय और बीता, पोटली भारी होती जा रही थी। अब तो उसका जमीन पर चलना भी मुश्किल हो गया था। और एक दिन ऐसा आया कि वह खाने-पीने का भी इंतजाम नहीं कर पाती अपने लिए और अपने पत्थरों के बोझ के तले मर गई।

शिक्षा—हमारे साथ भी यही होता है कि जब हम पुरानी बातों की पोटली अपने साथ रखते हैं। अपने वर्तमान का आनंद लेने की जगह अपने भूतकाल की बातों को सोचने लग जाते हैं। इसलिए वर्तमान पल का आनंद लीजिए। न कि भूतकाल में जिएं।

□□□

68. गुब्बारे वाला

एक आदमी गुब्बारे बेचकर जीवन-यापन करता था। वह गांव के आस-पास लगने वाली हाटों में जाता और गुब्बारे बेचता। बच्चों को लुभाने के लिए तरह-तरह के गुब्बारे रखता जैसे लाल, पीले, नीले, हरे आदि और जब कभी उसे लगता कि बिक्री कम हो रही है तो झट से हवा भर के गुब्बारा हवा में छोड़ देता जिससे बच्चे खुश हो जाते और उस गुब्बारे को खरीदने के लिए पहुंच जाते।

इसी तरह एक दिन वह हाट में गुब्बारा बेच रहा था और बिक्री बढ़ाने के लिए बीच-बीच में गुब्बारे उड़ा रहा था। पास ही खड़ा एक बच्चा ये सब देख रहा था इस बार जैसे ही गुब्बारे वाले ने एक सफेद गुब्बारा उड़ाया वह तुरंत उसके पास पहुंचा और मासूमियत से बोला—"अगर आप ये काला गुब्बारा छोड़ेंगे तो क्या वो भी ऊपर जाएगा?" गुब्बारे वाले ने थोड़ा अचरज के साथ देखा फिर बोला—"हां बिल्कुल जाएगा, बेटे! गुब्बारे का ऊपर जाना इस पर निर्भर नहीं करता कि वो किस रंग का है बल्कि इस पर निर्भर करता है कि उसके अंदर क्या है?"

शिक्षा—इसी तरह ये बात हम इंसानों पर भी लागू होती है। कोई अपनी जिंदगी में क्या हासिल करेगा, ये उसके बाहरी रंग-रूप पर निर्भर नहीं करता, बल्कि इस निर्भर करता है कि उसके अंदर क्या है, वह कितना मेहनती है।

□□□

69. बिना दान दिये तुम भिखारी

एक भिखारी ने किसी सेठ के मकान के सामने खड़े होकर आवाज लगाई, सेठ जी कुछ खाने के लिए मिल जाये, सेठ जी ने कहा—आगे जाओ अभी यहाँ सेठानी नहीं है। भिखारी बोला—मुझे सेठानी नहीं रोटी चाहिए। सेठ बोला—बत्तमीज, नौकर भी नहीं है, कोई आदमी भी नहीं है, तुझे रोटी कौन दे? भिखारी बोला—सेठ जी थोड़ी देर के लिए आप ही आदमी बन जाइये, आप ही धर्म कार्य के लिए स्वयं नौकर बन जाइये। तब सेठ जी क्रोध में आकर बोले—मूर्ख मैं तुम्हें रोटी कैसे दे सकता हूँ, मेरे हाथ खाली नहीं है। भिखारी बोला—तभी तो आपसे मांगने आया हूं, खाली हाथ वालों से माँगने से क्या मिलेगा, सेठ जी कृपया मुझ गरीब को क्षमा कर कुछ खाने के लिए दे दो। सेठ जी भिखारी की बात सुनते-सुनते झुंझला गये, बोले—सुनता नहीं है बोल दिया न कुछ नहीं है, आगे बढ़। भिखारी बोला—सेठ जी यदि ऐसी बात है तो आप भी महल/कोठी से उतरकर नीचे आ जाओ मेरे साथ चलो, मैं तुम्हें खिला दूँगा, जो मुझे मिलेगा उसमें से कुछ तुम्हें भी दे दूँगा।

शिक्षा—महानुभाव! भिखारी केवल भीख लेने नहीं सीख देने भी आता है। मानों कहता है, मैंने दान नहीं दिया इसलिए आज राजा से भिखारी बन गया, दान दिये बिना तुम भिखारी न बनो, दान देते रहो।

□□□

70. जैसे चाहो वैसा करो

एक बालक टूटे-फूटे बर्तनों को और फटे-पुराने कपड़ों को इकट्ठा कर रहा था। जब उससे पूछा कि तुम ऐसा क्यों कर रहे हो तो वह बोला जब मेरे माता-पिता वृद्ध हो जायेंगे तब मैं इन्हीं बर्तनों में इन्हें भोजन दूँगा और ये वस्त्र इनके पहनने के काम आयेंगे, उस समय में तो अपनी पत्नी के साथ विदेश यात्रा में रहूँगा। उससे पुनः पूछा कि तुम ऐसा भी क्यों करना चाहते हो, जब तुम्हारे पास पर्याप्त धन व भोगोपभोग की प्रचुर समुचित सामग्री होगी तब भी तुम अपने माता-पिता को त्यागने व फैंकने योग्य वस्तु ही क्यों दोगे? वह बोला—मैं अपने कुल/वंश की परम्परा को तोड़ना नहीं चाहता। मैंने अपनी आँखों से देखा कि मेरे माता-पिता मेरे दादा-दादी के साथ कैसे व्यवहार करते हैं। जैसा व्यवहार वे कर रहे हैं वही तो उन्हें मिलना चाहिए। संसार का भी तो यही नियम है जैसा देते हैं वैसा पाते हैं। तब उस बालक के माता-पिता ने अपनी गलती स्वीकार कर अपने माता-पिता की सच्ची सेवा करना शुरू कर दिया। बालक ने अपने माता-पिता को बोध दिया कि उन्हें माता-पिता की सेवा कैसे करनी चाहिए।

शिक्षा—आज भी कई परिवार ऐसे हैं जहाँ पर वृद्धों का सम्मान नहीं है। वे युवा और युवती ये सोच लें कि वृद्ध होने पर उन्हें भी वही मिलेगा। यदि वे अपने प्रति अच्छा व्यवहार चाहते हैं तो मेरा उनसे कहना है कि वे आज ही दूसरों के प्रति अच्छा बनने का संकल्प ले लें।

□□□

71. सोच अपनी-अपनी

एक दिन किसी संत के पास एक युवा दम्पत्ति आये, उनमें से पुरुष ने संत से कहा—मैं बहुत दुःखी हूँ, मुझे दस रुपये का नुकसान हो गया। यदि मेरे पास दस रुपये होते तो किसी संत की या गरीब की सेवा करता, भोजन देता, सहायता करता, हो सकता है कि धर्म ध्यान करता। उसकी पत्नी ने कहा—नहीं महात्मन् ये झूठ बोल रहें हैं इन्हें दस रुपये का नुकसान नहीं हुआ अपितु 2 लाख रुपये का लाभ हुआ है। अब धर्म के लिए कुछ भी खर्च करने को तैयार नहीं हैं। कहते हैं जब तक दस की पूर्ति नहीं होगी तब तक मैं धर्म के लिए तुम्हें एक पैसा भी नहीं दूँगा। संत ने पूछा क्या हुआ? इन्होंने दस रूपये का लाटरी का टिकिट लिया था, 2 लाख रूपया नगद इनाम में मिला फिर भी दुःखी हैं। जिसकी सोच नकारात्मक है उसे कौन सुखी कर सकता है। वह तो उस किसान की तरह है जो एक बीज खेत में बोकर, करोड़ बीज प्राप्त करे फिर भी रोये। फल पाने के लिए बीज को प्रशस्त भूमि में बोना पड़ता है अर्थात् उसे खोना पड़ेगा। जो बीज नहीं बोता उसका जीवन सफल नहीं होता है।

शिक्षा—कुछ पाने के लिए कुछ खोना ही पड़ता है।

❑❑❑

72. नीयत अगर साफ है तेरी

प्रातः ही जब हम शौच के लिए जा रहे थे तभी उधर से एक बालक आ रहा था, वह अनमना सा दिखाई दे रहा था। एक श्रावक ने उससे पूछा तो रोने लगा—श्रावक ने रोने का कारण पूछा तो वह बोला मैं दूध लेने गया था मेरी अठन्नी गुम हो गई—दूध कैसे ले जाऊं? दूध न ले जाने पर मम्मी डाटेगी, पिटाई लगायेगी, यह सुनकर एक श्रावक ने अपनी जेब से अठन्नी निकाल कर उसे दे दी। वह बालक थोडी देर बाद जोर से रोने लगा, उससे पूछा—अब क्या बात है? अब तो मम्मी नहीं पीटेगी, वह बोला अब पापा पीटेंगे, श्रावक ने पूछा—क्यों जब मैं यह घटना पापा को सुनाऊँगा तो वे कहेंगे बुद्धिहीन, कम्बख्त तूने अठन्नी क्यों कहा? पाँच रुपये क्यों नहीं कहा?

शिक्षा—कहने का आशय यह है कि जो अभाव में जीने वाला है उसे कौन सुखी कर सकता है।

□□□

73. अनोखा खेल

एक बार एक सेठ पुत्र मुनीम के हाथ हवेली की छत पर खड़ा था। तब उसने देखा राजा के सैनिक किसी व्यक्ति को पकड़कर ले जा रहे हैं। उसने मुनीम जी से पूछा—"काका! ये राजा के सैनिक इस व्यक्ति के हाथों में क्या पहनाकर ले जा रहे हैं।" बोला—"बेटा! इस व्यक्ति के हाथों में हथकड़ी है।" वह बोला ये तो मुझे भी पहनना है। उन्होंने समझाया ये अच्छा नहीं है और न ही वह ऐसे मिलती है। परन्तु उसने अपनी जिद्द नहीं छोड़ी। तब उन्होंने कहा—तुम जाकर राजा की पगड़ी गिरा देना तुम्हें हथकड़ी पहना दी जाएगी। वह सेठ पुत्र अगले दिन राजदरबार पहुँचा और राजा की पगड़ी गिरा दी। पहले तो सब क्रोधित हुए परन्तु तभी राजा की पगड़ी से साँप निकलता दिखाई दिया। राजा ने उस पुत्र का खूब सम्मान किया और धन-रत्नादि देकर पुरुस्कृत किया वह सेठ पुत्र घर आकर मुनीम जी को सब बताता है और कहता है मुझे कोई दूसरा उपाय बताओ मुझको तो हथकड़ी पहनना है। वह अगले दिन राजमहल में पहुँचता है, देखता है राजा छत पर दीवार के सहारे आराम से बैठे हुए हैं। वह गया और राजा को धक्का दे दिया। राजा आगे की ओर गिर पड़ा। धक्का देते ही जिस दीवार से राजा टिका था, वह गिर पड़ी। राजा बोला—यह कोई सामान्य व्यक्ति नहीं है यह देवदूत है अन्यथा आज मेरे प्राण चले जाते। राजा ने उसे आधा राज्य दे उसका सम्मान किया। वह सेठ पुत्र परेशान हो बोला अब क्या किया जाए। वह दूसरी युक्ति के साथ अगले दिन राजदरबार में पहुँचा। देखा राजा के हाथ में दूध का गिलास है। उसने उस गिलास पर हाथ मारकर गिरा दिया। राजा को बहुत गुस्सा आया। इतने में एक बिल्ली आयी वह दूध पीकर मर गयी। राजा ने उसका पूरे नगर के सामने सम्मान किया और अपना उत्तराधिकारी घोषित कर राज्य उसी को सौंप दिया।

शिक्षा—यह अटल सत्य है कि पुण्य का फल पुण्य (अच्छा) और पाप का फल पाप (बुरा) होता है। इसलिए अच्छे कार्य करते रहना चाहिए।

❑❑❑

74. हंस और कौआ

किसी समय एक ब्राह्मण जो जीवन की प्रतिकूलताओं से घबराया हुआ था, अपने जीवन से हताश, उदास व निराश था। आर्थिक परिस्थिति ठीक न होने के कारण वह आत्मघात हेतु जंगल की ओर चल पड़ा। वन से गुजर ही रहा था, कि अचानक उसके सामने शेर आ गया। प्रथम तो वह डर गया पुनः सोचा मरना तो है ही ऐसे ही सही। शेर भी उस ब्राह्मण को देखकर सोचने लगा बहुत दिन हो गया अब भूख शान्त होगी। शेर जिस पेड़ के नीचे खड़ा था उसी पेड़ पर एक हंस पक्षी बैठा हुआ था। वह शेर के मनोभावों को समझ जाता है और कहता है जंगल के राजा! यह आप क्या सोच रहे हैं? ये तो ब्राह्मण देवता हैं, इनसे तो आशीर्वाद लो। तुम्हारे पास जो धन आदि है, उसे देकर इनकी सहायता करो।

शेर ने हंस की बात सुनी और सोचा ठीक ही तो कह रहा है, एक बार आशीर्वाद लूँगा तो जन्मों का पाप कट जाएगा। तभी शेर इधर-उधर देखता है। फिर जमीन खोदकर गजमोती निकालता है और ब्राह्मण को दे देता है।

ब्राह्मण भी यह सब देख प्रसन्न होता है व आशीर्वाद देकर अपने घर लौट जाता है। ब्राह्मण ने उन गजमुक्ताओं को बेचा जिससे उसके पाँच साल का काम ही चला। काम धंधा तो कुछ था नहीं! अब ब्राह्मण पुनः विचार करता है और वन में शेर से मिलने चल पड़ता है।

अबकी बार जब ब्राह्मण पहुँचा तो शेर ब्राह्मण को देखते ही इधर-उधर देखने लगा। पृथ्वी खोदने लगा। किन्तु इस बार पेड़ पर कौआ बैठा हुआ था। वह कहता है—"शेर महाराज! इधर-उधर क्या देखते हो। शिकार खुद चलकर आया है। शेर बोला किन्तु ये तो ब्राह्मण देवता हैं कौआ बोला—अरे! काहे के देवता! तुम तो अपनी भूख मिटाओ, क्यों मौका गंवाते हो।" इतना सुनना ही था कि वह शेर ब्राह्मण पर झपटा और उसे अपना भोजन बना लिया।

शिक्षा—व्यक्ति के जीवन में हंस और कौअे जैसी प्रकृति वाले प्राणी आते हैं जिनकी संगति व सोच के अनुसार स्वयं का व्यक्तित्व भी प्रभावित होता है। अतः सुनो सबकी और सोच विचार कर निर्णय लेना चाहिए।

□□□

75. पुलिस चौकी

एक युवक कुछ रत्न लेकर दूसरे शहर गया। मार्ग में गाड़ी खराब हो जाने से सब यात्री वहां रुक गए। टी.टी. ने सबसे टिकट मांगा। उस युवक से भी टिकट मांगा। किन्तु उसने कोई जवाब नहीं दिया। आखिरकार टी.टी. ने उसे पुलिस के हवाले कर दिया। रात भर उसने गर्मी भूख-प्यास आदि कष्टों को सहा। प्रातः काल मजिस्ट्रेट के पास ले जाया गया। जैसे ही मजिस्ट्रेट ने अपनी सफाई देने के लिए कहा—उसने मजिस्ट्रेट को तुरंत यात्रा का टिकट दे दिया।

मजिस्ट्रेट ने कहा जब तुम्हारे पास टिकट था तो तुमने यह टी.टी. को क्यों नहीं दिया। वह बोला मेरे पास कीमती माल था, इसकी सुरक्षा करना अत्यन्त आवश्यक थी। माल के साथ-साथ जान को भी खतरा था, तब पुलिस चौकी ही एक सुरक्षित रहने का विकल्प नजर आ रहा था, साहब! मैंने एक दिन कष्ट सहकर जान व माल दोनों की सुरक्षा कर ली।

शिक्षा—परिस्थिति के अनुसार अपने कार्य का निर्धारण करना चाहिए व प्राथमिकता को समझना चाहिए। वर्तमान में कष्ट सहकर भविष्य में सुख का खजाना प्राप्त किया जा सकता है।

□□□

76. गधा और बाघ

एक गधा घास देख रहा था और उसे देखके ये एहसास कर रहा था कि घास नीली है। उसके सामने से एक बाघ आ रहा था वो गधा बाघ से भी यही कहने लगा कि बाघ देख-

"घास नीली है।" बाघ ने कहा नहीं– "घास हरी है।" दोनों में इसी बात पर बहस छिड़ गई। उन दोनों ने फैसला किया कि इस बात को अब जंगल का राजा शेर ही सुलझा सकता है। बाघ और गधा शेर के पास जाते हैं।

शेर के पास पहुँचते ही वो दोनों उसे पूरी बात बताते हैं। शेर के जवाब देने से पहले ही गधा चिल्लाने लगता है कि देखो राजा साहब घास नीली है।

शेर उसके जवाब में कहता है। हाँ, घास नीली है। गधा कहता है कि इस पर तो मैं जीत गया तो अब बाघ को सजा मिलनी चाहिए। शेर कहता है हाँ, इसकी सजा है कि ये एक साल तक कोई शिकार नहीं करेगा। गधा ये सुनकर बहुत खुश होता है और चला जाता है।

तब बाघ कहता है कि राजा ये क्या बात हुई जब आपको भी पता है कि घास हरी है। शेर कहता है-हाँ, मुझे पता है कि घास हरी है। बाघ कहता है तो आपने मुझे सजा क्यों दी। शेर ने इस पर कहा कि तुम्हें सजा इस बात पर नहीं मिली कि घास हरी हैं या नीली हैं, तुम्हें इस बात पर सजा मिली की तुमने बहस गधे से की।

शिक्षा–मूर्खों से बहस नहीं करनी चाहिए।

□□□

77. राजा और मूर्ख बंदर

एक बार एक राजा था। उसके पास एक बंदर था जो उसका सबसे अच्छा मित्र था। राजा का मित्र होने पर भी वह बंदर बहुत ही मूर्ख था। राजा का प्रिय होने के कारण उसे महल के हर जगह जाने की अनुमति थी बिना किसी रोक टोक के। उसे शाही तरीके से महल में इज्जत दी जाती थी। और यहाँ तक की वह राजा के कमरे में भी आराम से आ जा सकता था जहाँ राजा के गोपनीय सेवकों को भी जाना मना था।

एक दिन दोपहर का समय था। राजा अपने कमरे में आराम कर रहे थे और बंदर भी उसी समय पास के गद्दे में बैठ कर आराम कर रहा था। उसी समय बंदर ने देखा की एक मक्खी आकर राजा की नाक पर बैठी। बंदर ने एक तौलिये से उस मक्खी को भगा दिया। कुछ समय बाद वह मक्खी दोबारा आ कर राजा के नाक पर बैठ गई। बंदर ने दोबारा उसे अपने हाथों से भगा दिया।

थोड़ी देर बाद बंदर ने फिर से देखा वही मक्खी फिर से आकर राजा की नाक पर बैठ गई। अब की बार बंदर क्रोधित हो गया और उसने मन बना लिया की इस मक्खी को मार डालना ही इस परेशानी का हल है।

उसने उसी समय राजा के सर के पास रखे हुई तलवार को पकड़ा और सीधे उसने मक्खी की ओर मारा। मक्खी तो नहीं मरी परन्तु राजा की नाक कट गई और राजा बहुत घायल हो गया।

शिक्षा—मूर्ख दोस्तों से सावधान रहें। वे आपके दुश्मन से भी ज्यादा आपका नुकसान कर सकते हैं।

❑❑❑

78. शेर और ऊंट की ज्ञानवर्धक कहानी

एक घने जंगल में एक शेर अपने तीन सहायकों के साथ रहता था- एक सियार, एक कौवा और एक तेंदुआ।

जंगल के राजा के निकट होने के कारण, सहायकों के भोजन के लिए कभी सोचना नहीं पड़ता था। एक दिन, वे एक ऊंट को जंगल में घूमते देखकर आश्चर्य चकित हो गए, क्योंकि आमतौर पर ऊंट तो रेगिस्तान में रहंते हैं। पूछताछ करने पर, उन्हें पता चला कि ऊंट ने अपना रास्ता खो दिया है और शेर ने उसे आश्रय देकर उसे जंगल में रहने की जगह दी है।

एक दिन, शक्तिशाली शेर हाथियों के साथ लड़ाई में घायल हो गया वह शिकार करने में असमर्थ था, शेर और उसके सहायकों को भूख लगी थी। तीनों सहायकों ने सुझाव दिया कि उन्हें ऊंट को खा लेना चाहिए, लेकिन शेर ने उसे मारने से इंकार कर दिया क्योंकि यह ऊंट के साथ धोखा होता।

सियार, कौवा और तेंदुए ने ऊंट को अपने रक्षक के लिए भोजन के रूप में प्रस्तुत करने की योजना बनवाई जिसमें कौवा, तेंदुए और सियार तीनों ने एक एक करके स्वयं को शेर को भोजन के रूप में पेश किया। उन सभी को शेर ने मार कर खाने से इंकार कर दिया। यह देखकर, ऊंट ने भी ऐसा ही किया और तुंरत शेर के सामने खाने के रूप में पेश किया परन्तु तीनों धोखेबाज़ सहायकों ने ऊंट पर उसी समय आक्रमण कर दिया और उसे मार दिया।

शिक्षा—उन चालाक बुरे लोगों पर भरोसा रखना मूर्खता है जो शक्तिशाली या धनी लोगों को अपने लाभ के लिए घेरे हुए रहते हैं।

□□□

79. बातूनी कछुआ

एक बार एक समय पर कंबुग्रीव नामक कुछआ एक झील के पास रहता था। दो सारस पक्षी जो उसके दोस्त थे उसके साथ झील में रहते थे। एक बार गर्मियों में झील सूखने लगी और उसमें जानवरों के लिए थोड़ा सा पानी बचा था।

सारस ने कछुए को बताया कि दूसरे वन में एक दूसरी झील है जहाँ बहुत पानी है, उन्हें जीवित रहने के लिए वहां जाना चाहिए। वे योजना के अनुसार कछुए के साथ वहां जाने के लिए तैयार हुए। उन्होंने एक छड़ी को लिया और कछुए को बीच में मुँह से पकड़कर रखने को कहा और कहा कि अपने मुंह को खोलना नहीं, चाहे कोई भी बात हो। कछुआ उनकी बात मान गया।

कछुए ने छड़ी के बीच को अपने दांतों से पकड़ा और दोनों सासों ने छड़ी के दोनों कोने को अपने चोंच से पकड़ लिया। रास्ते में गांवो के लोग कछुए को उड़ते हुए देख रहे थे और बहुत आश्चर्यचकित थे। उन दो पक्षियों के बारे में जमीन पर हंगामा सा मच गया था जो एक छड़ी की मदद से कछुए को ले जा रहे थे।

सासों की चेतावनी के बावजूद, कछुए ने अपना मुंह खोला और कहाः "यह सब क्या हंगामा हो रहा है?" ऐसा कहते ही वह नीचे गिर गया और उसकी मौत हो गई।

शिक्षा—जितनी आवश्यकता हो उतना ही बोलना चाहिए। बेकार की बात ज्यादा करने से हानी स्वयं की ही होती है।

□□□

80. पैसे का ज्ञान

एक पर्यटक ऐसे शहर में आया जो हर समय उधारी में डूबा रहता था। पर्यटक ने 2000 का नोट निकाला और होटल में काऊंटर पर रखकर कहा-"मैं जा रहा हूँ आपके होटल में कमरा पसंद करने।" होटल के मालिक ने 2000 का नोट लिया और तुरन्त भागा घी वाले के पास और उसे 2000 का नोट देकर हिसाब चुकता कर लिया।

घी वाला दूध वाले के पास गया और वही नोट देकर दूध का हिसाब पूरा कर दिया।

दूध वाला गाय वाले के पास गया और 2000 रुपए देकर दूध का हिसाब पूरा किया।

गाय वाला चारे वाले के पास गया और नोट देकर अपने खाते से 2000 रुपए कटवा दिए।

चारे वाला उसी होटल पर गया क्योंकि वो क़भी उसी रेस्टोरेंट में उधार पर खाना खाता था। 2000 रुपए देके उसने अपना हिसाब चुकता किया।

पर्यटक वापस आया और यह कहकर अपना 2000 का नोट ले गया कि उसे कोई कमरा पसंद नहीं आया।

न किसी ने कुछ लिया
न किसी ने कुछ दिया
सबका हिसाब चुकता!

शिक्षा—हम सभी की यही गलतफहमी है कि रुपए हमारे हैं।

□□□

81. साधना

बहुत समय पहले की बात है, एक जंगल में नदी के किनारे पर एक साधु की कुटिया थी। एक दिन साधु ने देखा की उनकी कुटिया के सामने वाली नदी में एक सेब तैरता हुआ आ रहा है। साधु ने सेब को नदी से निकाला और अपनी कुटिया में ले आए। महात्मा सेब को खाने ही वाले थे कि तभी उनके अंतरमन से आवाज आई-"क्या यह तेरी सम्पत्ति है?" यदि तुमने इसे अपने परिश्रम से पैदा नहीं किया है तो क्या इस सेब पर तुम्हारा अधिकार है?

अपने अंतर्मन की आवाज सुन साधु को आभास हुआ की उसे इस फल को रखने और खाने का कोई अधिकार नहीं है। इतना सोचकर साधु सेब को अपने झोले में डालकर सेब के असली स्वामी की खोज में निकल पड़े। थोड़ी दूर जाने पर साधु को एक सेब का बाग दिखाई दिया। उन्होंने बाग के स्वामी से जाकर कहा—"आपके पेड़ से यह सेब गिरकर नदी में बहते-बहते मेरे कुटिया तक आ गया था, इसलिए मैं आपकी संपत्ति लौटाने आया हूँ।"

वह बोला, "महात्मा, मैं तो बस इस बाग का रखवाला हूँ। इस बाग की स्वामी राज्य की रानी है।" बाग़ के रखवाले की बात सुनकर साधु महात्मा सेब को देने रानी के पास पहुँचे। रानी को जब साधु के सेब को यहाँ तक पहुँचाने के लिए लम्बी यात्रा की बात पता चली तो वह बहुत आश्चर्यचकित हुई। उन्होंने एक छोटे से सेब के लिए इतनी लम्बी यात्रा का कारण साधु से पूछा। साधु बोले, "महारानी साहिबा! यह यात्रा मैंने सेब के लिए नहीं बल्कि अपने जमीर के लिए की है। यदि मेरा जमीर भ्रष्ट हो जाता तो मेरी जीवन भर की तपस्या नष्ट हो जाती है।"

साधु की ईमानदारी से महारानी बड़ी प्रसन्न हुई और उन्होंने साधु महात्मा को राजगुरु की उपाधि से सम्मानित कर उन्हें अपने राज घराने में रहने का निमंत्रण दिया।

शिक्षा—इस कहानी से यह शिक्षा मिलती है कि हमें हर परिस्थिति में ईमानदार रहना चाहिए क्योंकि ईमानदार व्यक्ति हमेशा सम्मान पाता है।

□□□

82. गुरु की शरण

एक पंडित रोज रानी के पास कथा करता था। कथा के अंत में सबको कहता कि राम कहे तो बंधन टूटे। तभी पिंजरे में बंद तोता बोलता, 'यूं मत कहो रे पंडित झूठे।' पंडित को क्रोध आता कि ये सब क्या सोचेंगे, रानी क्या सोचेगी। पंडित अपने गुरु के पास गया, गुरु को सब हाल बताया। गुरु तोते के पास गया और पूछा तुम ऐसा क्यों कहते हो?

तोते ने कहा—"मैं पहले खुले आकाश में उड़ता था। एक बार मैं एक आश्रम में जहां सब साधु-संत राम-राम-बोल रहे थे, वहां बैठा तो मैंने भी राम-राम बोलना शुरु कर दिया। एक दिन मैं उसी आश्रम में राम-राम बोल रहा था, तभी एक संत ने मुझे पकड़ कर पिंजरे में बंद कर लिया, फिर मुझे एक-दो श्लोक सिखाये। आश्रम में आये सेठ ने मुझे संत को कुछ पैसे देकर खरीद लिया। अब सेठ ने मुझे चांदी के पिंजरे में रखा, मेरा बंधन बढ़ता गया। निकलने की कोई संभावना न रही। एक दिन उस सेठ ने राजा से अपना काम निकलवाने के लिए मुझे राजा को गिफ्ट कर दिया, राजा ने खुशी से मुझे ले लिया। क्योंकि मैं राम-राम बोलता था। रानी धार्मिक प्रवृत्ति की थी तो राजा ने रानी को दे दिया। अब मैं कैसे कहूं कि 'राम-राम कहे तो बंधन छूटे।'

तोते ने गुरु से कहा आप ही कोई युक्ति बताएं, जिससे मेरा बंधन छूट जाए। गुरु बोले—आज तुम चुपचाप सो जाओ, हिलना भी नहीं। रानी समझेगी मर गया और छोड़ देगी। ऐसा ही हुआ। दूसरे दिन कथा के बाद जब तोता नहीं बोला, तब संत ने आराम की सांस ली। रानी ने सोचा तोता तो गुमसुम पड़ा है, शायद मर गया। रानी ने पिंजरा खोल दिया, तभी तोता पिंजरे से निकलकर आकाश में उड़ते हुए बोलने लगा 'सतगुरु मिले तो बंधन छूटे।'

शिक्षा—शास्त्र कितना भी पढ़ लो, कितना भी जाप कर लो, लेकिन सच्चे गुरु के बिना बंधन नहीं छूटता।

□□□

83. संत की दृष्टि

भावनगर में एक महान संत थे, बाबा मस्तराम। वह त्याग और तपस्या की साक्षात मूर्ति थे। बाबा भगवान की याद में सदा मस्त रहते थे, जिससे उनके भक्त उन्हें मस्तराम कहा करते थे। वह श्रद्धालुओं को दूसरों की सेवा करने और जरूरतमंदों की सहायता करने की प्रेरणा देते रहते थे। वह अपने शिष्यों को अक्सर बताते थे, परोपकार और सेवा से बड़ा कोई धर्म नहीं। एक दिन की बात है। सर्दी का मौसम था। भीषण ठण्ड पड़ रही थी। बाबा मस्तराम अपने आश्रम के बाहर एक खुली जगह पर सोए हुए थे। उनके शिष्य आसपास बैठे थे। भावनगर के राजा घोड़ागाड़ी में उधर से गुजर रहे थे। राजा की नजर उन पर पड़ी। राजा ने देखा कि बाबा के बदन पर गरम कपड़े नहीं है। इस सर्दी में बाबा को कितनी तकलीफ हो रही होगी, यह सोच कर राजा ने अपनी कीमती शॉल उन्हें ओढ़ा दी और चुपचाप आगे बढ़ गए। कुछ देर बाद बाबा की आंखें खुलीं तो उन्होंने देखा कि उनके शरीर पर एक शॉल है। शिष्यों ने बताया कि राजा खुद उन्हें शॉल ओढ़ा गए हैं तो बोले, 'साधु को शॉल से क्या काम? मेरा शरीर तो ठण्ड को सहन करने का आदी हो चुका है। यह शॉल किसी को ठण्ड से बचाने में काम आना चाहिए।' बाबा वहां से उठे और अपने भक्तों के साथ आगे चल दिए। वह अभी कुछ ही दूर चले थे कि उन्होंने एक कुत्ते को ठण्ड से ठिठुरता-कांपता देखा। वह कुत्ते के नजदीक गए और इत्मीनान से वह शॉल उसके पीठ और पेट वाले हिस्से में लपेट दी। इसके बाद वह बेफिक्र भाव से आगे बढ़ गए। एक भक्त से नहीं रहा गया। उसने पूछा, 'बाबा! राजा की दी गई यह कीमती शॉल आपने कुत्ते को ओढ़ा दी।' इस पर बाबा हंसे और बोले, 'उसकी नजर में कोई अंतर नहीं है। सारे जीव उसी की संतान हैं। इसलिए दुःख जिसका भी दूर कर सको, बेहिचक करो।'

शिक्षा—पशुओं में भी वही कष्ट का अनुभव होता है जैसे मनुष्यों को अतः पशुओं को बेजुबान समझ कर उन्हें प्रताड़ित नहीं करना चाहिए। अपितु मदद करनी चाहिए।

❑❑❑

84. मानवता है मनुष्य का आभूषण

मानव के समक्ष 2 ही रास्ते हैं, एक मानवता का और दूसरा दानवता का। ज्यों ही मनुष्य मानवता से हटता है, त्यों ही उसमें दानवता आ जाती है। दानवता आकर्षित जरूर करती है लेकिन उसकी उम्र ज्यादा लम्बी नहीं होती, जबकि मानवता मृत्यु के बाद भी आपको जिंदा रखती है। आचार्य शांति सागर, स्वामी विवेकानन्द, महर्षि दयानंद सरस्वती, विनोबा भावे, महात्मा गांधी आदि महापुरुषों ने अपना पूरा जीवन मानवता के नाम कर दिया, जिससे उन्हें आज भी श्रद्धापूर्वक याद किया जाता है।

शास्त्रों में मानवीयता को मनुष्य का आभूषण कहा गया है। मानवीयता किसी मनुष्य की सुंदर देह से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से आंकी जाती है। दूसरों को दुःख-दर्द देने वाला व्यक्ति कभी खुश नहीं रह सकता, जबकि दूसरों की सहायता करने वाले व्यक्ति की मदद स्वयं ईश्वर करते हैं।

कहते हैं स्वर्ग-नर्क कहीं और नहीं, बल्कि इसी धरती पर हैं। महाभारत-काल में पांडवों ने दुर्योधन से केवल 5 गांव मांगे थे लेकिन दुर्योधन ने सुई की नोक के बराबर की जमीन देने से इंकार कर दिया। इसके परिणामस्वरूप युद्ध हुआ। मानवता जीती और दानवता हारी। दूसरों का हक मारकर दुर्योधन बनने में कतई समझदारी नहीं है।

दरअसल मानव धर्म ही धर्म का सर्वश्रेष्ठ स्वरूप है। मानव धर्म यही सिखाता है कि सभी वर्गों को एक होकर अपनी सभी शक्तियों का प्रयोग अहिंसा, विकास और सत्य को उजागर करने में करना चाहिए। इस धरा पर जितने भी महान् व्यक्ति हुए, उन्होंने निश्चित रूप से मानव धर्म का पालन किया। महावीर ने जीवों पर अत्याचार होते देखा तो उनकी रूह कांप उठी और उन्होंने लोगों को समझाया कि जीव हत्या मत करो क्योंकि उन्हें भी वैसी ही पीड़ा होती है, जैसी तुम्हें।

कभी कसाई की दुकान पर जाकर जानवर को कटते देखना! यदि आपकी रूह नहीं जागी तो समझ लेना कि आपके भीतर से मानवता निकल गई है। और जब मानवता खत्म हो जाती है तो वह इंसान भी खत्म हो जाता है। हमारा-आपका अस्तित्व ही नष्ट न हो जाए, इसलिए मानवीय बने रहने में भलाई है। किसी का जीवन छीन लेना जिन्दगी नहीं है, बल्कि किसी को जीवन देना जिन्दगी है।

नाथं (नाथ) पब्लिकेशन में बच्चों की ज्ञानवर्धक पुस्तकें

1. MY FIRST BOOK OF A.B.C. (32 Page)

2. ALL IN ONE

(English-हिन्दी) (48 Page)

पुस्तकें मंगाने का पता :

नाथं (नाथ) पब्लिकेशन्स

2643, रोशनपुरा, नई सड़क

दिल्ली-6

नाथं (नाथ) पब्लिकेशन में उपलब्ध सदाबहार पुस्तकें

1. चाणक्य नीति
2. प्रेमचन्द्र की 51 यादगार कहानियाँ
3. पंचतंत्र की ज्ञानवर्धक कथाएँ
4. स्वामी विवेकानन्द (सम्पूर्ण जीवन परिचय)
5. दादी माँ के घरेलू नुस्खें
6. गबन
7. गोदान
8. शरतचन्द्र की अनमोल कहानियाँ

पुस्तकें मंगाने का पता :

नाथं (नाथ) पब्लिकेशन्स

2643, रोशनपुरा, नई सड़क
दिल्ली-6

卐 श्री वीतरागाय नमः 卐

पूजन पाठ दीपक

जिनवाणी संग्रह

प्रकाशित हो गयी है

मूल्य 200/-

इस जिनवाणी संग्रह की सबसे बड़ी विशेषताएँ निम्न हैं–

1. प्रस्तुत जिनवाणी का पेपर व छपाई तथा बांइडिंग बहुत ही उत्तम क्वालिटी की है व अक्षर साइज काफी बड़े हैं।
2. प्रस्तुत जिनवाणी में 1008 पृष्ठ हैं।
3. प्रस्तुत जिनवाणी में चौबीसों भगवानों की नई व पुरानी पूजाएँ, उन पर आधारित प्रसिद्ध चौबीस चालीसे व आरतियाँ, प्रायः सभी अर्धावली, अधिकांश स्तोत्र, सभी पर्व पूजाएँ, पाठ भावनाएँ, जाप्यमंत्र, व्रत कथाएँ, छहढाला, अरहंत पासा केवली, जैन दर्शन के सिद्धान्त एवं अन्य आवश्यक सूचनाएँ प्रदान की गयी हैं। इस एक ही पुस्तक में पाठक पूजा, पाठ, स्वाध्याय सब कुछ कर सकता है।

पूजन पाठ दीपक (जिनवाणी संग्रह) मंगाने का पता–

प्रकाशक

जिनवाणी प्रकाशन

428/24B, ईश्वरपुरी,
निकट ओडियन सिनेमा, जैन मन्दिर वाली गली
मेरठ–250 002, Mob. 09412205160